सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 344, नई दिल्ली । गुरुवार, 20 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 दिल्ली की मुख्यमंत्री होंगी रेखा गुप्ता, विधायक दल की बैठक में लगी मुहर;
06 रोजगारपरक शिक्षा से रुकेगा युवाओं का पलायन
08 सीबीआई ने भूबनेश्वर एम्स पर छापा मारा

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई दुर्घटना फ़िर से ना घटे इसके लिए लेना होगा ठोस एवं स्थाई फैसला

संजय बाटला

नई दिल्ली। निजामुद्दीन, सराय काले खा और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर इतनी भीड़ भाड़ ना रहे इसके लिए बहुत हो सरल हल उपलब्ध होते हुए भी रेल मंत्री एवम् भारत सरकार इसे लागू नहीं कर रहे है। चलने वाली एक्सप्रेस एवम्-सुपर एक्सप्रेस रेलों को मुख्य स्टेशन के बाद आने वाले अन्य स्टेशन पर कुछ मिनटों के लिए रोकने से इन प्रमुख रेल टर्मिनल स्टेशनों पर 50 % तक भीड़ स्वयं खत्म हो जाएगी। **उदाहरण के लिए पंजाब, जम्मू की तरफ जाने वाली एक्सप्रेस एवम्-सुपर एक्सप्रेस को बादली रेलवे स्टेशन पर 5 मिनट के लिए रोक दिया जाए तो वेस्ट, साउथ वेस्ट, आउटर दिल्ली, पश्चिम विहार, जनकपुरी तक की जनता जिनका आरक्षण है नई दिल्ली की जगह बादली रेलवे स्टेशन से ट्रेन में बैठना ज्यादा पसंद करेंगे** क्योंकि यह पास भी पड़ेगा और भीड़ भाड़ भी नहीं मिलेगी। इस तरह सभी दिशाओं में आने वाले स्टेशन पर ट्रेन रुकने से लोग करीबी स्टेशन से ट्रेन पकड़ लेंगे और दिल्ली के प्रमुख रेल टर्मिनल स्टेशनों पर से भीड़ समाप्त हो जाएगी। भील कम होने पर धक्का मुक्की नही होगी और ना हीं ऐसी भगदड़ मचेगी जिससे जनता की जान माल सुरक्षित रहेगा ओर रेल मंत्री एवम्-रेल मंत्रालय के साथ भारत सरकार का भी नाम होगा।

नई सरकार बनने से पहले एक्शन मोड में दिल्ली सरकार, यमुना सफाई के बाद अब इसकी बारी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की सड़कों पर पहला इलेक्ट्रिक ग्रामीण सेवा वाहन उतर गया है। यहां बता दें कि दिल्ली की मुख्य समस्याओं में से एक प्रदूषण के मामले में अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि 40 फीसदी प्रदूषण वाहनों की वजह से होता है। इसी के चलते दिल्ली में सभी नई बसों को इलेक्ट्रिक में बदलने का फैसला लिया गया है।

नई दिल्ली। नई सरकार के गठन से पहले ही वाहनों से होने वाले प्रदूषण को रोकने के मामले में दिल्ली ने एक कदम आगे बढ़ा दिया है। दिल्ली में ग्रामीण सेवा वाहन भी इलेक्ट्रिक मोड में चलने लगेंगे।

वाहनों से होता है 40 फीसदी प्रदूषण

इस योजना के तहत दिल्ली की सड़कों पर पहला इलेक्ट्रिक ग्रामीण सेवा वाहन उतर गया है। यहां बता दें कि दिल्ली की मुख्य समस्याओं में से एक प्रदूषण के मामले में अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि 40 फीसदी प्रदूषण वाहनों की वजह से होता है।

नई बसों को इलेक्ट्रिक में बदलने का फैसला

इसी के चलते दिल्ली में सभी नई बसों को इलेक्ट्रिक में बदलने का फैसला लिया गया है। अब धीरे-धीरे सभी ग्रामीण सेवा वाहन भी इलेक्ट्रिक वाहनों में तब्दील हो जाएंगे।

सीएनजी से इलेक्ट्रिक वाहन में बदलने की प्रक्रिया शुरू

इसी कड़ी में इन वाहनों को सीएनजी से इलेक्ट्रिक वाहन में बदलने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। पहले छह प्लस एक इलेक्ट्रिक ग्रामीण सेवा वाहन का नंबर जारी कर दिया गया है।

सितंबर 2024 में ही जारी हुआ था आदेश

दिल्ली सरकार ने सितंबर 2024 में ग्रामीण सेवा को इलेक्ट्रिक वाहनों में बदलने का आदेश जारी किया था। जो छह सीटर है और एक सीट चालक के लिए अलग है।

2010 में शुरू हुई थी यह योजना

अधिकारियों ने बताया कि सरकार ग्रामीण सेवा को इलेक्ट्रिक वाहनों में बदलकर नया बनाने की योजना पर काम कर रही है। 2010 में शुरू हुई ग्रामीण सेवा एक पैरा ट्रांजिट योजना है, जिसमें छह यात्रियों के बैठने की क्षमता है। दिल्ली में करीब छह हजार वाहन पंजीकृत हैं जो सीएनजी से चलते हैं।

ये वाहन मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों, अनधिकृत और पुनर्वास कॉलोनियों और जेजे क्लस्टरों में चलते हैं। दिल्ली भर में 2,000 से अधिक ग्रामीण सेवा वाहन चल रहे हैं।

केजरीवाल सरकार ने दी थी मंजूरी

उल्लेखनीय है कि स्वच्छ परिवहन को बढ़ावा देने के इरादे से केजरीवाल सरकार ने सितंबर 2024 में मौजूदा ग्रामीण सेवा वाहनों को इलेक्ट्रिक विकल्पों में बदलने की मंजूरी दी थी। ग्रामीण सेवा वाहनों को 15 साल पूरे होने वाले हैं और इनमें से ज्यादातर वाहन खस्ताहाल स्थिति में हैं।

यह फैसला राजधानी में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की दिल्ली सरकार की नीति के अनुरूप है और इससे प्रदूषण कम करने में भी मदद मिलेगी।

आरपीएफ पुलिस की जांच में बड़ा खुलासा, दो घंटे में 4 ट्रेनें और हजारों की भीड़

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार की रात को हुई भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई थी जबकि 15 लोग घायल हो गए थे। वहीं आरपीएफ पुलिस की जांच में पता चला कि दो घंटे के अंतराल में नई दिल्ली से प्रयागराज जाने वाली चार ट्रेनें थीं जिस वजह से स्टेशन पर हजारों की भीड़ पहुंच गई थी। इस दौरान प्लेटफार्म बदलने से भगदड़ हुई थी।

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार रात हुई भगदड़ में 18 लोगों की जान चली गई और 15 यात्री घायल हो गए थे। भगदड़ का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। आरपीएफ की एक आंतरिक रिपोर्ट के आधार पर यह कहा जा रहा है कि विशेष ट्रेन का प्लेटफार्म बदलने के कारण भगदड़ हुई थी। वहीं, रेलवे ने इस रिपोर्ट को गलत करार दिया है। उसका कहना है कि रेलवे प्रशासन द्वारा दो सदस्यीय समिति गठित की गई है। उसके अतिरिक्त कोई और जांच नहीं चल रही है।

रेलवे प्रशासन ने शनिवार रात को ही उच्च स्तरीय जांच की घोषणा की थी। जांच समिति में उत्तर रेलवे के प्रिंसिपल चीफ कमर्शियल मैनेजर नरसिंह देव और प्रिंसिपल चीफ सिक्योरिटी कमिश्नर पंकज गंगवार शामिल हैं। रेलवे प्रशासन का कहना है कि समिति 100 से अधिक लोगों के व्यक्तिगत बयान एकत्र कर रही है। सभी बयान दर्ज होने और गहन जांच के बाद समिति द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी।

प्लेटफार्म बदलने से भगदड़ होने की बात सामने आई

इससे पहले आरपीएफ की आंतरिक रिपोर्ट के अनुसार प्लेटफार्म बदलने से भगदड़ होने की बात कही जा रही थी। इस रिपोर्ट के अनुसार, शनिवार की देर शाम करीब आठ बजे शिवगंगा एक्सप्रेस के प्लेटाफार्म 12 से रवाना होने के बाद स्टेशन पर भीड़ बढ़ने लगी, जिससे फुट ओवरब्रिज दो और तीन के साथ ही प्लेटफार्म नंबर 12, 13, 14, 15 व 16 पर जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई।

आरपीएफ अधिकारी ने स्थिति का आकलन कर स्टेशन निदेशक से अनारक्षित टिकट की बिक्री नहीं करने को कहा था। आरपीएफ के अतिरिक्त जवानों को बुलाया गया। इसी दौरान लगभग पौने नौ बजे प्लेटफार्म नंबर 12 से प्रयागराज विशेष ट्रेन रवाना करने की उद्घोषणा हुई। उसके कुछ समय बाद इसे बदलकर प्लेटफार्म नंबर 16 कर दिया गया, जिससे भगदड़ मच गई। इस रिपोर्ट को रेलवे प्रशासन ने पूरी तरह से गलत बताया है।

RPF के एक वरिष्ठ अधिकारी ने टिकट रोकने से रोका था

एनडीटीवी की रिपोर्ट्स के अनुसार, रेलवे पुलिस बल (RPF) की जांच में पाया गया कि शनिवार रात को 8.15 बजे से 10.10 बजे के बीच नई दिल्ली स्टेशन से प्रयागराज जाने वाली चार ट्रेनें थीं। सिर्फ दो घंटे के अंतराल में ये चारों ट्रेनें रवाना होनी थीं। वहीं, भगदड़ की जांच में पता चला कि आरपीएफ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्टेशन प्रबंधक से और टिकट जारी न करने को कहा था, क्योंकि उन्हें लगा था कि भीड़ बहुत अधिक हो गई है और एक अनियंत्रित स्थिति उत्पन्न हो सकती है, लेकिन तब तक हजारों लोग प्लेटफॉर्म पर पहुंच चुके थे।

शपथ ग्रहण समारोह के दिन कई रूट रहेंगे डायवर्ट, घर से निकलने से पहले चेक कर लें गाइडलाइन

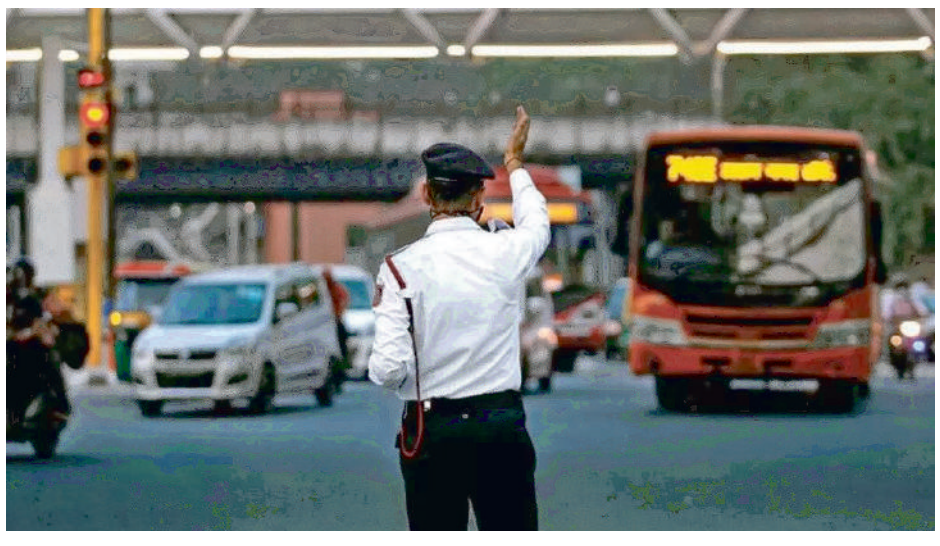

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के मुख्यमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह गुरुवार को रामलीला मैदान में होगा। समारोह को लेकर कई वीवीआईपी और वीआईपी कार्यक्रम में शामिल होंगे। समारोह में बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की भी उम्मीद है। कार्यक्रम के दौरान यातायात को नियंत्रित करने के लिए कुछ मार्ग परिवर्तन और प्रतिबंध लागू किए जाएंगे जिसके लिए यातायात पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है।

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह गुरुवार को रामलीला मैदान में होगा। समारोह को लेकर कई वीवीआईपी और वीआईपी कार्यक्रम में शामिल होंगे। समारोह में बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की भी उम्मीद है।

कार्यक्रम के दौरान यातायात को नियंत्रित करने के लिए कुछ मार्ग परिवर्तन और प्रतिबंध लागू किए जाएंगे, जिसके लिए यातायात पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है।

इन मार्गों को बनाया गया डायवर्जन प्वाइंट

सुभाष पार्क टी-पॉइंट
राजघाट
दिल्ली गेट
आइटीओ
अजमेरी गेट
रणजीत सिंह फ्लाईओवर
भवभूति मार्ग - डीडीयू मार्ग रेड लाइट
झंडेवालान

यातायात पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, 20 फरवरी को सुबह 07:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक बीएसजेड मार्ग (आईटीओ से दिल्ली गेट), जेएलएन मार्ग (दिल्ली गेट से गुरु नानक चौक), अरुणा आसिफ अली रोड, मिंटो रोड से कमला मार्केट से हमदर्द चौक, रणजीत सिंह फ्लाईओवर से तुर्कमान गेट, अजमेरी गेट से कमला मार्केट सहित कई सड़कों और आसपास के क्षेत्रों में यातायात प्रतिबंध रहेगा।

एडवाइजरी में यात्रियों को दिए निर्देश

भीड़भाड़ कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।

अपने वाहनों को केवल निर्धारित पार्किंग क्षेत्रों में ही पार्क करें।

यातायात को सुचारू रूप से चलाने के लिए सड़क किनारे पार्किंग से बचें।

यदि कोई असामान्य या संदिग्ध वस्तु या व्यक्ति दिखाई दे, तो कृपया तुरंत पुलिस को सूचित करें।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के लिए पहाड़गंज की ओर जाने वाली सड़क का उपयोग करें और अजमेरी गेट की ओर जाने से बचें।

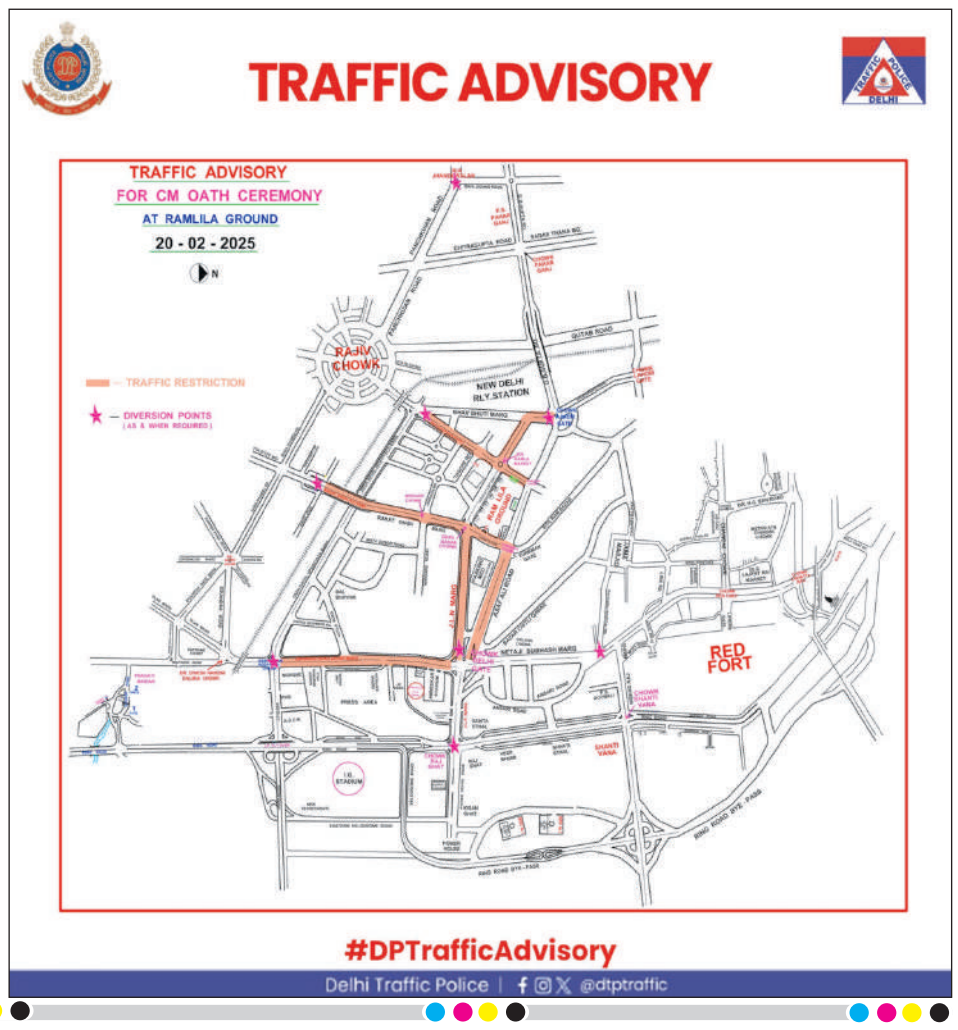

श्रवण नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव,कैरियर,रोग और उपाय

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

हमारे नक्षत्र मंडल में श्रवण नक्षत्र तीन तारों का एक समूह जिसमे एक बड़ा चमकदार तारा है बाकी की दो कम चमकदार है। वैसे विद्वानों ने श्रवण नक्षत्र को गरुड़ तारामंडल का सदस्य माना है।

श्रवण शब्द का अर्थ है सुनना अथवा ख्याति,श्रावण मास की पूर्णिमा जिसे रक्षाबंधन कहते है उस दिन चंद्रमा इसी नक्षत्र में होता है। श्रवण नक्षत्र के नक्षत्रपति चंद्रमा तथा देवता भगवान विष्णु को माना जाता है। इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह भगवान विष्णु(वामन अवतार) के तीन चरण है।

स्वभाव: श्रवण नक्षत्र में जन्मा जातक कार्य कुशल,दूसरो की मदद करने वाला,प्रजापालक,हंसमुख,शांतिप्रिय,आकर्षक तथा मिलनसार होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार इस नक्षत्र के जन्मे जातक विद्वान,धन वैभव संपन्न व यशस्वी होते है।

कैरियर: इस नक्षत्र के जन्मे लोग शोधकर्ता,उपदेशक,अध्यापक,
विदूषक,आध्यात्मिक कार्य, संगीतज्ञ, सलाहकार, मनोचिकित्सक,
प्रशिक्षक, डॉक्टर, ट्रैवल एजेंट, रेडियो ऑपरेटर,पर्यटन विभाग से जुड़े काम,होटल या रेस्तरां से जुड़े कामों में सफलता प्राप्त करता है।

रोग: श्रवण नक्षत्र के जन्मे जातकों को कान से संबंधित बीमारी,पैरो से संबंधित रोग,इसके अलावा श्वास और गुप्त रोगों से संबंधित बीमारी परेशान करती है।

उपाय: श्रवण नक्षत्र में जन्मे जातक को भगवान विष्णु की आराधना करना सबसे उत्तम होता है यदि विष्णु सहस्रनाम का पाठ प्रत्येक माह पड़ने वाले श्रवण नक्षत्र पर किया जाए तो सभी प्रकार की मनोकामना पूर्ण होती है। इनके लिए सफेद,पीला तथा नीला रंग भाग्यशाली होता है।

तमिलनाडु में श्री गणेश प्रसिद्ध और ऐतिहासिक गणेश मंदिर

*तमिलनाडु के गणेश मंदिर अपनी अनोखी विशेषताओं और पौराणिक कथाओं के लिए जाने जाते हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख गणेश मंदिरों के नाम हैं:

1. आदि विनायक मंदिर, तिलतर्पणपुरी, तिरुवरुर जिला - यह मंदिर भगवान गणेश के मानव मुख वाले रूप को समर्पित है।

2. सuyंबु सेल्वा विनायक मंदिर, शेनबक्कम, वेल्लोर जिला - इस मंदिर में 10 स्वयंभू विनायक मूर्तियाँ हैं जो ₹ओम₹ के आकार में व्यवस्थित हैं।

3. प्रलयम काठा विनायक मंदिर, थिरुप्पुरंबियम, कुम्बकोणम जिला - इस मंदिर में भगवान गणेश की मूर्ति शहद को पूरी तरह से अवशोषित कर लेती है।

4. स्वेता विनायक मंदिर, थिरुवलांचुली, कुम्बकोणम जिला - इस मंदिर में भगवान गणेश की मूर्ति समुद्र के झाग से बनाई गई है।

5. मुंडी विनायक मंदिर, पुलियाकुलम, कोयंबत्तूर जिला - इस मंदिर में भगवान गणेश की मूर्ति एशिया की सबसे बड़ी मूर्तियों में से एक है।

आदि विनायक मंदिर की यात्रा करने के लिए आपको महाराष्ट्र के अष्टविनायक मंदिरों की यात्रा पर जाना होगा। आदि विनायक मंदिर मोरेगांव में स्थित है, जो पुणे शहर से लगभग 70 किमी दूर है ।

यहाँ आदि विनायक मंदिर के बारे में कुछ जानकारियां आपके लिए प्रस्तुत हैः

मयूरेश्वर मंदिरः आदि विनायक मंदिर को मयूरेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर भगवान गणेश के पहले स्वरूप को समर्पित है - मंदिर की विशेषताः मंदिर के चार प्रवेशद्वार हैं, जिन्हें सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग का प्रतीक माना जाता है। मंदिर के प्रवेशद्वार पर छह फीट लंबे मूषक महाराज और गणपति के सामने मुख किए बड़े से नंदी बैठे मिल जाएंगे। मंदिर की कहानीः मान्यता है कि इसी स्थान पर गणपति जी ने मोर पर सवार होकर सिंदुरासुर नाम के राक्षस का वध किया था। इसलिए इस मंदिर में प्रकट हुए भगवान गणपति के इस स्वरूप को मयूरेश्वर कहा जाता है।

अगर आप आदि विनायक मंदिर की यात्रा करना चाहते हैं, तो आपको महाराष्ट्र के पुणे जिले में स्थित मोरेगांव जाना होगा।

सर्वप्रथम गणेश पूजन क्यों ?

हिंदू धर्म में किसी भी शुभ कार्य का आरंभ करने के पूर्व गणेशजी की पूजा करना आवश्यक माना गया है, क्योंकि उन्हें विघ्नहर्ता व ऋद्धि-सिद्धि का स्वामी कहा जाता है। इनके स्मरण, ध्यान, जप, आराधना से कामनाओं की पूर्ति होती है विघ्नों का विनाश होता है। वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले बुद्धि के अधिष्ठाता और साक्षात प्रणव रूप हैं। प्रत्येक शुभ कार्य के पूर्व 'श्री गणेशाय नमः' का उच्चारण कर उनकी स्तुति में यह मंत्र बोला जाता है-

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ:।
निर्विघ्नं कुरु मेदेव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

गणेशजी विद्या के देवता हैं। साधना में उच्चस्तरीय दूरदर्शिता आ जाए, उचित-अनुचित, कर्तव्य-अकर्तव्य की पहचान हो जाए, इसीलिए सभी शुभ कार्यों में गणेश पूजन का विधान बनाया गया है। गणेशजी की ही पूजा सबसे पहले क्यों होती है, इसकी पौराणिक कथा इस प्रकार है-

पद्मपुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में जब यह प्रश्न उठा कि प्रथम पूज्य किसे माना जाए, तो समस्त देवतागण ब्रह्माजी के पास पहुंचे। ब्रह्माजी ने कहा कि जो कोई संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले कर लेगा, उसे ही प्रथम पूजा जाएगा। इस पर सभी देवतागण अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर परिक्रमा हेतु चल पड़े। चूंकि गणेशजी का वाहन चूहा है और उनका शरीर स्थूल, तो ऐसे में वे परिक्रमा कैसे कर पाते? इस समस्या को सुलझाया देवर्षि नारद ने। नारद ने उन्हें जो उपाय सुझाया, उसके अनुसार गणेशजी ने भूमि पर 'राम' नाम लिखकर उसकी सात परिक्रमा की और ब्रह्माजी के पास सबसे पहले पहुंच गए। तब ब्रह्माजी ने उन्हें प्रथम पूज्य बताया। क्योंकि 'राम' नाम साक्षात् श्रीराम का स्वरूप है और श्रीराम में ही संपूर्ण ब्रह्मांड निहित है।

शिवपुराण की एक अन्य कथा के अनुसार एक बार समस्त देवता भगवान्-शंकर के पास यह समस्या लेकर पहुंचे कि किस देव को उनका मुखिया चुना जाए। भगवान्-शिव ने यह प्रस्ताव रखा कि जो भी पहले पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा करके कैलास लौटेगा, वही अग्रपूजा के योग्य होगा और उसे ही देवताओं का स्वामी बनाया जाएगा। चूंकि गणेशजी का वाहन चूहा अत्यंत धीमी गति से चलने वाला था, इसलिए अपनी बुद्धि-चातुर्य के कारण उन्होंने अपने पिता शिव और माता पार्वती की ही तीन परिक्रमा पूर्ण की और हाथ जोड़कर खड़े हो गए। शिव ने प्रसन्न होकर कहा कि तुमसे बढ़कर संसार में अन्य कोई इतना चतुर नहीं है। माता-पिता की तीन परिक्रमा से तीनों लोकों की परिक्रमा का पुण्य तुम्हें मिल गया, जो पृथ्वी की परिक्रमा से भी बड़ा है। इसलिए जो मनुष्य किसी कार्य के शुभारंभ से पहले तुम्हारा पूजन करेगा, उसे कोई बाधा नहीं आएगी। बस, तभी से गणेशजी अग्रपूज्य हो गए।

कथा भगवान गणेश और तुलसी जी की

जैसे भारतीय पुराणों में वर्णित किया गया है। यह कथा न केवल देवताओं और उनकी परंपराओं को समझाने में मदद करती है, बल्कि इस समय की धार्मिक मान्यताओं, आस्थाओं और उनके परिणामों के बारे में भी महत्वपूर्ण संदेश देती है। आइए इसे विस्तार से और रोचक ढंग से जानते हैं। कथा के अनुसार, एक बार भगवान गणेश गंगा किनारे तपस्या कर रहे थे। तपस्या, ध्यान और साधना के लिए यह स्थान अत्यधिक पवित्र माना जाता है, और गणेश जी ने वहाँ शांति और ध्यान की अवस्था में समय बिताया था। उसी समय तुलसी नामक एक कन्या तीर्थयात्रा करती हुई वहाँ पहुंचीं। तुलसी एक बहुत ही धार्मिक और सुंदर कन्या थीं, जो भगवान विष्णु की भक्त थीं, लेकिन उन्हें गणेश जी पर मोह हो गया। उनका दिल गणेश जी के प्रति आकर्षित हो गया और उन्होंने विवाह का प्रस्ताव भगवान गणेश से रखा।

तुलसी ने गणेश जी से कहा, "आपके रूप और गुणों के प्रति मेरी आस्था और प्रेम है, और मैं आपको अपना जीवन साथी बनाना चाहती हूँ।" तुलसी का यह प्रस्ताव सुनकर भगवान गणेश को थोड़ा आश्चर्य हुआ। वे तपस्या में लीन थे और तुलसी के प्रस्ताव को गंभीरता से नहीं ले पाए। गणेश जी ने विनम्रता से उत्तर दिया कि उनका विवाह नहीं हो सकता, क्योंकि वे स्वयं एक ब्रह्मचारी (कुंवारे) हैं और उनका कोई भी वैवाहिक संबंध नहीं हो सकता।

गणेश जी के इस इनकार से ठुकराया, लेकिन तुलसी का मन इससे दुखी हो गया। वह क्रोधित हो गईं और उनका अहंकार जागृत हुआ। तुलसी ने गणेश जी को श्राप दिया, "तुम्हारा विवाह दो बार होगा।" यह श्राप सुनकर गणेश जी चुप रहे, क्योंकि श्राप के प्रभाव से वे बच नहीं सकते थे, लेकिन गुस्से में उन्होंने तुलसी को जवाब दिया।

गणेश जी ने तुलसी से कहा, "तुम्हारा विवाह किसी असुर से होगा।" तुलसी यह सुनकर बहुत घबराई, क्योंकि असुरों से विवाह का मतलब था दुख, कष्ट और अपमान। इसके बाद तुलसी ने भगवान गणेश से माफी मांगी और उन्हें विनती की कि वे अपना श्राप वापस ले लें। तब गणेश जी ने तुलसी को शांति से समझाया और कहा, "तुम्हारा विवाह शंखचूर्ण राक्षस से होगा, लेकिन तुम्हारी विशेषता यह होगी कि तुम भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय होगी और कलियुग में मोक्ष देने वाली बनोगी। लेकिन, मेरी पूजा में तुम्हारा उपयोग नहीं होगा।"

गणेश जी का यह वचन तुलसी के लिए एक रहस्य और चुनौती बन गया। गणेश जी ने यह भी बताया कि तुलसी का महत्व भगवान विष्णु की पूजा में बहुत होगा, क्योंकि तुलसी के पत्ते भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय हैं और उनका इस्तेमाल विशेष रूप से विष्णु पूजा में होता है। हालांकि, गणेश जी ने साफ-साफ कह दिया कि उनकी पूजा में तुलसी का कोई स्थान नहीं होगा।

उसके बाद, तुलसी ने भगवान गणेश से माफी मांगी और उन्हें श्रद्धा से प्रणाम किया। गणेश जी ने फिर तुलसी को आशीर्वाद दिया और उन्हें यह समझाया कि उनके श्राप और आशीर्वाद दोनों ही अनिवार्य रूप से सत्य हैं।

इस कथा का एक गहरा धार्मिक और आध्यात्मिक अर्थ है। पहली बात, यह बताती है कि किसी भी देवता का अपमान या उनके सामने गलत आचरण करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। दूसरे, यह कथा यह भी दिखाती है कि हर देवता के अपने विशिष्ट रीति-रिवाज होते हैं और उनके द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना आवश्यक है। तुलसी का उपयोग विशेष रूप से भगवान विष्णु की पूजा में होता है, लेकिन गणेश जी की पूजा में इसका उपयोग वर्जित है।

आध्यात्मिक दृष्टि से, इस कथा का यह संदेश भी है कि हमें अपने भीतर के अहंकार को नियंत्रित करना चाहिए। तुलसी ने गणेश जी के प्रस्ताव को ठुकराए जाने पर गुस्से में आकर श्राप दिया, लेकिन भगवान गणेश ने उसे विनम्रता से जवाब दिया और उसे सही मार्ग दिखाया। यह हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में हमें किसी भी स्थिति में संयम और विवेक बनाए रखना चाहिए, ताकि हम किसी भी संघर्ष का समाधान शांतिपूर्वक और समझदारी से कर सकें।

इस प्रकार, यह कथा न केवल धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं को समझाने का एक माध्यम है, बल्कि यह जीवन के महत्वपूर्ण पाठों को भी सिखाती है, जैसे कि विनम्रता, धैर्य, और सही आचरण का पालन करना।

हींग है तो किचन आइटम लेकिन जानिये उसके चमत्कारिक उपयोग

हींग का उपयोग भारत में कई सौ सालों से मसाले के रूप में किया जा रहा है। दाल हो या सब्जी, साधारण खाने में हींग का छौंक लगाने से स्वाद कई गुना बढ़ जाता है। हींग केवल रसोई में काम आने वाला मसाला ही नहीं है बल्कि एक बेहतरीन औषधि भी है। हींग फेरुला फोइटिडानाम के पौधे का रस है। इस पौधे के रस को सुखा कर हींग बनाई जाती है। इसके पौधे १ से 4 फीट तक ऊंचे होते हैं। ये पौधे विशेष रूप से ईरान, अफगानिस्तान, तुर्कमिस्तान, बलूचिस्तान, काबुल और खुरासान के पहाड़ी क्षेत्रों में होते हैं। वहां से हींग पंजाब और मुंबई आती है। महर्षि चरक के अनुसार, हींग दमा के रोगियों के लिए रामबाण औषधि है। यह कफ का नाश करने वाली, गैस की समस्या से राहत देने वाली, लकवा के रोगियों के लिए फायदेमंद व आंखों के लिए भी बेहद लाभदायक होती है।

जानिए इसके कुछ खास ३० तरह के अनमोल उपयोग....

1. सौंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, अजवाइन, सफेद जीरा, काला जीरा, शुद्ध घी में भुनी हींग और सेंधा नमक सब समान मात्रा में पीस कर चूर्ण को रोजाना खाने के बाद १ से 4 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करें, पेट में गैस की समस्या खत्म हो जाएगी।
२. हींग को पानी में घोल कर नाभि के आसपास लेप करने से या घी में भुनी हींग शहद में मिलाकर खाने से पेटदर्द में लाभ होता है।
३. हींग का छोटा-सा टुकड़ा पानी से निगल लेने पर पेटदर्द से बहुत जल्दी राहत मिलती है।
4. पेटदर्द में १ ग्राम हींग को आधा किलो पानी में उबालें, जब चौथाई पानी बच जाए तो इस पानी को हल्का ठंडा कर पिएं।
5. हींग को पानी में मिलाकर घुटनों पर लेप करने से घुटनों का दर्द दूर हो जाता है।
6. दांतों में दर्द हो तो दर्द वाले स्थान पर हींग लगा लें या हींग का टुकड़ा रख लें। राहत मिलेगी।
7. हींग को पानी में उबालकर कुल्ला करने से भी दांतों के दर्द में राहत मिलती है।
8. सर्दी के कारण सिरदर्द हो रहा हो तो पानी में थोड़ी हींग घोल कर सिर पर लगाएं। सिरदर्द में तुरंत आराम मिलेगा।
9. हींग को पानी में घोलकर उसकी कुछ बूंदें रोजाना नाक में डालें। माइग्रेन की समस्या में बहुत आराम मिलता है।
10. पसलियों में दर्द हो तो पानी में हींग घोलकर पसलियों पर लेप करें, आराम मिलेगा।
11. बच्चों को न्यूमोनिया में हींग का पानी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में देते रहने से बहुत आराम मिलता है।
१२. भोजन में हींग के नियमित सेवन से महिलाओं के गर्भाशय का संकुचन होता है और मासिक धर्म से जुड़ी परेशानियां दूर हो जाती हैं।
13. दाद की समस्या के लिये गन्ने के रस में सिरके के साथ थोड़ा हींग पाउडर मिलाएं। सुबह-शाम दाद पर लगाएं। कुछ ही दिनों में दाद खत्म हो जाएगा।
14. पुराने गुड़ में थोड़ी-सी हींग मिलाकर सेवन करने से हिचकी तुरंत बंद हो जाती है।
15. यदि कोई जहर खा ले तो उसे तुरंत हींग का पानी पिलाएं। ऐसा करने से उल्टी में जहर बाहर निकल जाता है और जहर का प्रभाव खत्म हो जाता है।
16. हिस्टीरिया के रोगी को हींग सुंघाने पर तुरंत होश आ जाता है।
17. हींग का नियमित सेवन करने से लो-ब्लड प्रेशर और दिल से संबंधित बीमारियां होने की संभावना कम हो जाती हैं।
18. पित्ती यानी अर्टिकेरिया की समस्या होने पर हींग को घी में मिलाकर शरीर पर मलें, बहुत जल्दी लाभ होगा।
19. हींग को आक के फूल के साथ पीसकर छोटी-छोटी गोली बनाकर गर्म पानी से लें। खांसी की समस्या से छुटकारा मिल जाएगा।
२०. गला बैठ जाए तो हींग को उबले हुए पानी में घोलकर इस पानी से गरारे दिन में २-३ बार करें। गला ठीक हो जाएगा।

शबरी जयंती

रामायण काल भगवान राम की परम भक्त माता शबरी के बारे में तो आुने सुना ही होगा। शास्त्रों में वर्णन मिलता है। कि शबरी माता ने प्रभु राम को झूठे बेर खिलाए थे। हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल फाल्गुन महीने की कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को शबरी जयंती मनाई जाती है। यह दिन मां शबरी की श्री राम के प्रति भक्ति को समर्पित है। इस दिन भगवान राम के साथ ही मां शबरी की भी पूजा की जाती है। शास्त्रों में वर्णन है कि इस दिन भगवान की मन से सेवा-सत्कार करने पर प्रभु भक्तों से प्रसन्न हो जाते हैं. इसी मान्यता के अधार पर इस दिन माता शबरी की पूजा करते हैं और भक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

शबरी जयंती का महत्व माता शबरी भगवान राम की परम भक्तों की श्रेणी में जानी जाती हैं। रामायण के दौरान जब भगवान राम 14 साल का वनवास काट रहे थे, तब वे शबरी माता के आश्रम गए और उनको दर्शन दिए थे। दर्शन करने के बाद दिन रात शबरी माता प्रभु राम के दर्शन करने की प्रतीक्षा करती रहती थीं। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान श्रीराम उनसे मिलने गए। उनके आने पर माता शबरी ने भक्ति भाव से भगवान राम को बेर खिलाए थे। कहा जाता है कि शबरी जयंती वही दिन है जब भगवान राम उनके आश्रम पधारे थे और शबरी माता द्वारा दिए गए बेर खाए थे।

शबरी जयंती पर ऐसे करें पूजा शबरी जयंती के दिन सुबह जल्दी उठकर (ब्रह्म मुहूर्त में) स्नान-ध्यान करने के बाद साफ कपड़े पहनें और सूर्य देव को अर्घ्य दें। इसके बाद ईशान कोण में प्रभु श्री राम और माता शबरी की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें और विधिवत पूजा करें। भगवान श्री राम और माता शबरी को धूप, दीप, गंध, फूल, अक्षत आदि चीजें अर्पित करें। इस दिन मीठे बेर का भोग जरूर लगाएं। ऐसा करने से प्रभु श्रीराम जल्दी प्रसन्न होते हैं। और भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करते हैं। अंत में भगवान श्री राम की आरती करें और भोग में चढ़ाए बेर प्रसाद के रूप में बांटें।

श्री गुरु जी १९ फरवरी/जन्मोत्सव

श्री गुरु जी का जन्म १९ फरवरी, १९०६ (फाल्गुन मास की एकादशी विक्रमी संवत् १९६*) को नागपुर में अपने मामा के घर हुआ था. उनके पिता का नाम श्री सदाशिवराव और माता जी का नाम लक्ष्मी बाई था. वे अपने माता पिता की चौथी संतान थे. उनका निवास नागपुर में था. सदाशिवराव उन दिनों नागपुर से ७० कि.मी. दूर रामटेक में अध्यापक थे।

बचपन में श्री गुरु जी को मधु नाम से पुकारा जाता था. मधु यानी (श्रीगुरुजी) बचपन से ही अत्यधिक मेधावी छात्र थे. उन्होंने सभी परीक्षाएँ सदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं. कक्षा में हर प्रश्न का उत्तर वे सबसे पहले दे देते थे. अतः उन पर यह प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि जब कोई अन्य छात्र उत्तर नहीं दे पायेगा, तब ही वह बोलेंगे।

उच्च शिक्षा के लिए काशी जाने पर उन का सम्पर्क संघ से हुआ. वे नियमित रूप से शाखा पर जाने लगे. जब डा. हेडगेवार जी काशी आये, तो उनसे वार्तालाप में माधव का संघ के प्रति विश्वास और दृढ़ हो गया. एम-एस.सी. करने के बाद वे शोधकार्य के लिए मद्रास गये; पर वहाँ का मौसम अनुकूल न आने के कारण वे काशी विश्वविद्यालय में ही प्राध्यापक बन गये।

अपने शिष्यों पर असीम प्रेम के कारण उनकी पढ़ने में वे हर प्रकार की सहायता करते थे. यदि कोई विद्यार्थी निर्धन होता तो उस को आवश्यक अधिक सहायता भी करते. इस के लिए वे अपने वेतन का बहुत बड़ा भाग ख़र्च करने में उनको आनन्द का ही अनुभव होता था. उन के मधुर व्यवहार तथा पढ़ाने की अद्भुत शैली के कारण सब उन्हें गुरुजी कहने लगे और फिर तो यही नाम उनकी पहचान बन गया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक मालवीय जी भी उन से बहुत प्रेम करते थे. कुछ समय काशी रहकर वे नागपुर आ गये और कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की. उन दिनों उनका सम्पर्क रामकृष्ण मिशन से भी हुआ और वे एक दिन चुपचाप बंगाल के सारगाछी आश्रम चले गये. वहाँ पर उन्होंने विवेकानन्द के गुरुभाई स्वामी अखंडानन्द जी से दीक्षा ली।

स्वामी जी के देहान्त के पश्चात् वे नागपुर लौट आये तथा फिर पूरी शक्ति से संघ कार्य में लग गये. उनकी योग्यता देखकर डा. हेडगेवार जी ने उन्हें १९*९ में सरकार्यवाह का दायित्व दिया. अब पूरे देश में उनका प्रवास होने लगा. २१ जून, सन्-१९४० को डा. हेडगेवार के देहान्त के पश्चात् श्री गुरु जी सरसंघचालक बने। उन्होंने संघ कार्य को गति देने के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंक दी।

सन्-१९४७ में देश स्वतन्त्र हुआ; पर उसे विभाजन का दंश भी झेलना पड़ा. १९४८ में गांधी जी हत्या का झूठा आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया. श्री गुरुजी को जेल में डाल दिया गया; पर उन्होंने धैर्य से सब समस्याओं को झेला और संघ तथा देश को सही दिशा दी. इस से सब ओर उनकी ख्याति फैल गयी। संघ-कार्य भी देश के हर जिले में पहुँच गया।

केन्द्रीय गृहमंत्री सरदार पटेल ने जम्मू कश्मीर रियासत के दीवान मेहरचन्द महाजन से भारत के साथ विलीनीकरण करने के लिए कश्मीर नरेश श्री हरि सिंह जी को तैयार करने के लिए श्री गुरुजी के पास सन्देश भिजवाया कि वे कश्मीर नरेश से मिलकर उन्हें इस विलीनीकरण के लिए तैयार करें।

श्री गुरुजी १७ अक्तूबर १९४७ को विमान से श्रीनगर पहुँचे. भेंट १८ अक्तूबर को प्रातः हुई. भेंट के समय १५-१६ वर्षीय युवराज कर्णसिंह की जांघ की हड्डी टूटने से प्लास्टर में बंधे वहीं लेटे हुए थे. कश्मीर नरेश का कहना था कि मेरी रियासत पूरी तरह से पाकिस्तान पर अवलम्बित है. सारे रास्ते सियालकोट तथा रावलपिंडी की ओर से है. रेल सियालकोट की ओर से है.अतः हिन्दुस्तान के साथ मेरा सम्बन्ध किस तरह बन सकता है?

श्री गुरुजी ने समझाया - आप हिन्दू राजा हैं. पाकिस्तान में विलय करने से आपको और आपकी हिन्दू प्रजा को भीषण संकटों से संघर्ष करना होगा. यह ठीक है कि अभी हिन्दुस्तान से रेल के रास्ते और हवाई मार्ग का कोई सम्पर्क नहीं है, किन्तु इन सबका प्रबन्ध शीघ्र ही हो जायेगा. आपका और जम्मू कश्मीर रियासत का भला इसी में है कि आप हिन्दुस्तान के साथ विलीनीकरण कर लें।

दीवान श्री मेहरचन्द महाजन ने कश्मीर नरेश से कहाः गुरुजी ठीक कह रहे हैं. आपको हिन्दुस्तान के साथ रियासत का विलय करना चाहिए. अन्ततः कश्मीर नरेश ने गुरुजी की बात मान ली और उन्होंने श्री गुरुजी को तूस की शाल भेंट की. इस प्रकार जम्मू कश्मीर के भारत विलय में श्री गुरुजी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्री गुरुजी ने चीनी आक्रमण आरम्भ होते ही जो मार्ग दर्शन दिया उसके परिप्रेक्ष्य में स्वयंसेवक युद्ध प्रयत्नों में जनता का समर्थन जुटाने तथा उनका मनोबल दृढ़ करने में जुट गए. उनके सामयिक सहयोग का महत्व पण्डित नेहरू को भी स्वीकार करना पड़ा और उन्होंने सन्-१९६* में गणतंत्र दिवस के पथ संचलन में कुछ कांग्रेसियों की आपत्ति के बाद भी संघ के तीन हज़ार गणवेषधारी स्वयंसेवकों का घोष की ताल पर कदम मिलाकर चलना उस दिन के कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण था।

श्री गुरुजी में असामान्य सहन शक्ति थी. विद्यार्थी काल में एक दिन उनके पैर की अंगुली में बिच्छू ने काट लिया. तब उन्होंने ने उस भाग को थोड़ा काटकर, पोटासियम परमेगनेट के पानी में पैर रखकर पढ़ने में तल्लीन हो गये. तब उनके एक मित्र ने आश्चर्य चकित होकर पूछा - ₹इस भयानक दर्द के बीच आपने पढ़ना कैसे जारी रखा ?₹ तब श्री गुरुजी ने सहजता से उत्तर दिया, *बिच्छू ने पैर में काटा है, सिर में तो नहीं।

श्री गुरुजी का धर्मग्रन्थों एवं हिन्दू दर्शन पर इतना अधिकार था कि एक बार शंकराचार्य पद के लिए उनका नाम प्रस्तावित किया गया था; पर उन्होंने विनम्रतापूर्वक उसे अस्वीकार कर दिया. १९७० में वे कैंसर से पीड़ित हो गये. शल्य चिकित्सा से कुछ लाभ तो हुआ; पर पूरी तरह नहीं. इसके पश्चात भी वे प्रवास करते रहे; पर शरीर का अपना कुछ धर्म होता है. उसे निभाते हुए श्री गुरुजी ने ०५ जून, सन् १९७* को रात्रि में शरीर छोड़ दिया।

श्री गुरुजी, अपनी विचार शक्ति व कार्य शक्ति से विभिन्न क्षेत्रों एवम् संघटनाओं के कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत बनें. श्रीगुरुजी का जीवन अलौकिक था, राष्ट्र जीवन के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने मूलभुत एवम् क्रियाशील मार्गदर्शन किया. सचमुच ही श्रीगुरूजी का जीवन ऋषि-समान था।

श्रीगुरुजी के ११९ वें जन्मोत्सव पर उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम

हरसिंगारः (शेफाली)

लाजवाब सुगंध वाला यह पौधा हर रोग में असरदार है। पेड़ के हर भाग क्रमशः पत्ते, बीज, फूल और छाल की खास उपयोगिता है। हरसिंगार के आकर्षण से आप में से अधिकतम लोग परिचित होंगे। सुबह के वक्त अगर इसकी खुशबू आप तक पहुंच जाए तो दिन बन जाता है। इसके फूल की खूबसूरती भी वाकई में सराहने लायक होती है। इस पोस्ट में हम लोग हरसिंगार के स्वास्थ्यवर्धक गुणों के बारे में बात करेंगे। क्या आपने कभी हरसिंगार की पत्तियों से बनी चाय पी है? या फि र इसके फूल, बीज या छाल का प्रयोग स्वास्थ्य एवं सौंदर्य उपचार के लिए क्या है? आप नहीं जानते तो, जरूर जान लीजिए इसके चमत्कारी औषधीय गुणों के बारे में। इसे जानने के बाद आप हैरान हो जाएंगे। हरसिंगार के फूलों से लेकर पत्त यिां, छाल एवं बीज भी बेहद उपयोगी हैं। इसकी चाय, न केवल स्वाद में बेहतरीन होती है बल्कि सेहत के गुणों से भी भरपूर है। इस चाय को आप अलग-अलग तरीकों से बना सकते हैं और सेहत व सौंदर्य के कई फायदे पा सकते हैं। जानिए विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के लिए इसके लाभ और चाय बनाने का तरीका -

वि धि 1 : हरसिंगार की चाय बनाने के लिए इसकी दो पत्तियां और एक फूल के साथ तुलसी की कुछ पत्त यिां लीजिए और इन्हें 1 गिलास पानी में उबालें। जब यह अच्छी तरह से उबल जाए तो इसे छानकर गुनगुना या ठंडा करके पी लें। आप चाहें तो स्वाद के लिए शहद या मिश्री भी डाल सकते हैं। यह खांसी में फायदेमंद है।

वि धि २ : हरसिंगार के दो पत्ते और चार फूलों को पांच से 6 कप पानी में उबालकर, 5 कप चाय आसानी से बनाई जा सकती है। इसमें दूध का इस्तेमाल नहीं होता। यह स्फूर्तिदायक होती है।

चाय के अलावा भी हरसिंगार के वृक्ष के कई औषधीय लाभ हैं। जानिए कौन-कौन सी बीमारियों में कैसे करें इसका इस्तेमाल -

1 जोड़ों में दर्द - हरसिंगार के 6 से 7 पत्ते तोड़कर इन्हें पीस लें। पीसने के बाद इस पेस्ट को पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक कि इसकी मात्रा आधी न हो जाए। अब इसे ठंडा करके प्रतिदिन सुबह खालीपेट पिएं। नियमित रूप से इसका सेवन करने से जोड़ों से संबंधित अन्य समस्याएं भी समाप्त हो जाएगी।

२ खांसी - खांसी हो या सूखी खांसी, हरसिंगार के पत्तों को पानी में उबालकर पीने से बिल्कुल खत्म की जा सकती है। आप चाहें तो इसे सामान्य चाय में उबालकर पी सकते हैं या फिर पीसकर शहद के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

३ बुखार - किसी भी प्रकार के बुखार में हरसिंगार की पत्तियों की चाय पीना बेहद लाभप्रद होता है। डेंगू से लेकर मलेरिया या फिर चिकनगुनिया तक, हर तरह के बूखार को खत्म करने की क्षमता इसमें होती है।

4 साइटिका - दो कप पानी में हरसिंगार के लगभग 8 से 10 पत्तों को धीमी आंच पर उबालें और आधा रह जाने पर इसे अंच से उतार लें। ठंडा हो जाने पर इसे सुबह शाम खाली पेट पिएं। एक सप्ताह में आप फर्क महसूस करेंगे।

5 बवासीर - हरसिंगार को बवासीर या पाइल्स के लिए बेहद उपयोगी औषधि माना गया है। इसके लिए हरसिंगार के बीज का सेवन या फिर उनका लेप बनाकर संबंधित स्थान पर लगाना फायदेमंद है।

6 त्वचा के लिए - हरसिंगार की पत्त यिों को पीसकर लगाने से त्वचा संबंधी समस्याएं समाप्त होती हैं। इसके फूल का पेस्ट बनाकर चेहरे पर लगाने से चेहरा उजला और चमकदार हो जाता है।

7 हृदय रोग - हृदय रोगों के लिए हरसिंगार का प्रयोग बेहद लाभकारी है। इस के 15 से २० फूलों या इसके रस का सेवन करना हृदय रोग से बचाने में कारगर है।

8 दर्द - हाथ-पैरों व मांसपेशियों में दर्द व खिंचाव होने पर हरसिंगार के पत्तों के रस में बराबर मात्रा में अदरक का रस मिलाकर पीने से फायदा होता है।

9 अस्थमा - सांस संबंधी रोगों में हरसिंगार की छाल का चूर्ण बनाकर पान के पत्ते में डालकर खाने से लाभ होता है। इसका प्रयोग सुबह और शाम को किया जा सकता है।

10 प्रतिरोधक क्षमता - हरसिंगार के पत्तों का रस या फिर इसकी चाय बनाकर नियमित रूप से पीने पर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और शरीर हर प्रकार के रोग से लड़ने में सक्षम होता है। इसके अलावा पेट में कीड़े होना, गंजापन, स्त्री रोगों में भी बेहद फायदेमंद है।

औषधि के रूप में प्रयोग से पूर्व चिकित्सक की सलाह अवश्य लेंवे।

लेख लम्बा होने के कारण यहां संक्षिप्त जानकारी ही प्रेषित की गई है।

शरीर और मन

शरीर मन के साथ और मन शरीर के साथ बहुत गहरे में जुड़ा हुआ है। शरीर की बाहरी दीवार शरीर कहलाती है और शरीर की भीतरी दीवार मन हैं। जैसे सिक्के के दो पहलू होते हैं एक साथ जुड़े हुए भी और विपरीत भी। मन हिलता है तो शरीर हिलता है और शरीर हिलता है तो मन भी असंग नहीं रह जाता। सूक्ष्म शरीर में दोनों को एक साथ घटते/बढ़ते देखा जा सकता है। इसका स्थूल शरीर के रसायनों से भी संबंध है। कभी शांति से बैठे और कोई दुख या चिंता की बात याद आ जाए, सारे शरीर के रसायनों में फेरबदल होने लगता है। किसी को चिंता लग जाती है 'कहीं मुझे यह रोग न लग जाय', उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है। हमारा भय-चिंतन भीतर मन को पकड़ लेता है और शरीर उस-उस रोग में आविष्ट हो जाता है। शरीर पर कोई झटका लगता है और मन गति करने लगता है। वास्तव में मानसिक संघर्ष इसमें बाधक है, शारीरिक रुप से शिथिलीकरण/विश्राम का अभ्यास इस मानसिक संघर्ष को शांत कर सकता है। बहुत ज्यादा मानसिक व्यग्रता में शारीरिक विश्राम के अभ्यास में बाधा आती है लेकिन निरंतर अभ्यास से शरीर और मन दोनों को एक साथ शिथिल/शांत किया जा सकता है। गीतानुसार जो अपने जीवन को जानने की कोशिश/परिश्रम/अभ्यास नहीं करता वह अपने साथ ही शत्रुता स्थापित करने लगता है, और जो कोशिश/अभ्यास करता है वही अपने साथ मित्रवत हैं।

दिल्ली की मुख्यमंत्री होंगी रेखा गुप्ता, विधायक दल की बैठक में लगी मुहर; सीएम पद की लेंगी शपथ

सुषमा रानी

20 फरवरी को दोपहर 12 .35 बजे उपराज्यपाल वीके सक्सेना नए मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल को शपथ दिलाएंगे। रेखा गुप्ता दिल्ली की शालीमार बाग विधानसभा सीट से विधायक हैं। वे मौजूदा समय में दिल्ली भाजपा की महासचिव और भाजपा के महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं।

दिल्ली में मुख्यमंत्री के नाम को लेकर बना सस्पेंस खत्म हो गया है। रेखा गुप्ता को विधायक दल का नेता चुना गया है। कल यानि 20 फरवरी को दिल्ली के नए मुख्यमंत्री के तौर पर रेखा गुप्ता शपथ ग्रहण करेंगी। उपराज्यपाल वीके सक्सेना दोपहर 12.35 बजे नए मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल को शपथ दिलाएंगे। पहले यह कार्यक्रम शाम 4.30 बजे के लिए प्रस्तावित था।

बुधवार शाम को दिल्ली में भाजपा के नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक हुई, जिसमें रेखा गुप्ता विधायक दल के नेता के रूप में चुनी गईं। रेखा गुप्ता उपराज्यपाल वीके सक्सेना से मिलकर सरकार गठन का दावा पेश किया। कल रामलीला मैदान में नई सरकार का शपथ ग्रहण होगा।

कौन हैं रेखा गुप्ता

रेखा गुप्ता दिल्ली की शालीमार बाग विधानसभा सीट से विधायक हैं। वे मौजूदा समय में दिल्ली भाजपा की महासचिव और भाजपा के महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। 50 वर्षीय रेखा का जन्म हरियाणा के जींद जिले में स्थित नंदगढ़ गांव में 1974 में हुआ था। उनके पिता स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में अधिकारी पद पर थे।

रेखा गुप्ता का कैसा रहा अब तक का राजनीतिक करियर?

पढ़ाई पूरी करने के बाद रेखा गुप्ता 2003-04 में भाजपा युवा मोर्चा की दिल्ली इकाई से जुड़ीं और यहां सचिव पद पर रहीं। इसके बाद 2004 से 2006 तक उन्होंने भारतीय जनता युवा मोर्चा की राष्ट्रीय सचिव के तौर पर जिम्मेदारी निभाई।

2007: उत्तर पीतमपुरा से पार्षद बनीं।

2007-09: एमसीडी में महिला कल्याण एवं बाल विकास समिति की दो साल तक अध्यक्ष रहीं।

2009: दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा की महासचिव रहीं।

2010: भाजपा ने उन्हें राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य की जिम्मेदारी दी।

2012: उत्तरी पीतमपुरा वॉर्ड-54 से फिर बनीं पार्षद।

पढ़ाई-लिखाई के दौर में ही राजनीति से जुड़ीं

रेखा गुप्ता बचपन में पढ़ाई-लिखाई के दौरान ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संगठन (आरएसएस) के स्टूडेंट विंग अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़ गई थीं। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान वह दौलत राम कॉलेज में सचिव का चुनाव जीतने में सफल रहीं। 1995-96 में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ का चुनाव लड़ा और अध्यक्ष बनीं। रेखा ने इसके बाद एलएलबी तक की पढ़ाई पूरी की।

विधायक दल की बैठक के लिए भाजपा ने इन्हें सौंपी थी जिम्मेदारी

इससे पहले 19 फरवरी यानि बुधवार की दोपहर में भाजपा के संसदीय बोर्ड ने दिल्ली प्रदेश में पार्टी विधायक दल के नेता के चुनाव के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किए। भाजपा ने रविशंकर प्रसाद, ओपी धनखड़ को पर्यवेक्षक बनाया था। इन्हीं की उपस्थित में शाम को भाजपा विधायक दल की बैठक हुई।

कई राज्यों के मुख्यमंत्री हो सकते हैं शामिल

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा भाजपा-एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के रहने की भी उम्मीद जताई जा रही है। ऐसे में दिल्ली पुलिस ने सुरक्षा के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। चूंकि कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मौजूद रहेंगे, इसलिए उनकी सुरक्षा में एसपीजी का घेरा मौजूद रहेगा।

बॉलीवुड से भी आ सकते हैं कई मेहमान

वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह में नेताओं के अलावा बॉलीवुड के कुछ लोगों के शामिल होने की उम्मीद है, इसके अलावा वहां पर साधु-संतों को भी न्योता दिया गया है। कार्यक्रम की सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं। एसपीजी, अर्द्धसैनिक बलों और दिल्ली पुलिस का बहुस्तरीय घेरा मौजूद रहेगा।

अर्जुन कपूर, रकुल प्रीत सिंह और भूमि पेडनेकर ने दिल्ली में किया फिल्म 'मेरे हसबैंड की बीवी' का प्रमोशन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। हाल ही में एक्टर अर्जुन कपूर, रकुल प्रीत सिंह और भूमि पेडनेकर 21 फरवरी को रिलीज होने जा रही अपनी फिल्म 'मेरे हसबैंड की बीवी' के प्रचार के सिलसिले में दिल्ली आए। प्रचार कार्यक्रम यहां के शांगरीला होटल में आयोजित किया गया था। फिल्म 'मेरे हसबैंड की बीवी' दिल्ली में सेट की गई आधुनिक रोमांस की एक मजेदार और दिल को छू लेने वाली कहानी कहती है। फिल्म में दिखाया गया है कि किस तरह प्यार, किस्मत और अप्रत्याशित मोड़ एक आदमी को उलझन में डाल देते हैं। कहनी के अनुसार, अंतरा के साथ फिर से जगी चिंगारी और प्रभलीन के साथ अप्रत्याशित मोड़ के बीच फंसे अंकुर की जिंदगी एक मजेदार अप्रत्याशित मोड़ लेती है।

मीडिया से बात करते हुए अर्जुन ने बताया, 'फिल्म का शीर्षक एक मराठी नाटक से प्रेरित है और यह फिल्म की स्थिति के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। साथ ही, यह दर्शकों के बीच उत्सुकता भी पैदा करता है।' भूमि पेडनेकर ने फिल्म में अपनी भूमिका के बारे में बताया, 'मैं प्रभलीन ढिल्लन नामक एक आवेगशील और व्यस्त महिला की भूमिका निभा रही हूं और जो गाना मेरे किरदार के लिए सबसे उपयुक्त है, वह है- बिजली गिराने मैं हूं आई।'

एक या दो, दिल्ली में कितने डिप्टी सीएम बनेंगे? भाजपा ने खत्म किया सस्पेंस

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के नए मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता के नाम का एलान हुआ है। भाजपा नेतृत्व ने विधायक रेखा गुप्ता को दिल्ली का नया मुख्यमंत्री चुना है। रेखा गुप्ता दिल्ली की चौथी महिला मुख्यमंत्री होंगी। उनके अलावा प्रवेश वर्मा डिप्टी सीएम और विजेंद्र गुप्ता विधानसभा अध्यक्ष होंगे। इस लेख के माध्यम से जानिए पूरी खबर।

नई दिल्ली। दिल्ली के नए मुख्यमंत्री के नाम का एलान हो गया है। भाजपा नेतृत्व ने विधायक रेखा गुप्ता के नाम पर मुहर लगा दी। विधायक दल की बैठक में सर्वसम्मति से उन्हें नेता चुना गया। बता दें दिल्ली में सीएम के अलावा एक डिप्टी सीएम भी होगा। प्रवेश वर्मा डिप्टी सीएम (Delhi Deputy CM Name) बनेंगे। वहीं पर विजेंद्र गुप्ता विधानसभा सभा अध्यक्ष होंगे।

बता दें मुख्यमंत्री के लिए नाम तो कई चले लेकिन भाजपा नेतृत्व ने रेखा गुप्ता के नाम पर भरोसा जताया। नाम की घोषणा होने के साथ ही उनके पीतमपुरा स्थित घर पर कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाना शुरू कर दिया। इससे पहले भाजपा विधायक दल की बैठक शाम सात बजे शुरू होनी थी।

लेकिन आठ बजे तक विधायकों और सांसदों का पहुंचना जारी रहा। इसके बाद बैठक की शुरुआत हुई। पर्यवेक्षक के रूप में पहुंचे रविशंकर प्रसाद ने बैठक की शुरुआत करते हुए कहा कि दिल्ली में भाजपा 27 साल बाद सरकार बनाने जा रही है। इसके लिए सभी को बधाई।

इसके बाद कई नेताओं ने बैठक को संबोधित किया। बाद में पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में विजेंद्र गुप्ता, प्रवेश वर्मा और सतीश उपाध्याय ने रेखा गुप्ता के नाम का प्रस्ताव रखा। इस पर सभी विधायकों ने मुहर लगा दी।

बता दें कि मुख्यमंत्री की रेस में प्रवेश वर्मा, शिखा राय, विजेंद्र गुप्ता, अजय महावर, जितेंद्र महाजन, आशीष सूद, पवन शर्मा आदि का नाम चल रहा था। लेकिन बाजी पहली बार विधानसभा पहुंचीं रेखा गुप्ता ने जीती। बैठक में मौजूद सभी नेताओं ने रेखा गुप्ता को बधाई दी। रेखा गुप्ता तीन बार पार्षद रह चुकी हैं। इस बार भी वह पार्षद रहते हुए विधानसभा चुनाव लड़ीं और आप की वंदना कुमारी को शिकस्त दे दी। बीते दो चुनाव से रेखा गुप्ता वंदना कुमारी से हार रही थीं।

दिल्ली की चौथी महिला मुख्यमंत्रीः रेखा गुप्ता दिल्ली की चौथी महिला मुख्यमंत्री होंगी। उनसे पहले आतिशी, शीला दीक्षित और सुषमा स्वराज मुख्यमंत्री रह चुकी हैं।

शपथ ग्रहण के दिन कैसा रहेगा दिल्ली का मौसम? IMD ने दिया बड़ा अपडेट

दिल्ली में नए मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान मौसम सुहावना रहेगा। सुबह से ही बादल छाए रहेंगे और हल्की वर्षा की संभावना है। अगले दो-तीन दिनों तक बादलों की आवाजाही जारी रह सकती है। वर्षा से तापमान में भी गिरावट आ सकती है। बुधवार को भी दिन में कई बार आंशिक रूप से बादल छाए रहे और देर रात विभिन्न इलाकों में बूंदाबांदी हुई।

नई दिल्ली। नए मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह (Rekha Gupta Delhi CM) के दौरान दिल्ली का मौसम भी सुहाना रहेगा। लगातार बढ़ती गर्माहट के बीच बृहस्पतिवार को सुबह से ही मौसम की करवट नजर आने लगेगी। मौसम विभाग की मानें तो बृहस्पतिवार को दिन भर बादल छाए रहेंगे।

सुबह और दोपहर के समय हल्की वर्षा होने की भी संभावना है। मौसम विभाग का कहना है कि अगले दो तीन दिन बादलों की आवाजाही लगी रह सकती है। वर्षा से तापमान में भी आंशिक कमी आने की संभावना है।

इस बीच बुधवार को भी दिन में कई बार आंशिक रूप से बादल छाए। देर रात विभिन्न इलाकों में बूंदाबांदी भी हुई। अधिकतम तापमान 28.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 4.0 डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। न्यूनतम तापमान 10.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस कम है। नमी का अधिकतम स्तर 97 से 29 प्रतिशत दर्ज किया गया।

ऐतिहासिक रामलीला मैदान नए मुख्यमंत्री व मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण समारोह के लिए तैयार हुआ। इसमें लगभग 50 हजार लोगों के बैठने का इंतजाम किया गया है।इस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित अन्य वरिष्ठ नेतागण भी उपस्थित रहेंगे।

मध्यम श्रेणी में रही दिल्ली की वायु गुणवत्ता

राजधानी में मंगलवार को प्रदूषण का स्तर मध्यम श्रेणी में दर्ज किया गया। सीपीसीबी द्वारा जारी एयर क्वालिटी बुलेटिन के अनुसार, शाम चार बजे प्रदूषण का औसत स्तर 180 रिकार्ड किया गया। एक दिन पहले मंगलवार को यह 209 था। 24 घंटे के भीतर इसमें 29 अंकों की गिरावट आई है। मौसम में होने वाले बदलाव से अगले अभी कई दिन एक्यूआइ 200 से नीचे यानी मध्यम श्रेणी में ही रह सकता है।

बुधवार को एनसीआर के विभिन्न शहरों का एक्यूआई

शहर	सीपीसीबी	आईक्यू एयर
दिल्ली	180	183
गुरुग्राम	181	167
गाजियाबाद	115	164
फरीदाबाद	131	166
ग्रेटर नोएडा	136	172
नोएडा	106	153

'आप' के प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक, विधानसभा अध्यक्ष 10 दिन में समीक्षा रिपोर्ट सौपेंगे, जिसे राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को दिया जाएगा- गोपाल राय

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष गोपाल राय ने बुधवार को प्रदेश के सभी पदाधिकारियों के साथ पार्टी मुख्यालय में बैठक की। बैठक के बाद उन्होंने बताया कि विधानसभा अध्यक्षों से दिल्ली चुनाव में सभी पदाधिकारियों की भूमिका की समीक्षा रिपोर्ट अगले 10 दिनों में सौंपने का निर्देश दिया गया है। बैठक के दौरान सभी पदाधिकारियों ने अपनी विधानसभा की मौखिक रिपोर्ट भी रखी और उनके अनुभवों और सुझावों को भी सुना गया। समीक्षा रिपोर्ट पर ₹आपइ के राष्ट्रीय संयोजक से चर्चा करेंगे। इसके बाद जिन पदाधिकारियों से अच्छा काम किया है, उनको सम्मानित किया जाएगा और जिन्होंने नकारात्मक भूमिका निभाई है, उनके साथ बात करके जरूरी कदम उठाएंगे।

इस बैठक में सभी प्रदेश उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह तोमर, जरनैल सिंह, राजेश गुप्ता और कुलदीप कुमार भी मौजूद रहे। इसके अलावा प्रदेश कार्यकारिणी, जिला अध्यक्ष, जिला सचिव, विधानसभा अध्यक्ष, विधानसभा संगठन मंत्री समेत अन्य पदाधिकारी भी बैठक में शामिल हुए।

उन्होंने बताया कि आज दिल्ली की 70 विधानसभाओं में आम आदमी पार्टी के सभी ऑब्जर्वर्स, विधानसभा अध्यक्ष, विधानसभा संगठन मंत्री और विधानसभा के पदाधिकारियों के साथ हमने बैठक की। बैठक में सभी लोगों ने अपनी-अपनी विधानसभा की एक मौखिक रिपोर्ट सामने रखी। इस चुनाव में आज सभी के अनुभव और आगे को लेकर सुझावों को सुना, जिसके बाद हमने निर्णय लिया है कि संगठन के पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू होने से पहले सभी विधानसभा क्षेत्रों में हमारे सभी घोषित पदाधिकारियों की चुनाव में जिम्मेदारी और उनकी भूमिका की एक समीक्षा रिपोर्ट अगले दस दिनों में सभी विधानसभा अध्यक्ष पार्टी प्रदेश कार्यालय को सौंपेंगे।

गोपाल राय ने कहा कि जिन लोगों ने इस चुनाव में एक सकारात्मक भूमिका अदा की है या जिन पदाधिकारियों की नकारात्मक भूमिका रही, जिन्होंने अपनी ऊर्जा पूरी दिल्ली के अंदर लगाई है, जिन्होंने इस चुनाव के दौरान दूसरी पार्टी ज्वाइन की है, संगठन हर विधानसभा, वार्ड और मंडल तक के हर कार्यकर्ता और पदाधिकारी की एक समीक्षा रिपोर्ट तैयार करेगा। यह रिपोर्ट हमें दस दिन के अंदर सौंपी जाएगी। इस रिपोर्ट के आधार पर हम आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के साथ चर्चा करेंगे। उनके दिशा-निर्देश अनुसार जिन लोगों ने सकारात्मक भूमिका अदा की है, उनको संगठन में सम्मानित किया जाएगा। जिन लोगों ने नकारात्मक भूमिका अदा की है, संगठन उनके साथ भी बैठकर बात करेगा और जो भी जरूरी कदम होंगे, वह उठाए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि यह संगठन के पुनर्गठन की ही प्रक्रिया है, जिसके पहले चरण में हर विधानसभा से मंडल स्तर तक के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की समीक्षा रिपोर्ट हम लेंगे। उस रिपोर्ट के आधार पर अरविंद केजरीवाल के साथ हम इस पर चर्चा करेंगे। इसके बाद अगले चरण में रिपोर्ट के आधार पर सकारात्मक काम करने वालों को जिम्मेदारियां दी जाएंगी।

दिल्ली में अपराधियों के हौसले इसलिए बुलंद हैं, क्योंकि उनको पता है कि कानून व्यवस्था भाजपा की

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के तिलकनगर इलाके में सात साल की एक मासूम बच्ची के साथ हुई दरिंदगी को लेकर आम आदमी पार्टी ने भाजपा और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर तीखा हमला किया। ₹आपइ के वरिष्ठ नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा के राज में दिल्ली की कानून व्यवस्था बद से बदतर हो गई है। तिलकनगर इलाके में एक मासूम बच्ची के साथ हुई रेप की घटना ने दिल्ली की बदहाल कानून व्यवस्था की पोल खोल दी है। अपराधियों में कानून व्यवस्था का कोई डर नहीं है। उन्होंने कहा कि अब चुनाव खत्म हो चुका है। अब अरविंद केजरीवाल को गाली देने से काम नहीं चलेगा, बल्कि भाजपा कुछ काम करके दिखाना होगा। हमारी मांग है कि भाजपा कुछ ऐसा करे, जिससे बलात्कारियों और अपराधियों में पुलिस का खौफ पैदा हो।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया और तिलक नगर से ₹आपइ विधायक जरनैल सिंह ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय पर संयुक्त प्रेस वार्ता की। इस दौरान मनीष सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली के तिलक नगर से एक बहुत ही दिल दहला देने वाली खबर सामने आ रही है जिसमें एक सात साल की मासूम बच्ची का बलात्कार किया गया। यह हम सबके लिए बहुत चिंता की बात है कि दिल्ली में अपराधियों और महिलाओं के साथ गलत काम करने वालों के हौसले पूरी तरह से बुलंद हैं। दिल्ली में कानून व्यवस्था का पूरी तरह से मज़ाक बना हुआ है। अपराधियों और बलात्कारियों के मन में कोई डर नहीं है। सात साल की मासूम छोटी सी बच्ची के साथ भला कोई कैसे बलात्कार कर सकता है? लेकिन दिल्ली में यह इसलिए हो पा रहा है क्योंकि यहां कानून व्यवस्था पूरी तरह से ठप है और इसे ठीक करने में भाजपा और गृह मंत्री अमित शाह की कोई दिलचस्पी नहीं है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में अब चुनाव खत्म हो गए हैं। भाजपा को चुनाव से पहले जितनी गाली-गलौज की राजनीति करनी थी, उसने कर ली। लेकिन अब तो गाली-गलौज की अपनी आदतों को बदलकर कुछ काम कर लो। दिल्ली के लोगों ने भाजपा को पहले से दिल्ली की कानून व्यवस्था दे रखी है। इन बलात्कारियों और अपराधियों के अंदर कानून का खौफ पैदा करिए। यह क्यों नहीं हो पा रहा है? क्योंकि बलात्कारियों और अपराधियों को पता है कि जिनको कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी थी और अब बाकी और चीजों की भी जिम्मेदारी दी है, यह उनकी प्राथमिकता में ही नहीं है। इनके नेता जब भी बोलते हैं, तो केवल अरविंद केजरीवाल को गाली देते हैं।

मनीष सिसोदिया ने कहा कि मैं भाजपा को कहना चाहता हूं कि अब जब दिल्ली के चुनाव खत्म हो गए हैं, तो वह इस पर ध्यान दे। पहले जब इसने कोई कानून व्यवस्था पर सवाल करता था, तो यह इधर-उधर की बातें बनाकर अरविंद केजरीवाल को गाली देते थे। अब केजरीवाल को गाली देने से काम नहीं चलेगा। चुनाव खत्म हो चुका है। वापस कानून व्यवस्था के मुद्दे पर आइए। दिल्ली के लोगों ने पहले भी भाजपा के सात सांसद चुने थे। बलात्कारियों और अपराधियों के मन में कोई खौफ पैदा करिए।

वहीं "आप" के स्थानीय विधायक जरनैल सिंह ने कहा कि तिलक नगर में सात साल की बच्ची के साथ जो दुष्कर्म हुआ उसको लेकर दिल दुखी है और रोष में भी है कि गृह मंत्रालय और दिल्ली पुलिस इस तरह मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाओं को रोकने में नाकाम है। चेन स्नैचिंग, स्कूटी चोरी, गाड़ी चोरी जैसी अपराध की घटनाएं इतनी आम हैं कि अब लोग इन्हें काउंट भी नहीं करते हैं। दिल्ली में आजकल फिरौती, रेप और मर्डर आम हो चुके हैं, लेकिन हमारी पुलिस इसे रोकने में बिल्कुल नाकाम है। दिल्ली के लोगों में बहुत रोष है कि हर दिन बद से बदतर होती इस कानून व्यवस्था का नतीजा क्या होगा?

जरनैल सिंह ने कहा कि हम दिल्ली के लोगों को यह आश्वासन देते हैं कि कानून व्यवस्था को दुरुस्त करने की इस लड़ाई में अंत तक उनके साथ खड़े रहेंगे। हम न्यायपालिका से उम्मीद करते हैं कि वह दोषियों को सख्त से सख्त और जल्दी से जल्दी सजा दे। हम लोगों से आग्रह करते हैं कि वह इलाके में शांति बनाए रखें।

दिल्ली को मिला हरियाणा के इस जिले से दूसरा सीएम, जानिए क्या है केजरीवाल से कनेक्शन

दिल्ली की नई मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता हरियाणा के भिवानी जिले से हैं। उनके पति मनीष गुप्ता व्यवसायी हैं और मूल रूप से बौंद के रहने वाले हैं। रेखा गुप्ता की बेटी का नाम हर्षिता और बेटे का नाम निकुंज है। हर्षिता आस्ट्रेलिया में पढ़ाई कर रही हैं। रेखा गुप्ता के पिता जयभगवान जींद के जुलाना के रहने वाले थे। केजरीवाल का भी भिवानी से कनेक्शन निकला है।

दिल्ली। दिल्ली की नई मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता हरियाणा के जींद जिले के जुलाना कस्बे की बेटी हैं और भिवानी जिले के बौंद कस्बे की बहू हैं। रेखा गुप्ता के पति मनीष का परिवार बौंद का रहने वाला है।

बौंद कस्बा नए बने जिले चरखी दादरी का हिस्सा है, जो पहले भिवानी जिले के अंतर्गत आता था। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के बाद रेखा गुप्ता दिल्ली की ऐसी दूसरी मुख्यमंत्री हैं, जिनका संबंध भिवानी जिले से है।

रेखा गुप्ता के पति मनीष गुप्ता व्यवसायी हैं और मूल रूप से बौंद के रहने वाले हैं। मनीष का परिवार लगभग 50 वर्ष से दिल्ली में रह रहा है। पहले वे लोग दिल्ली के खारी बावली क्षेत्र में रह रहे थे, अब करीब 30 वर्ष से शालीमार बाग के एपी ब्लॉक में रहते हैं।

रेखा और मनीष की शादी 1998 में हुई थीं। दोनों की शादी दिल्ली में ही हुई थी। बौंद कस्बे में उनका आना-जाना बहुत कम है। रेखा के पति मनीष गुप्ता के करीबी मनीष गोयल ने बताया कि उनके दादा साधुराम बौंद से व्यवसाय के लिए लगभग 50 वर्ष पहले दिल्ली आए थे।

तभी से ही पूरा परिवार दिल्ली में रह रहा है। बौंद में उनके परिवार के लोग हैं, पारिवारिक कार्यक्रमों में गांव में उनका आना-जाना है। देवसरधाम (भिवानी) पर पूजा-अर्चना के लिए सपरिवार जाते हैं। रेखा गुप्ता की बेटी का नाम हर्षिता

और बेटे का नाम निकुंज है। हर्षिता आस्ट्रेलिया में पढ़ाई कर रही हैं।

पीतमपुरा में रहते थे रेखा की माता व भाई-भाभी

रेखा गुप्ता के पिता जयभगवान जींद के जुलाना के रहने वाले थे। बैंक आफ इंडिया में मैनेजर थे। 1972-73 में दिल्ली ड्यूटी मिली तो परिवार समेत यहां शिफ्ट हो गए। रेखा गुप्ता की स्कूली पढ़ाई त्रिनगर (दिल्ली) में हुई।

इसके बाद दौलतराम कॉलेज से बीकॉम की। बाद में एलएलबी की। उनके पिता पीतमपुरा में ही रहते थे। फिलहाल रेखा की माता और भाई-भाभी अब भी पीतमपुरा के केपी-ब्लाक में रहते हैं।

शालीमार बाग ने दिया दिल्ली को दूसरी बार सीएम

शालीमार बाग विधानसभा से विधायक रेखा गुप्ता दिल्ली की नई मुख्यमंत्री होंगी। यह दूसरा अवसर है, जब शालीमार बाग विधानसभा से विधायक को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिला है। 1996 में शालीमार बाग से विधायक साहिब सिंह वर्मा दिल्ली के मुख्यमंत्री बने थे। 1993 में हुए विधानसभा चुनाव में मदललाल खुराना दिल्ली के मुख्यमंत्री चुने थे, लेकिन कुछ समय बाद मदनलाल खुराना ने त्याग-पत्र दे दिया था, इसके बाद साहिब सिंह वर्मा मुख्यमंत्री चुने गए थे।

नोएडा अथॉरिटी के ईएंडएम विभाग में बड़ा घोटाला, ठेकेदार-प्रबंधक से साठगांठ कर बिना काम किए जनता का 40 लाख डकारा

नोएडा प्राधिकरण के ईएंडएम विभाग में बड़े घोटाले का खुलासा हुआ है। वरिष्ठ प्रबंधक ठेकेदारों के साथ मिलकर भ्रष्टाचार कर रहे हैं। सदरपुर बरातघर में 40 लाख के टेंडर का भुगतान कर दिया गया लेकिन काम नहीं हुआ। महाप्रबंधक आरपी सिंह ने दूसरे ठेकेदार से काम कराया। घोटाले की जानकारी होने के बाद भी कार्रवाई नहीं की गई। सीईओ ने जांच के आदेश दिए हैं।

नोएडा। प्राधिकरण के ईएंडएम विभाग में बड़े घोटाले की बूं आ रही है। खंड में तैनात वरिष्ठ प्रबंधक-ठेकेदारों के साथ सांठगांठ कर खुलेआम भ्रष्टाचार का खेल खेल रहे है, जनता के पैसों को डकारने में जुटे है।

खंड अधिकारियों की हरकत पर अंकुश लगाने के बजाए विभागीय प्रमुख उनके कृत को छिपाने में जुटे है। जबकि उन्हें जानकारी मिल चुकी है कि खंड की ओर से पहले काम का टेंडर जारी किया जा रहा है, फिर चहेते ठेकेदारों को आवंटन कर बिना काम का भुगतान कर पैसों का बंदरबांट किया जा रहा है, फिर भी विभागीय प्रमुख की ओर से शीर्ष अधिकारियों को इस प्रकरण से अवगत नहीं कराया गया, यह आश्चर्य चकित करने वाली बात है।

बरातघर में बिजली के काम के लिए दिया गया था टेंडर

ताजा मामला सदरपुर बरातघर को लेकर प्रकाश में आया है, जहां पर विद्युत यांत्रिकी खंड तृतीय की ओर दो से तीन वर्ष पहले बरातघर में विद्युत संबंधी काम के लिए 40 लाख रुपये का टेंडर ठेकेदार कंपनी को आवंटित किया गया था, लेकिन यह काम ठेकेदार ने किया ही नहीं, लेकिन उसके कार्य का भुगतान खंड की ओर से पूरा कर दिया गया। किसी भी अधिकारी को इसकी भनक तक नहीं लगी, लेकिन 12 फरवरी को 237.39 लाख की लागत तैयार नया बारातघर का उद्घाटन जब गौतमबुद्धनगर सांसद डॉ. महेश शर्मा व नोएडा विधायक पंकज सिंह से करानी की तिथि तय हुई तो सिविल व ईएंडएम विभाग अपनी अपनी तैयारियों को परखने के लिए परियोजना स्थल पर पहुंचे। जहां पर ईएंडएम महाप्रबंधक आरपी सिंह विद्युत यांत्रिकी खंड तृतीय के कार्य को देखकर भौचक रह गए, क्योंकि यहां पर विद्युत संबंधित कार्य ही नहीं हुआ।

पड़ताल करने पर वरिष्ठ प्रबंधक रविंदर कुमार ने बताया कि सिद्धि एनर्जी को 40 लाख का टेंडर जारी हुआ था, उसने कार्य पूरा कर दिया है, लेकिन मौके पर कार्य पूरा नहीं दिखाई दे रहा है। आनन-फानन में महाप्रबंधक ने एक अन्य ठेकेदार से का आग्रह कर विद्युत संबंधित कार्य को पूरा करा समय पर उद्घाटन कराया।

जानकर भी अनजान बने वरिष्ठ प्रबंधक

प्रकरण पर जब खंड के वरिष्ठ प्रबंधक रविंदर कुमार से जानकारी ली, तो उन्होंने पहले जानकारी होने से ही इनकार कर दिया, लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि मेरी तैनाती से पहले का यह टेंडर है।

जब उनसे सवाल किया गया कि आपके संज्ञान में घोटाला आ चुका है, खंड स्तर पर ठेकेदार के खिलाफ क्या कार्रवाई की, न ठेकेदार को ब्लैक लिस्ट किया, न ही पैसों की रिकवरी का प्रयास किया, न ही धोखाधड़ी की एफआइआर दर्ज कराई। खंड अधिकारी होने के नाते प्राथमिक स्तर पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की, उल्टा ठेकेदार को संरक्षण दे रहे। इस पर उन्होंने बात करने से ही इनकार कर दिया।

चप्पे-चप्पे पर रहेगी पुलिस प्रशासन की नजर, कमिश्नर ने दिए ये खास दिशा-निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा नगर निकाय चुनाव को लेकर चुनाव आयोग व जिला प्रशासन द्वारा निर्धारित नियमों की अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए गुरुग्राम पुलिस अधिकारियों ने मंगलवार को बैठक की। पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा ने चुनाव को लेकर गुरुग्राम पुलिस के सभी पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि पुलिस द्वारा लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

गुरुग्राम। नगर निकाय चुनाव को लेकर चुनाव आयोग व जिला प्रशासन द्वारा निर्धारित नियमों की अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए गुरुग्राम पुलिस अधिकारियों ने मंगलवार को बैठक की। पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा ने चुनाव को लेकर गुरुग्राम पुलिस के सभी पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

तस्करी जैसी गतिविधियां बढ़ने की आशंका

बैठक में बताया गया कि पुलिस द्वारा लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। बताया गया कि चुनाव के दौरान अवैध मादक पदार्थ, शराब, नकदी, हथियार आदि की तस्करी जैसी गतिविधियां बढ़ने की आशंका है। इस संबंध में विभिन्न विशेष पुलिस टीमों का गठन कर अवैध शराब, नकदी, हथियार की तस्करी करने वालों तथा अवैध रूप से धन हस्तांतरित करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए।

लाइसेंसी हथियार जमा कराने का निर्देश

बताया गया कि गुरुग्राम में काफी लोगों के पास लाइसेंसी हथियार हैं। पुलिस ने लाइसेंसी हथियार धारकों को अपने हथियार संबंधित थानों में जमा करवाने के निर्देश दिए हैं। अभी तक काफी संख्या में लोगों ने हथियार जमा करवा दिए हैं। अगर किसी हथियार लाइसेंस धारक को अपना हथियार जमा करवाने में कोई आपत्ति है या हथियार जमा करवाने से छूट चाहिए तो वह अपने आवासीय थाने या पुलिस उपायुक्त मुख्यालय गुरुग्राम के कार्यालय में संपर्क कर लिखित आवेदन दे।

दोस्त को दी खौफनाक मौत, 4 फीट गहरा गड्ढा खोद दबाया शव; राज खुला तो उड़े अफसरों के होश

लोनी में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है जहां एक व्यक्ति ने अपने ही दोस्त की हत्या कर दी और फिर उसके शव को घर में ही चार फीट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दिया। आरोपी ने ऊपर से बेड रखकर सबूत छिपाने की कोशिश की। पुलिस ने फोरेंसिक टीम की मदद से शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

लोनी (गाजियाबाद)। गाजियाबाद के लोनी में बॉर्डर थाना की राजीव गार्डन कॉलोनी में सोमवार रात फाल सीलिंग का काम करने वाले कामगार ने साथी की हत्या कर शव को चार फीट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दिया। ऊपर से बेड रख दिया।

मंगलवार दोपहर को फर्श खुदा देकर आरोपी के पिता को शक हुआ तो घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने फोरेंसिक टीम की मदद से शव को गड्ढे से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

आरोपी को गिरफ्तार कर की जा रही पूछताछ

वहीं, परिजनों की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि हत्या के कारण का पता लगाया जा रहा है।

कुछ दूरी पर रहता है अंकित पांचाल

जानकारी के मुताबिक, मूलरूप से दोघाट बड़ौत के दीपक पत्नी और तीन बच्चे के साथ राजीव गार्डन कॉलोनी में रहते थे। वह फाल सीलिंग व पीवीसी पैनल का काम करते थे। दीपक के घर से कुछ दूरी पर अंकित पांचाल भी रहता है।

सोमवार दोपहर दीपक ने पत्नी कामगारों को देखने के लिए जाने की बात कहकर निकले थे। दीपक का दूसरा घर अंकित के घर के पास में है। शाम तक दीपक वापस नहीं लौटे। परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की। लेकिन उनका कोई सुराग नहीं लगा।

यह सुनकर उनका बेटा अंकित घर से भाग गया

वहीं, मंगलवार दोपहर करीब तीन बजे साथी अंकित के पिता कमरे में झाड़ू लगाने लगे। बेड के नीचे टाइल्स टूटी हुई थी। मिट्टी पड़ी थी। यह सुनकर उनका बेटा अंकित घर से भाग गया। पिता ने दूसरे बेटे को बुलाया शक होने पर लोनी बॉर्डर थाना पुलिस को सूचना दी।

सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची। कमरे को खंगालना शुरू किया। फोरेंसिक टीम को साक्ष्य एकत्र करने के लिए बुलाया और कामगार लगाकर मिट्टी की खुदाई शुरू कराई। गड्ढे से दीपक का शव पुलिस को बरामद हुआ।शरीर पर चोट के कई निशान मिले हैं। सिर पर अधिक वार थे।

पुलिस ने परिजनों को सूचना दी और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने हत्या करने और साक्ष्य मिटाने की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर टीमें गठित कर आरोपी को देर रात दबोच लिया।

दीपक ने सिखाया था आरोपी को काम

सूत्रों का कहना है कि करीब चार साल से अंकित और दीपक एक-दूसरे को जानते थे। आसपास में एक-दूसरे के घर पर आना जाना भी था। दीपक ने अंकित को पीवीसी पैनल और फाल सीलिंग का काम भी सिखाया था। इसके बाद दोनों साथ काम करने लगे थे। फिर अंकित ने दीपक के कुछ ग्राहक भी तोड़ लिए थे।

माना जा रहा है कि इस बात को लेकर दोनों विवाद भी हुआ था। फिर कुछ दीन बोल चाल नहीं थी। फिर से दोनों में बोलचाल हुई। साथ काम करते लगे। हालांकि अभी हत्या के कारण का पुलिस पता लगा रही है।

दीपक की हत्या कर अंकित ने शव को घर में गड्ढा खोदकर दबा दिया था। शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों की शिकायत पर हत्या की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। हत्या के कारण के बारे में पता किया जा रहा है। - अजय कुमार सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त

मांग में सिंदूर लगवाकर रहने लगी साथ, फिर रात में किया ऐसा कांड; पूरी कहानी सुन पुलिस अफसर भी रह गए दंग

नोएडा पुलिस ने झूठी शादी कर घर से सोने व चांदी के जेवरात लेकर फरार हुई लुटेरी दुल्हन समेत कई आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने पुलिस की जांच में पूरा सच उगल दिया है। बताया गया कि ये लुटेरी दुल्हन झूठ शादी करके लोगों को अपने जाल में फंसाती थी। आगे विस्तार से जानिए आखिर कैसे बनाती थी पूरा प्लान।

जेवर (नोएडा)। नोएडा में जेवर कोतवाली क्षेत्र के एयरपोर्ट विस्थापन टाउनशिप के रोही निवासी पूर्व सैनिक के साथ झूठी शादी कर जेवरात और नकदी लेकर फरार हुई लुटेरी दुल्हन को पुलिस ने छह माह बाद गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपी दुल्हन और उसकी मां के अलावा पूरी घटना में शामिल दुल्हन की मां के प्रेमी को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस घटना में शामिल दुल्हन की बहन को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

2010 में माया देवी का निधन हुआ

जेवर के रोही निवासी सेवानिवृत्त सैन्यकर्मी 60 वर्षीय राजकुमार की पहली शादी मथुरा के खयरा निवासी माया के साथ हुई थी। माया से राजकुमार को चार बेटियां हुईं, सभी की शादी कर दी। वर्ष 2010 में माया देवी का निधन हो गया।

चांचली गांव निवासी सुभाष से हुई मुलाकात

एयरपोर्ट में गांव आने के बाद 2021 से राजकुमार गांव विस्थापन होने के बाद जेवर के मोहवलीपुर गांव में रहने लगे। जहां उनकी मुलाकात चांचली गांव निवासी सुभाष से हुई। सुभाष ने राजकुमार को अकेला देख शादी करने का प्रस्ताव दिया और कुछ दिन बाद बुलंदशहर के धराऊ व वर्तमान में खैर के नगला जयसिंह निवासी महिला प्रिया (33) से शादी के लिए परिचय कराया।

वहीं, गत 12 जुलाई को प्रिया, अपनी मां सती, बहन हेमा व चाचा कान्हा के साथ टाउनशिप पहुंचे। चारों ने राजकुमार से प्रिया की शादी कराने के लिए सहमति देते हुए शादी में सामान के लिए 30 हजार रुपये राजकुमार से ले लिए। बाद में भी लगभग 80 हजार रुपये प्रिया ने फोन कर समान के नाम पर लिए।

बाद में 10 लाख रुपये देने की बात कही

पुलिस ने बताया कि प्रिया ने सात अगस्त को दिखावे के लिए मांग में सिंदूर लगवाकर शादी कर ली और फोटो खिंचवा ली। इसके बाद वह अपने परिजनों के साथ राजकुमार के घर में ही रहने लगी। 17 अगस्त को प्रिया व उसके परिजन राजकुमार के घर से सोने चांदी के जेवरात, नगदी व अन्य कीमती सामान लेकर फरार हो गए। बाद में 10 लाख रुपये देने के बाद ही राजकुमार के घर आने की बात प्रिया ने फोन पर कहीं।

यह भी पढ़ें- लुटेरी दुल्हन नहीं तो ये कौन? मासूम चेहरा और हाथों में 2-2 चूड़ियां; काली जैकेट वाली महिला की जानिए पूरी सच्चाई

राजकुमार ने बताया कि उन्होंने जब आरोपितों की पड़ताल की तो पता चला कि सभी आरोपित झूठी शादी कराने के बाद घर से सामान लेकर फरार हो जाते हैं। पता चला कि प्रिया ने इसी तरह से तीन से चार शादियां की हैं।

वहीं, मंगलवार को पुलिस टीम ने प्रिया, उसकी मां सती व कथित चाचा व सती के प्रेमी कान्हा को यमुना एक्सप्रेसवे के खुर्जा अंडरपास से गिरफ्तार किया है। कोतवाली निरीक्षक संजय सिंह ने बताया कि आरोपितों ने पहले राजकुमार को टारगेट किया था, क्योंकि उन्हें पता था कि उसे एयरपोर्ट का मुआवजा मिला है।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) नें विनिवेश सलाहकारों (एआई) व शोध विश्लेषकों (आईए) के लिए अनिवार्य नियम बनाए

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के हर देश को सुद्धड़ व अनुकूल विकसित बनाने के लिए वित्त की आवश्यकता होती है, जिसमें एक छोटी सी सुई से लेकर हवाई जहाज के तुल्य तक कार्य हो सकते हैं, परंतु वित्त से भी आवश्यक इसका प्रबंधन है, अगर प्रबंधन, mसुशासन नहीं रहा हैं तो विकास कार्य पटरी से उत्तर जाएगा व कुछ सीमित धनाढ्यों के हाथों में चला जाएगा, इसलिए वित्त प्रबंधन व उसकी निगरानी करना अति आवश्यकहै।विकसित भारत में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) का अहम्-रोल है जिससे मैं अच्छे से जानता हूं,क्योंकि मैंने एलएलबी एलएलएम के साथ सीए (एटीसी) भी किया है इसलिए सेबी कानून प्रक्रिया व विनियमन को भली भांति समझ सकता हूं। सामान्य सेबी भारत में प्रतिभूति बाजार के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार सबसे महत्वपूर्ण विनियामक निकायों में से एक है। सेबी की स्थापना प्रतिभूति बाजार में निवेश करने वाले निवेशकों के हितों को संरक्षित करने और प्रतिभूति बाजारके विकास और वृद्धि को प्रोत्साहित करने के इरादे से की गई थी ।साथ ही, बोर्ड को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी बाजार भागीदार निर्धारित मानदंडों का अनुपालनकरें।सेबी को उन बाजार प्रति भागियों पर जुर्माना लगाने का अधिकार दिया गया है जो नियमों और विनियमों का अनुपालन नहीं कर रहे हैं।भारत में प्रतिभूति और वित्त का नियामक बोर्ड है। इसकी स्थापना 12 अप्रैल 1988 में हुई तथा सेबी अधिनियम 1992 के तहत वैधानिक मान्यता 30 जनवरी 1992 को प्राप्त हुई।सेबी का मुख्यालय मुंबई में बांद्रा कुर्ला परिसर के व्यावसायिक जिले में हैं और क्रमशः नई दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और अहमदाबाद में उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी व पश्चिमी क्षेत्रीय कार्यालय हैं।आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि दिनांक 17 फरवरी 2025 को सेबी ने,मौजूदा ग्राहकों के लिए अब निवेश सलाहकार और रिसर्च एनालिस्ट अपने मौजूदा ग्राहकों को एमआईटीसी की जानकारी सिर्फ ईमेल या किसी अन्य सुरक्षित डिजिटल माध्यम से भेज सकते हैं। एमआईटीसी की जानकारी 30 जून 2025 तक सभी मौजूदा ग्राहकों को भेजनी होगी। अब फिजिकल या डिजिटल सिग्नेचर की जरूरत नहीं होगी। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,शेयर मार्केट में इन्वेस्ट करने वाले निवेशकों के हितों को सुरक्षित करने वह शेयर मार्केट के विकास वृद्धि को प्रोत्साहित करने में सेबी का हम योगदान है।

साथियों बात अगर हम सेबी द्वारा नियमों में बदलाव की करें तो, निवेश सलाहकारों (आईए) और शोध विश्लेषकों (आरए) के लिए यह अनिवार्य बना दिया है कि वे मोस्ट इम्पोर्टेंट टर्म्स ऐंड कंडीशंस' (एमआईटीसी) के तौर पर जाने जाने वाले नियम और शर्तों (टीऐंडसी) का खुलासा करेंगे और उन पर ग्राहकों की सहमति लेंगे। ये अहम नियम और शर्तें दो पृष्ठ का दस्तावेज है, जिसे सेबी ने आईए और आरए के संबंधित उद्योग मानक संगठनों के सहयोग से मानक रूप दिया है। निवेश सलाहकारों को 30 जून तक इन नियमों और शर्तों के बारे में क्लाइंटों को बताना होगा।नए करारों में नई शर्तों को शामिल करना जरूरी है। इसके अलावा, एमआईटीसी ने शिकायतों के मामले में ग्राहकों के लिए स्पष्ट कदम सुझाए हैं। इनमें सेबी के स्कोर्स पोर्टल या ऑनलाइन विवाद समाधान (ओडीआर) वेबसाइट पर शिकायत को आगे बढ़ाना (यदि समाधान असंतोषजनक रहता है) शामिल है। दिशा-निर्देशों में यह भी बताया गया है कि निवेश सलाहकार सिर्फ परामर्श सेवाओं के लिए भुगतान स्वीकार कर सकते हैं। उन पर ग्राहकों की ओर से अपने खातों में धन या प्रतिभूतियां प्राप्त करने पर प्रतिबंध लगाया गया है। निवेश सलाहकारों के लिए बदले नियम

वे मोस्ट इम्पोर्टेंट टर्म्स ऐंड कंडीशंस (एमआईटीसी) के तौर पर जाने जाने वाले नियम और शर्तों (टीऐंडसी) का खुलासा करेंगे और उन पर ग्राहकों की सहमति लेंगे।

साथियों बात अगर हम सेबी द्वारा नियमों में बदलाव करने के मकसद की करें तो,नियम बनाने,सार्वजनिक परामर्श अनिवार्य करने और मानदंडों को संशोधित करने के लिए संबंधित पक्षों की भागीदारी के लिए एक नई प्रक्रिया का निर्धारण किया है। सेबी ने गजट में प्रकाशित अधिसूचना में सेबी (विनियमों को बनाने, संशोधन और समीक्षा करने की प्रक्रिया) विनियमन, 2025 को अधिसूचित किया है।

सेबी नियम बनाने के लिए, अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर नीति में सुझाए गए परिवर्तनों वाला प्रस्ताव प्रकाशित करेगा। इसके अलावा प्रस्तावित विनियमों के उद्देश्य और उसका विवरण, सार्वजनिक टिप्पणियां प्राप्त करने का तरीका, प्रक्रिया और समयसीमा की जानकारी दी जाएगी।सेबी ने कहा,सार्वजनिक टिप्पणियां प्राप्त करने के लिए आमतौर पर कम से कम 21 दिन दिये जाएंगे।सार्वजनिक टिप्पणियां प्राप्त होने पर, टिप्पणियों को अस्वीकार करने का औचित्य, यदि कोई हो, सेबी की आधिकारिक वेबसाइट पर दिया जाएगा। इसके बाद प्रस्तावित नियमों और संबंधित एजेंडा पत्र पर सेबी विचार करेगा। यदि एजेंडा पत्र सार्वजनिक परामर्श के बाद तैयार किया गया है, तो इसमें प्राप्त टिप्पणियों का एक व्यवस्थित संकलन या ऐसी टिप्पणियों का सारांश और उसपर सेबी की टिप्पणियां शामिल होंगी।सेबी ने कहा,जहां बोर्ड (सेबी) की राय होगी कि निवेशकों के हित और प्रतिभूति बाजार के विनियमन और विकास के लिए यह उपयुक्त है कि सार्वजनिक परामर्श प्रक्रिया का पालन प्रस्तावित विनियमन के उद्देश्य को विफल कर देगा, चेयरपर्सन सार्वजनिक परामर्श की प्रक्रिया से दूर हो सकता है या सार्वजनिक टिप्पणियां प्राप्त करने की समय अवधि कम कर सकता है।

साथियों बात अगर हम सेबी निवेश सलाहकारों व रिसर्च एनालिसिस्ट नियमों में बदलाव को गहराई से समझने की करें तो, भारतीय शेयर बाजार में पैर जमाना वित्त की दुनिया में नए लोगों के लिए एक समस्या हो सकती है।क्यों अधिकतर लोग शेयर बाजार की सलाह के लिए इन सलाहकारों की ओर रुख करते हैं और हम अपने धन- संबंधी लक्ष्यों तक पहुंचने में मदद के लिए सर्वोत्तम सलाहकार कैसे पा सकते हैं।सर्कुलर के मुताबिक निवेश सलाहकारों और रिसर्च एनालिस्ट्स को सीधे राहत दी गई है।अब वे अपने मौजूदा ग्राहकों को उनकी जानकारी ईमेल या किसी अन्य डिजिटल माध्यम से भेज सकते हैं, जिसे रिकॉर्ड के रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है। पहले ग्राहकों से एमआईटीसी को फिजिकल या डिजिटल सिग्नेचर के जरिए कन्फर्म कराना अनिवार्य था, जिससे कई समस्याएं हो रही थीं, अब इस नियम में राहत देते हुए ईमेल या अन्य डिजिटल माध्यमों से एमआईटीसी भेजने की अनुमति दी है।नए ग्राहकों के लिए एमआईटीसी को टाइम एंड कंडीशंस में शामिल किया जाएगापूरी शर्तों और नियमों को ग्राहक को डिस्क्लोज

करना होगा और उनसे लिखित सहमति लेनी होगी।निवेश सलाहकारों और रिसर्च एनालिस्ट्स के लिए शुल्क पर नया नियम- (1) सेबी ने निवेश सलाहकारों और रिसर्च एनालिस्ट्स के लिए यह नियम तय किया है:-आरए (रिसर्च एनालिस्ट) एडवांस फीस सिर्फ 3 महीने तक ले सकते हैं।इंवेस्टमेंट एडवाइजर एडवांस फीस 6 महीने तक ले सकते हैं हालांकि सेबी ने इस सीमा को 1 साल तक बढ़ाने के लिए एक परामर्श पत्र जारी किया है,क्योंकि आईएस और आरए ने इस नियम का विरोध किया है।सेबी के नए नियमों का विश्लेषण-निवेश सलाहकारों और रिसर्च एनालिस्ट्स के लिए राहत है, परंतु इन विशेषज्ञों को व्यापार और निवेश से संबंधित सभी मामलों में विशेषज्ञ कहलाने के लिए लंबे अध्ययन और शोध से गुजरना पड़ता है।वे अन्य ब्रोकर या एजेंट से अलग होते हैं क्योंकि वे ग्राहक के सर्वोत्तम हित में कार्य करते हैं। सेबी-पंजीकृत सलाहकार आपको ऐसी सलाह देता है जो आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों तक पहुँचने में मदद करती है।सेवाएँ प्रदान करने के अलावा, ये विशेषज्ञ हमको बता सकते हैं कि शेयर बाज़ार के बारे में कैसे अध्ययन करें या सीखें,क्योंकि वे सूचना और ज्ञान का एक समृद्ध स्रोत हैं। आप शेयर बाज़ार, शेयर और शेयर बाज़ार के सुझावों के बारे में जानकारी देने के लिए उन पर भरोसा कर सकते हैं।सर्वश्रेष्ठ सेबी पंजीकृत निवेश सलाहकार चुनना क्यों महत्वपूर्ण है?क्या करना है और अपनी मेहनत की कमाई को कैसे बढ़ाना है, इसकी योजना बनाना आसान नहीं है! साथ ही,हमको सेबी निवेश सलाहकार से विशेषज्ञ की दूसरी राय भी लेनी होगी।यह सबसे अच्छा सलाहकार चुनना एक ऐसा काम है जिसे आपको हल्के में नहीं लेना चाहिए! सही विकल्प चुनने से आपको बेहतर निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। यह आपको ट्रेडिंग या निवेश के लिए सेबी-पंजीकृत स्टॉक सलाहकार की विशेषज्ञता पर भरोसा करने की भी अनुमति देता है।

साथियों बात अगर हम भारत में उपयुक्त सेबी-पंजीकृत निवेश सलाहकार चुनने के लिए सुझावकी करें तो जिसने पहले कभी ऐसा नहीं किया है, उसे सेबी -प्रमाणित निवेश सलाहकार खोजने में कठिनाई हो सकती है,इसलिए सबसे अच्छा सलाहकार खोजने में मदद करने के लिए पूरी प्रक्रिया हैं (1) सलाहकार खोजने के लिए कई स्रोतों का उपयोग करें,जब कोई व्यक्ति विश्वसनीय वित्तीय सलाह देने वाले साथी की तलाश में होता है तो वह इंटरनेट का उपयोग करता है।लेकिन यह आपके लिए पार्टनर की तलाश शुरू करने का एकमात्र स्थान नहीं है। आप सोशल मीडिया पर सुन सकते हैं या मुंह से सुनीबातों से संकेत ले सकते हैं! इन तरीकों से आपको नामों की एक सूची मिलेगी, और उनमें से सबसे अच्छा सेबी-पंजीकृत निवेश सलाहकार होगा। (2) उनकी सेबी-स्थिति स्थापत करेंत करेंकिसी एक को चुनने से पहले, जाँच लें कि क्या वे सेबी आरए के रूप में पंजीकृत हैं। ऐसा करने के लिए,सेबी की वेबसाइट खोलें और स्वीकृत सलाहकारों की सूची में उनके क्रेडेंशियल देखें। यदि वे दिखाई देते हैं, तो आप उन पर विचार कर सकते हैं, लेकिन यदि नहीं, तो उन्हें अपनी सूची से हटा दें!(3) उनके अनुभव और ज्ञान की जाँच करेंहमें यकीन है कि प्रत्येक सेबी पंजीकृत निवेश सलाहकार के पास आपकी मदद करने की विशेषज्ञता है, लेकिन फिर भी आपको जांच करनी होगी !उनसे उनके मजबूत क्षेत्रों के बारे में पूछें और पूछें कि क्या वे आपको वेल्थ मैनेजमेंट में मदद कर सकते हैं, जिसकी आजकल बहुत मांग है। बातचीत से आपको पता चलेगा कि उन्हें शेयर बाजार और निवेश फंड के बारे में कितना पता है।उनसे कुछ दस्तावेज या प्रमाण पत्र मांगने में कोई शर्म नहीं है।(4)उनकी सेवाओं पर नज़र डालेंआपको सेवाओं की पूरी श्रृंखला प्राप्त करने के लिए भारत में सबसे अच्छे सेबी-पंजीकृत निवेश सलाहकार को खोजना होगा। लेकिन यह ठीक है क्योंकि आपको उन कुछ विशिष्ट सेवाओं के बारे में पता है जिनकी आपको आवश्यकता है।पूछें कि क्या वे दीर्घकालिक वित्तीय योजना, सेवानिवृत्ति योजना या धन प्रबंधन सेवाएं प्रदान करेंगे ।लगभग हर सेबी-पंजीकृत सलाहकार तकनीकी विश्लेषण में अत्यधिक कुशल है । यह कौशल उन्हें डेटा द्वारा समर्थित शेयर विकल्पों का चयन करने में मदद करता है। उनकी निष्पक्ष राय ही बाजार सहभागियों को उनके साथ भागीदार बनाती है।(5) उनके बारे में समीक्षाएँ और प्रशंसापत्र पढ़ें वेबसाइट और प्लेटफ़ॉर्म भारत में सेबी-पंजीकृत हर वित्तीय सलाहकार के लिए समीक्षा और रेटिंग दे सकते हैं। रेडिट और क्वोरा जैसे प्लेटफ़ॉर्म उनकी क्षमताओं और लोगों की उनके बारे में राय के बारे में जानकारी देंगे।पिछले ग्राहकों द्वारा की गई इन समीक्षाओं को पढ़ने से आपको सेवा की गुणवत्ता का आकलन करने और यह जानने में मदद मिलेगी कि क्या वे आपके पैसे के लिए मूल्य प्रदान करेंगे। इसलिए, इससे पहले कि हम सेबी -पंजीकृत निवेश विशेषज्ञ का चयन करने के बारे में सुनिश्चित हों, सुनें कि इंटरनेट उनके बारे में क्या कहता है! (6) उनकी लागत और शुल्क को समझेंपारदर्शिता प्रत्येक सेबी प्रमाणित वित्तीय सलाहकार की मुख्य विशेषता है, और यह बात उनकी शुल्क संरचना की जांच करने पर सामने आएगी।वे आपको जो संख्या बताते हैं, उसमें सभी लागतें शामिल होती हैं, इसलिए बाद में इसमें कुछ और भी जोड़ देना चाहिए! आप यह समझने के लिए विस्तृत जानकारी मांग सकते हैं कि उनकी फीस कमीशन-आधारित है या अन्य कारकों पर आधारित है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) नें विनिवेश सलाहकारों (एआई) व शोध विश्लेषकों (आईए) के लिए अनिवार्य नियम बनाए।सेबी (विनियमों को बनाने संशोधित और समीक्षा करने की प्रक्रिया) विनियमन प्रक्रिया 2025 को अधिसूचित किया।शेयर मार्केट में इन्वेस्ट करने वाले निवेशकों के हितों को सुरक्षित करने व शेयर मार्केट के विकास वृद्धि को प्रोत्साहित करने में सेबी का अहम योगदान।

होण्डा ने नए फीचर्स, ग्राफिक्स OBD2B नॉर्म्स के साथ लॉन्च की 2025 Hornet बाइक, कीमत 1.56 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

2025 Honda Hornet Launched बाजार में होंडा की ओर से कई सेगमेंट में स्कूटर और बाइक्स की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से 19 फरवरी 2025 को मौजूदा बाइक Honda Hornet के 2.0 वर्जन को लॉन्च कर दिया है। इसमें किस तरह के बदलाव किए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। कैसे फीचर्स ऑफर किए गए हैं। क्या कीमत तय की गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी दो पहिया निर्माता Honda की ओर से भारत में कई बेहतरीन फीचर्स, तकनीक के साथ बाइक्स और स्कूटर की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से 19 February 2025 को 2025 Honda Hornet 2.0 बाइक को लॉन्च किया गया है। इसमें क्या बदलाव किए गए हैं। कितना दमदार इंजन, फीचर्स दिया गया है। किस कीमत पर बाइक को लाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Honda Hornet 2.0 बाइक

होंडा की ओर से हॉर्नेट बाइक को अपडेट के साथ 2.0 वर्जन में लॉन्च कर दिया गया है। बाइक में मौजूदा बाइक के मुकाबले में कई बदलाव किए गए हैं, जिससे यह अब पहले से ज्यादा बेहतर हो गई है।

क्या हुए बदलाव

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नई बाइक में इंजन को अपडेट किया गया है और अब यह OBD2B उत्सर्जन मानकों के मुताबिक हो गया है। इसके साथ ही इसमें कई फीचर्स को भी ऑफर किया गया है।

कितना दमदार इंजन

होंडा हॉर्नेट 2.0 बाइक में 184.40 सीसी की क्षमता का सिंगल सिलेंडर इंजन दिया गया है। जिससे बाइक को 12.50 किलोवाट की पावर और 15.7 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 5स्पीड गियरबॉक्स को दिया गया है। बाइक में असिस्ट और स्लिपर क्लच को भी दिया गया है जिससे गियर शिफ्टिंग पहले से बेहतर हो गई है।

कैसे हैं फीचर्स

बाइक में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। इसमें एलईडी लाइट्स, 4.2 इंच की टीएफटी स्क्रीन दी गई है। जिसके साथ ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, कॉल अलर्ट, एसएमएस नोटिफिकेशन, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट, ड्यूल चैनल एबीएस, होंडा सेलेक्टेबल टॉर्क कंट्रोल जैसे फीचर्स को दिया जा रहा है। साथ ही बाइक में नए ग्राफिक्स से नयापन देने की कोशिश की गई है।

कितनी है कीमत

Honda Hornet 2.0 बाइक को चार रंगों के विकल्प Pearl Igneous Black, Radiant Red Metallic, Athletic Blue Metallic और Mat Axis Gray Metallic में ऑफर किया गया है। इसे 1.57 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। होंडा की ओर से इसे Honda Red Wing और Big Wing डीलरशिप के जरिए खरीदा जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

भारतीय बाजार में Honda Hornet 2.0 को 200 सीसी सेगमेंट में लाया गया है। इस सेगमेंट में बाइक का सीधा मुकाबला TVS Apache RTR 200, Baja Pulsar 200 जैसी बाइक्स के साथ होगा।

एमजी विंडसर ने हासिल की नई उपलब्धि, EV सेगमेंट में लगातार बढ़ रही है गाड़ी की मांग, जानें कैसे हैं फीचर्स और कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से 2024 में लॉन्च की गई MG Windsor EV ने किस तरह की उपलब्धि को हासिल किया है। किस तरह के फीचर्स और रेंज के साथ इसे लाया जाता है। किस कीमत पर CUV को बुक करवाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक सेगमेंट की कारों की मांग बढ़ रही है। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर से भी नए नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। ब्रिटिश निर्माता MG मोटर्स की ओर से भी EV सेगमेंट में MG Windsor EV को लाया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस CUV ने फरवरी में किस तरह की उपलब्धि को हासिल किया गया है। कितनी बुकिंग इस गाड़ी के लिए मिल रही हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor EV बनी भारतीयों की पसंद

एमजी मोटर्स की ओर से विंडसर ईवी को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। लॉन्च के बाद से ही इस एसयूवी को काफी पसंद किया जा रहा है। जिस कारण इस इलेक्ट्रिक CUV ने कुछ महीनों में ही नई उपलब्धि को हासिल कर लिया है।

प्रोडक्शन में हासिल की उपलब्धि

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक MG Windsor EV ने 15 हजार यूनिट्स के प्रोडक्शन की उपलब्धि को हासिल कर लिया है। खास बात यह है कि लॉन्च के बाद कुछ महीनों में ही इस उपलब्धि को हासिल किया गया है।

Windsor EV के लिए सबसे ज्यादा ऑर्डर

एमजी मोटर्स की ओर से जानकारी दी गई है कि MG Windsor EV को काफी ज्यादा पसंद किया जा रहा है। इस गाड़ी के लिए रोजाना 200 बुकिंग्स मिल रही हैं। जिससे कंपनी के पास इसके लिए सबसे ज्यादा ऑर्डर हो गए हैं।

Growing Demand for Electric Cars in India

जानकारी के मुताबिक विंडसर ईवी के लिए लगातार मांग बढ़ रही है। आंकड़ों के मुताबिक अक्टूबर 2024 से लेकर जनवरी 2025 के बीच चार महीनों के दौरान यह इलेक्ट्रिक सेगमेंट में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली

गाड़ी रही है। कंपनी ने अक्टूबर 2024 के दौरान 3116 यूनिट्स, नवंबर 2024 में 3144 यूनिट्स, दिसंबर 2024 में 3785 यूनिट्स और जनवरी 2025 में 3450 यूनिट्स की बिक्री की है।

अन्य EV की कैसी है मांग

आंकड़ों के मुताबिक Tata Punch EV की अक्टूबर 2024 में 915 यूनिट्स, नवंबर 2024 में 926 यूनिट्स, दिसंबर 2024 में 1653 यूनिट्स, जनवरी 2025 में 1189 यूनिट्स की बिक्री (Tata Punch EV performance) हुई है। वहीं Tata Nexon EV की अक्टूबर 2024 में 1593 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। नवंबर 2024 में 1899 यूनिट्स, दिसंबर 2024 में 1603 यूनिट्स और जनवरी 2025 में इसे 1289 लोगों ने खरीदा है।

MG Windsor Features & Specifications

एमजी विंडसर ईवी में कंपनी कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर करती है। इसमें एलईडी प्रोजेक्टर हैडलैंप, एलईडी डीआरएल, 17 और 18 इंच के टायर, फ्लश डोर हैंडल, ग्लास एंटीना, क्रोम फिनिश विंडो बेल्टलाइन, नाइट ब्लैक इंटीरियर के साथ गोल्डन टच हाईलाइट्स, लैदर पैक के साथ डैशबोर्ड, ड्राइवर आर्मरेस्ट, डोर ट्रिम, स्टेयरिंग व्हील दिया गया है। एंबिएंट लाइट्स, रियर एसी वेंट्स, पीएम 2.5 फिल्टर, 10.1 इंच टच डिस्प्ले, सात और 8.8 इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 15.6 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, यूएसबी चार्जर पोर्ट, वायरलैस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, 6 स्पीकर और 9 स्पीकर इनफिनिटी ऑडियो सिस्टम का विकल्प, पैनोरमिक सनरूफ, एयरो लाउंज सीट्स, वेंटिलेटिड सीट्स, 6वे पावर एडजस्टेबल ड्राइविंग सीट, स्मार्ट एंट्री सिस्टम, स्मार्ट स्टार्ट सिस्टम, क्रूज कंट्रोल, ऑटोमैटिक टेंपरेचर कंट्रोल, वायरलैस स्मार्टफोन चार्जर जैसे फीचर्स मिलते हैं।

MG Windsor Battery and Range

MG Windsor EV में कंपनी की ओर से 38 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। जिसे 0-100 फीसदी चार्ज करने में 13.8 घंटे का समय लगता है। फास्ट चार्जर के जरिए इसे 55 मिनट में 0-80 फीसदी तक चार्ज किया जा सकता है। विंडसर ईवी में परमानेंट सिंकोरियस मोटर दी गई है जिससे 136 पीएस की पावर और 200 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। जिससे इसे 331 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

MG Windsor EV Price

MG Windsor EV को भारतीय बाजार में दो तरह से ऑफर किया जा रहा है। कंपनी की ओर से BaaS के साथ इस गाड़ी को 9.99 लाख रुपये में ऑफर किया जा रहा है। इसके अलावा अगर बैटरी के साथ गाड़ी को खरीदा जाता है तो इसकी एक्स शोरूम कीमत 14 लाख से लेकर 16 लाख रुपये के बीच है।

किनसे है मुकाबला

एमजी की ओर से विंडसर ईवी को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लाया जाता है। कीमत, रेंज, फीचर्स और सेगमेंट में इसे Tata Nexon, Curvv EV, Hyundai Creta Electric जैसी EV से चुनौती मिलती है।

इस साल लॉन्च होंगी तीन MPVs, ICE के साथ EV सेगमेंट में भी आएगी एक गाड़ी, जानें कब तक आएंगी भारत

भारत में एसयूवी के साथ ही MPV सेगमेंट के वाहनों को भी काफी पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में भी कई कंपनियों की ओर से वाहनों को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी किसी MPV को इस साल खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस कंपनी की ओर से किस एमपीवी को लाने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक वाहन निर्माताओं की ओर से उत्पादों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। लेकिन MPV सेगमेंट को भी काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में Maruti से लेकर Toyota तक अपनी कारों को ऑफर करती हैं। इस साल MPV सेगमेंट में कौन सी कंपनी की ओर से किस गाड़ी को लाने की तैयारी (Upcoming MPVs in India) की जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होंगी तीन MPVs

रिपोर्ट्स के मुताबिक भारतीय बाजार में एसयूवी के अलावा इस साल कई नई MPVs को लाने की तैयारी की जा रही है। जिनमें से तीन ऐसी एमपीवी शामिल हैं जिनको काफी पसंद किया जाता है। खास बात यह है कि इनमें से एक एमपीवी को बजट, दूसरी को लग्जरी और तीसरी एमपीवी को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लाया जाएगा।

MG M9 होगी लॉन्च

ब्रिटिश वाहन निर्माता MG की ओर से भी इलेक्ट्रिक एमपीवी के तौर पर M9 को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से इस एमपीवी को पहली बार जनवरी 2025 में Bhaat Mobility के तहत आयोजित किए गए Auto Expo 2025 में शोकेस किया गया था। सिंगल चार्ज में इसे 500 किलोमीटर तक की रेंज मिल सकती है। जानकारी के मुताबिक एमपीवी को अगले दो से तीन महीने के दौरान औपचारिक तौर पर भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

Kia लाएगी Carens Facelift

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Kia की ओर से बजट एमपीवी के तौर पर कैरेंस को ऑफर किया जाता है। रिपोर्ट्स की मानें तो कंपनी इस एसयूवी के फेसलिफ्ट को लाने की तैयारी कर रही है। मौजूदा एमपीवी के मुकाबले फेसलिफ्ट में कॉस्मैटिक बदलावों को किया जा सकता है। इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद काफी कम है। Kia Carens Facelift को साल के मध्य तक पेश किया जा सकता है।

Toyota Vellfire Facelift

जापानी वाहन निर्माता टोयोटा भी लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में वेलफायर को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती है। जानकारी के मुताबिक इस एमपीवी के भी फेसलिफ्ट को भारतीय बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है। मिड लाइफ अपडेट के तौर पर इसमें कई कॉस्मैटिक बदलाव किए जा सकते हैं। साथ ही कई नए फीचर्स को भी जोड़ा जा सकता है। उम्मीद की जा रही है कि इसे साल के आखिर या 2026 की शुरुआत में पेश किया जा सकता है।

टोयोटा की SUV लैंड क्रूजर 300 के लिए बुकिंग हुई शुरू, दमदार इंजन के साथ कैसे हैं फीचर्स और कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Toyota की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर SUV सेगमेंट तक के वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी ने 19 February 2025 को Land Cruiser 300 के लिए बुकिंग शुरू कर दी हैं। इसमें कितना दमदार इंजन मिलता है। किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापान की प्रमुख वाहन निर्माता Toyota की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। भारत में Land Cruiser जैसी दमदार एसयूवी को अगर खरीदने का मन बना रहे हैं तो टोयोटा ने इसके लिए बुकिंग को शुरू कर दिया है। कितनी कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। किस तरह के फीचर्स और इंजन को इसमें दिया जा रहा है। कब से डिलीवरी को शुरू किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Toyota Land Cruiser 300 के लिए शुरू हुई बुकिंग

टोयोटा की ओर से ऑफर की जाने वाली लैंड क्रूजर 300 एसयूवी के लिए बुकिंग को शुरू (Toyota Land Cruiser 300 booking) कर दिया गया है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 19 फरवरी से इसके लिए बुकिंग शुरू कर दी गई है।

Toyota Land Cruiser 300 Features

टोयोटा अपनी Land Cruiser 300 एसयूवी में एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लैंप, सीक्वेंशनल टर्न इंडीकेटर्स, फ्रंट और रियर फॉग लैंप, हीटेड, एंटी ग्लेयर रियर व्यू आउटसाइड मिरर, इलूमिनेटिड साइड स्टेप, सनरूफ, फ्रंट और रियर सीट वेंटिलेशन और हीटिंग, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, पांच ड्राइविंग मोड्स, स्मार्ट एंट्री सिस्टम, हाइड्रॉलिक पावर स्टेयरिंग, 8वे पावर एडजस्टेबल फ्रंट सीट्स, हेड-अप डिस्प्ले, वायरलेस चार्जर, फोर जोन क्लाइमेट कंट्रोल, 31.24 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, 14 स्पीकर ऑडियो सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, रियर सीट एंटरटेनमेंट, एडेप्टिव वेरिएबल सस्पेंशन, क्रॉल कंट्रोल, डाउनहिल असिस्ट कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, मल्टी टेरेन सेलेक्ट, 4कैमरा पैनोरमिक व्यू, एक्टिव ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है सुरक्षित

कंपनी की ओर से इस एसयूवी में टोयोटा सेफ्टी सेंस, पीसीएस, एलडीए, डीआरसीसी, एलटीए, एएचएस, इमोबिलाइजर, 10 एयरबैग, 360 डिग्री व्यू कैमरा, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, थ्री पाइंट सीटबेल्ट, 2 चाइल्ड रेस्ट्रेनेंट सिस्टम, पार्किंग सेंसर, एंटी स्किड ब्रेकिंग सिस्टम, क्रॉल कंट्रोल और टर्न असिस्ट, डाउनहिल असिस्ट कंट्रोल, टीपीएमएस जैसे सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

कितना दमदार इंजन

Toyota Land Cruiser 300 में कंपनी की ओर से वी6 इंजन दिया जाता है। जिससे एसयूवी को 304 बीएचपी की पावर और 700 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 10स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स को दिया जाता है। साथ ही ऑल व्हील ड्राइव तकनीक भी मिलती है।

टोयोटा ने लैंड क्रूजर 300 को दो वेरिएंट्स में ऑफर किया है। इसमें ZX वेरिएंट को 2.31 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लाया गया है। वहीं GR-S वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत को 2.41 करोड़ रुपये रखा गया है। खास बात यह है कि इस एसयूवी को सीबीयू तौर पर भारत लाया जाएगा।

बीवाईडी सीलाइन 7 Vs Kia EV6: बैटरी, रेंज, फीचर्स और कीमत के मामले में किस इलेक्ट्रिक SUV को खरीदना होगी समझदारी

BYD Sealion 7 Vs Kia EV6 भारत में कम कीमत वाली Electric Cars के साथ ही प्रीमियम सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Electric SUVs को भी काफी पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में किआ के अलावा बीवाईडी की ओर से भी सीलॉयन7 को लॉन्च किया गया है। बैटरी रेंज फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में से किस गाड़ी को खरीदना चाहिए। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी सेगमेंट में BYD की ओर से Sealion 7 को हाल में ही लॉन्च किया गया है। इस एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Kia EV6 के साथ होता है। बैटरी, रेंज, फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में से किस Electric SUV को खरीदना आपके लिए बेहतर हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Features & Technology: Comparing Kia EV6 & BYD Sealion 7

BYD Sealion 7 को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ बाजार में लॉन्च किया गया है। इसमें 12 स्पीकर, वायरलेस फोन चार्जर, वॉटर ड्रॉप टेल लैंप, व्हीकल टू लोड, 15.6 इंच रोटेटिंग इंफोटेनमेंट सिस्टम, नापा लैदर सीट, वेंटिलेटिड और हीटेड सीट्स, 128 कलर एंबिएंट लाइट्स, पैनोरमिक सनरूफ, हेड-अप डिस्प्ले जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं। सेफ्टी के लिए इसमें 11 एयरबैग, ड्राइवर फटीग मॉनिटरिंग सिस्टम जैसे फीचर्स को दिया गया है।

वहीं Kia EV6 में सस्टेनेबल मेटिरियल का उपयोग किया गया है। इसमें वेगन लेदर सीट्स के साथ ही रिसाइकिल्ड मेटिरियल से इंटीरियर को तैयार किया गया है। एसयूवी में चौड़ी इलेक्ट्रिक सनरूफ, स्टारमैप एलईडी टेल लैंप के साथ सीक्वेंशनल इंडीकेटर्स, फ्लश डोर हैंडल, 19 इंच अलॉय व्हील्स, ड्यूल एलईडी हेडलैंप, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 12.3 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, डिजिटल की, V2L, V2V, ओटीए सॉफ्टवेयर अपडेट, स्मार्ट पावर्ड टेलगेट, हेड-अप डिस्प्ले, 14 स्पीकर मेरिडियन ऑडियो सिस्टम, इलेक्ट्रिक फोल्डिंग रियर व्यू मिरर, एलईडी फॉग लैंप, रेन सेंसिंग वाइपर, ऑटो हेडलैंप, 64 कलर एंबिएंट लाइट्स, डबल डी कट स्टेयरिंग व्हील, 10वे पावर्ड मेमोरी सीट फंक्शन, चार्जिंग पोर्ट, ड्यूल जोन ऑटो एसी जैसे कई फीचर्स को दिया गया है। सेफ्टी के लिए इसमें 25 फीचर्स के साथ Adas को ऑफर किया जा रहा है।

BYD Sealion 7 Vs Kia EV6: Battery & Range: Which EV Offers Better Performance?

BYD Sealion 7 एसयूवी में कंपनी की ओर से 82.56 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। गाड़ी को सिर्फ प्रीमियम और परफॉर्मेंस वेरिएंट्स में लाया गया है। इसमें लगी मोटर से इसे 390 किलोवाट की पावर और 690 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। गाड़ी में लगी मोटर से इसे 4.5 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड पकड़ सकती है। सिंगल चार्ज में इसे 567 किलोमीटर की NEDC रेंज मिलती है। गाड़ी के साथ कंपनी 7KW की क्षमता का चार्जर दिया जाएगा। गाड़ी को ऑल व्हील ड्राइव के साथ ही रियर व्हील ड्राइव के विकल्प में खरीदा जा सकेगा।

वहीं Kia EV6 में 84 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। इसे 350 किलोवाट डीसी फास्ट चार्जर से 10-80 फीसदी चार्ज करने में 18 मिनट लगते हैं। एसयूवी में लगी मोटर से 325 पीएस की पावर और 605 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। सिंगल चार्ज में एसयूवी को 650 किलोमीटर से ज्यादा चलाया जा सकता है। इसमें सिर्फ ऑल व्हील ड्राइव को दिया जाता है और इसे रियर व्हील ड्राइव की तरह भी चलाया जा सकता है। ड्राइविंग के लिए इसमें नॉर्मल, ईको और स्पोर्ट्स मोड भी मिलते हैं।

BYD Sealion 7 Vs Kia EV6 Dimension

BYD Sealion 7 की लंबाई 4830 एमएम रखी गई है। इसकी चौड़ाई 1925 एमएम, ऊंचाई 1620 एमएम और व्हीलबेस 2930 एमएम है।

वहीं Kia EV6 की लंबाई 4695 एमएम है। इसकी चौड़ाई 1890 एमएम, ऊंचाई 1570 एमएम और व्हीलबेस 2900 एमएम है।

Price & Value: Which Electric SUV Offers Better Affordability?

BYD Sealion 7 इलेक्ट्रिक एसयूवी को 48.9 लाख रुपये की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इस कीमत पर इसके प्रीमियम वेरिएंट को खरीदा जा सकता है। इसके परफॉर्मेंस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 54.90 लाख रुपये रखी गई है। वहीं Kia EV6 की एक्स शोरूम कीमत अभी सार्वजनिक नहीं की गई है। इस एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन को जनवरी 2025 में आयोजित किए गए Auto Expo में लाया गया था।

रोजगारपरक शिक्षा से रुकेगा युवाओं का पलायन

विजय गर्ग

भारत को युवाओं का देश कहा जाता है, क्योंकि यहां की आधी आबादी 18 से 35 वर्ष की युवा पीढ़ी वाली है, जो कर्मशील है। लेकिन विडंबना यह है कि इस पीढ़ी को रोजगार की सही गारंटी देने की बजाय, उन्हें केवल बेरोजगारी से जूझने की गारंटी दी जाती है। देश में शॉर्टकट संस्कृति और अनुकंपाओं का बोलबाला है। एक ओर विकास दर के बढ़ने के आंकड़े प्रस्तुत किए जाते हैं और कहा जाता है कि हम सबसे तेज आर्थिक विकास कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर लोगों के पास पर्याप्त रोजगार नहीं है। उनकी उम्मीदें टूट रही हैं।

शिक्षा की डिग्रियां अब कृत्रिम मेधा और डिजिटल दुनिया से असंबद्ध होती जा रही हैं। आज का युवा खुद को देश की मुख्यधारा से अलग महसूस करता है। हम एक समानतावादी समाज बनाने का संकल्प लेकर चले थे, लेकिन असमानताएं बढ़ती चली गईं। देश की 90 प्रतिशत संपत्ति मुट्ठीभर लोगों के हाथों में सिमट गई है। यह स्थिति पहले भी सच थी और आज भी वही सच है। शायद जब हम आजादी के शतकीय महोत्सव पर खुद को एक विकसित राष्ट्र कहेंगे, तब भी यही सच रहेगा। एक ऐसा राष्ट्र, जहां 80 करोड़ से अधिक लोग रियायती अनाज पर निर्भर हैं। ऐसे में सपनों और उम्मीदों से भरा नौजवान अपने देश में अपने भविष्य को खो चुका महसूस करता है। उसे विदेश जाने के सपने ललचाने लगते हैं और वह किसी भी तरीके से, वैध या अवैध, विदेश जाने को तैयार हो जाता है। अमेरिका उनका सबसे आकर्षक गंतव्य बन जाता है। वहां की आय भारतीय मुद्रा में लाखों रुपये बन जाती है, जिससे वह कम से कम वेतन पाकर भी समृद्ध जीवन जीने की उम्मीद करता है। ऐसे में, गांवों में खाली पड़े घर और बुजुर्गों के लिए बनी हवेलियां बस अकेलेपन और असमर्थता का प्रतीक बन जाती हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अवैध प्रवासी भारतीयों और अन्य देशों के नागरिकों को अमेरिका से निकालने का अभियान शुरू किया, जिसके तहत बिना वैध कागजात वाले भारतीय नागरिकों को अस्तित्व के संकट का सामना करना पड़ा। ट्रम्प का नारा 'अमेरिका अमेरिकियों के लिए' अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे भारतीयों के लिए मुश्किलें बढ़ा रहा है।

इमिग्रेशन एजेंटों द्वारा दिखाए गए झूठे सपने अब टूट रहे हैं, क्योंकि इन एजेंटों ने फर्जी अकादमियों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से युवाओं को विदेश भेजने का झांसा दिया था। यह पीढ़ी अपने सपनों से निर्वासित होकर एक भटकाव की स्थिति में है। इन युवाओं के भविष्य का निर्धारण केवल भारत में होना चाहिए, जहां उन्हें सही दिशा और अवसर मिले। पंजाब में अवैध इमिग्रेशन एजेंटों की संख्या भयावह है। यहां पंजीकृत एजेंटों की संख्या महज 212 है, जबकि अधिकांश एजेंट अवैध रूप से काम कर रहे हैं। इसके बावजूद, ट्रैवल एजेंट नए तरीके से युवाओं को विदेश भेजने का झांसा देते हैं, जो उन्हें अवैध रास्तों से, जैसे जंगलों में भटकने, पैदल चलने और लाखों रुपये खर्च करने के बावजूद सही मंजिल तक नहीं पहुंचने देते।

अब अमेरिकी सरकार ने अवैध प्रवासियों के खिलाफ अभियान शुरू किया है, जिसके तहत जो लोग बिना कागजात के अमेरिका में प्रवेश करेंगे, उन्हें निकाल बाहर किया जाएगा। यह समस्या केवल युवाओं के लिए नहीं, बल्कि उनके परिवारों के लिए भी गंभीर है, जो अपने बच्चों को विदेश भेजने के लिए मजबूर होते हैं।

क्या भारत को अपनी युवा पीढ़ी के लिए रियायतें मांगने की आवश्यकता हो गई है? यह एक गंभीर सवाल है। मोदी और ट्रम्प की मैत्री को देखते उम्मीद की जा सकती है कि इन युवाओं को थोड़ी राहत मिल सकेगी। हालांकि, अमेरिका का अपना स्वार्थ भी है। वह भारत के तकनीकी एक्सपर्ट्स, जैसे आईटी पेशेवरों को एच-1बी वीजा के तहत स्वीकार करता है, क्योंकि वह जानता है कि ये लोग उसे डिजिटल, रोबोटिक और कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में मदद कर सकते हैं। लेकिन, वह उन मजदूरों या श्रमिकों को नहीं चाहता जो उसके देश के शारीरिक कामकाजी वर्ग के वेतन में सेंध लगाते हैं। यही कारण है कि अमेरिका अवैध प्रवासी भारतीयों के खिलाफ सख्त अभियान चला रहा है। इसे गलत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि हर देश का अधिकार है कि वह केवल वैध नागरिकों को अपने देश में रखे। अवैध नागरिक किसी भी देश के कानून और अनुशासन के लिए खतरा बन सकते हैं। विदेशों में रोजगार पाने की चाहत की बजाय, क्या यह समय नहीं है कि हम मेहनती युवाओं के लिए अपने देश में अवसर प्रदान करें?

हमारी आर्थिक नीति को आयात आधारित से निर्यात आधारित बनाना बहुत जरूरी है। इसके लिए लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना आवश्यक है। ऐसे उद्योगों में काम करने के अवसर इन्हीं नौजवानों को मिल सकते हैं। लेकिन इसके लिए केवल निवेश की जरूरत नहीं है, बल्कि शिक्षा प्रणाली में भी व्यापक बदलाव की आवश्यकता है।

अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में नई संभावनाएं

विजय गर्ग

अंग प्रत्यारोपण चिकित्सा विज्ञान का वह क्षेत्र है, जिसने लाखों जिंदगियों को नई दिशा दी है, लेकिन अंगदान की कमी और प्रत्यारोपण के बाद अंग अस्वीकृति जैसी चुनौतियां हमेशा इस क्षेत्र के विकास में बाधा रही हैं। हाल में चिकित्सकों ने सूअर की किडनी का एक इंसान में सफल प्रत्यारोपण कर चिकित्सा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह सफलता उन लाखों मरीजों के लिए उम्मीद की किरण बनकर आई है, जो किडनी फेल्योर की समस्या से जूझ रहे हैं। सूअर के अंगों का उपयोग अंग प्रत्यारोपण में एक बड़ी क्रांति साबित हो सकता है। सूअरों की शारीरिक संरचना इंसानों से काफी हद तक मिलती-जुलती है, जो उन्हें अंगों के संभावित स्रोत के रूप में उभरने में मदद करती है। यह तकनीक न केवल किडनी, बल्कि हृदय, जिगर और अन्य महत्वपूर्ण अंगों के प्रत्यारोपण में भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा जैव- इंजीनियरिंग और जीन एडिटिंग तकनीकों के जरिये सूअर के अंगों को इंसानी शरीर के लिए और अधिक अनुकूल बनाया जा रहा है।

यह अवधारणा नई नहीं है। 1996 में स्काटलैंड के शोधकर्ताओं ने 'डाली' नामक भेड़ को क्लोनिंग तकनीक से बनाया था। इसके बाद से विज्ञानी प्रयोगशालाओं में इंसानी अंगों को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि पेट्री डिश में स्टेम कोशिकाओं से अंग विकसित करना बेहद चुनौतीपूर्ण काम रहा है, क्योंकि इन कोशिकाओं को सही तरीके से परिपक्व अंगों में बदलना मुश्किल है। यही कारण है कि विज्ञानी अब जानवरों के भ्रूण में मानव स्टेम कोशिकाओं को विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। सूअरों के अलावा गाय, भैंस, चूहे और भेड़ जैसे जानवरों में भी मानव अंगों को विकसित करने के प्रयास जारी हैं। इस तकनीक से अंगदान की भारी कमी को दूर किया जा सकता है। साथ ही 3डी प्रिंटिंग और स्टेम सेल तकनीक जैसी नई विधियां भी अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं। भविष्य में इन तकनीकों के व्यापक उपयोग अंग प्रत्यारोपण न केवल सुलभ और सुरक्षित होगा, बल्कि यह अधिक किफायती भी हो सकता है, लेकिन इस क्षेत्र में कई चुनौतियां भी हैं। नैतिक और कानूनी प्रश्न, संक्रमण का खतरा और ऊंची लागत जैसे मुद्दों को सुलझाना अभी बाकी है। कुछ समाजशास्त्री और पर्यावरणविद् इन तकनीकों को प्रकृति के साथ छेड़छाड़ मानते हैं। इसके बावजूद, विज्ञानी इन चुनौतियों का समाधान खोजने में जुटे हैं। बहरहाल इस दिशा में प्रगति जारी रही, तो अंग प्रत्यारोपण चिकित्सा विज्ञान को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा। इससे न केवल लाखों मरीजों की जान बचाई जा सकेगी, बल्कि यह तकनीक भविष्य में मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांति लाने में भी सक्षम होगी।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट

आपके लाडले ने भी नहीं शुरू किया बोलना, तो टीवी और स्मार्टफोन हो सकते हैं इसकी वजह

विजय गर्ग

एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार, टेलीविजन और स्मार्टफोन जैसी स्क्रीन के संपर्क में आने से बच्चों में भाषा विकास कौशल कम हो सकता है। 20 लैटिन अमेरिकी देशों के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में किए गए निष्कर्षो में पाया गया कि किताबों के संपर्क और वयस्कों के साथ स्क्रीन पर समय बिताने से बच्चों में भाषा कौशल को बढ़ावा मिल सकता है।

1,878 बच्चों का किया गया विश्लेषण शोधकर्ताओं ने अगस्त 2021 और मार्च 2023 के बीच लैटिन अमेरिका में 12 से 48 महीने की उम्र के 1,878 बच्चों के डेटा का विश्लेषण किया। बच्चों का मूल्यांकन माता-पिता द्वारा स्क्रीन के उपयोग, साझा मीडिया जुड़ाव, किताबों के संपर्क, भाषा कौशल और विकासात्मक मील के पत्थरों के सर्वेक्षणों के आधार पर किया गया था। टीम ने बुनियादी जरूरतों, माता- पिता की शिक्षा और व्यवसाय को समझने के लिए प्रतिभागियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति की भी जांच की।

पुस्तकों का कम उपयोग करते हैं बच्चे PLOS ONE पत्रिका में प्रकाशित परिणामों से पता चला कि टीवी और बैकग्राउंड टीवी सबसे अधिक बार उपयोग किए जाने वाले मीडिया थे, जिनका औसत दैनिक एक्सपोजर एक घंटे से अधिक था । इससे बच्चों में भाषा विकास कौशल कम हो गया। टीम ने यह भी पाया कि मनोरंजन सामग्री का उपभोग बच्चों द्वारा सबसे अधिक किया जाता है। इसके बाद संगीत और शैक्षिक प्रोग्रामिंग का स्थान आता है। इसके अलावा, निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवारों ने पुस्तकों और कम शैक्षिक संसाधनों के कम उपयोग की सूचना दी। शोधकर्ताओं ने दिया ये सुझाव अधिक स्क्रीन एक्सपोजर वाले बच्चों में Lexical Density कम था और भाषा मील का पत्थर हासिल करने में देरी हुई। दूसरी ओर, जो किताबों के अधिक संपर्क में थे या वयस्कों के साथ स्क्रीन पर जुड़े थे, उनके भाषा कौशल बेहतर थे। निष्कर्ष पिछले शोध का समर्थन करते हैं कि अत्यधिक स्क्रीन का उपयोग प्रारंभिक भाषा विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वयस्कों के साथ साझा जुड़ाव और उपयुक्त सामग्री प्रकार इनमें से कुछ प्रभावों को कम कर सकते हैं। स्क्रीन के उपयोग में वृद्धि और अधिक जटिल होने के साथ, शोधकर्ताओं ने भविष्य के प्रयोगात्मक डिजाइनों को चर नियंत्रित करने और उनके प्रभाव को अलग करने का सुझाव दिया है।

कहानी: पीयूषा

विजय गर्ग

प्रसुन्न भैया 2 पल सोच कर मुसकराते हुए बोले, ''मेरी बेटी का नाम होगा पीयूषा, जो है तो पीयूष की निशानी किंतु दुनिया उसे मेरी निशानी के रूप में पहचानेगी.

रविवार का दिन था. छुट्टी होने के कारण मैं इतमीनान से अपने कमरे में अखबार पढ़ रहा था, तो अचानक चाचाजी पर नजर पड़ी. वे सामने उदास व शांत खड़े हुए थे. मैं ने बैठने का आग्रह करते हुए कहा, ''क्या बात है चाचाजी, परेशान से लग रहे हैं? तबीयत तो ठीक है न?''

''मैं ठीक हूं बेटा, तुम से कुछ कहना चाहता हूं,'' बैठने के बाद चाचाजी ने धीरे से कहा. मैं ने अखबार एक ओर रखते हुए कहा, ''तो कहिए न चाचाजी.'' लेकिन चाचाजी शांत ही बैठे रहे. मैं ने आग्रह करते हुए कहा, ''क्या बात है चाचाजी? जो दिल में है बेझिझक कह दीजिए. आप का कथन मेरे लिए आदेश है,'' चाचाजी की चुप्पी दरअसल मेरी बैचेनी बढ़ा रही थी. ''बेटा पवन, तू ने कभी भी मेरी बात नहीं टाली है. आज भी इसी उम्मीद से तेरे पास आया हूं. तेरी चाची का और मेरा विचार है कि तू मिताली से शादी कर ले. उसे सहारा दे दे. बेचारी कम उम्र में विधवा हो गई है और दुनिया में एकदम अकेली है. मायके में उस का कोई नहीं है. हम बूढ़ाबूढ़ी का क्या भरोसा, तब वह अकेली कहां जाएगी','' चाचाजी ने धीरेधीरे अपनी बात रखी. उन की आंखें सजल हो उठी थीं, गला भर आया था. मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा चाचाजी की बातें सुन रहा था और क्या कहूं समझ नहीं पा रहा था. मेरे समक्ष एक ओर चाचाचाची का निर्णय था, तो दूसरी ओर मेरा प्यार जो पनप चुका था. मुझे लग रहा था कि यह बात सच है कि जीवनपथ का अगला मोड़ क्या और कैसा होगा कोई नहीं जानता. आज जीवनपथ का ऐसा मोड़ मेरे समक्ष आ खड़ा हुआ था, जिस में मुझे अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्य एवं अपने प्यार में से किसी एक का चुनाव करना था.

मेरे जीवनपथ का प्रथम पड़ाव बचपन शुरू में काफी खुशहाल था. मैं अपने मातापिता की इकलौती संतान हूं. पापा बैंक में मैनेजर थे और मां कुशल गृहिणी. चूंकि पापा घर के बड़े बेटे थे और मां अच्छे स्वभाव की महिला थीं, इसलिए मेरी वृद्धा दादी हमारे साथ ही रहती थीं. मुझे मांबाप के साथ दादी का भी भरपूर स्नेहप्यार मिलता रहा. पटना के सब से अच्छे स्कूल में मेरा दाखिला करवाया गया था. पढ़ाई में मेरी विशेष दिलचस्पी थी और शुरू से ही मैं मेधावी रहा, इसलिए अच्छे अंक लाता था. पढ़ाई के साथसाथ खेलकूद, गायन आदि में भी मेरी विशेष रुचि थी. मुझे मांपापा का पूरा प्रोत्साहन मिलता रहा, इसलिए सभी क्षेत्रों में अच्छा कर मैं परिवार एवं स्कूल की आंखों का तारा बना रहा. मेरे जीवनपथ में अचानक ही अत्यंत कठिन और पथरीला मोड़ आ खड़ा हुआ. मैं उस समय कक्षा 8 में पढ़ता था. मांपापा का अचानक रोड ऐक्सीडैंट में देहांत हो गया. मेरे पास इस दुख को सहने की न तो बुद्धि थी न ही हिम्मत. मैं हताश और हारा हुआ सा सिर्फ रोता रहता था. उस कठिन समय में दादी ने मुझे ढाढ़स बंधाया और अपने छोटे बेटे यानी मेरे चाचाजी के घर मुझे ले आईं. मैं चाचा चाची के साथ जमशेदपुर में रहने लगा. उन का इकलौता बेटा पीयूष था. वह मुझ से 2 साल छोटा था. चाचाजी ने उसी के स्कूल में मेरा नाम लिखवा दिया. मैं वहां भी अच्छे अंकों से पास होने लगा.

चाचाचाची मेरी रहने, खानेपीने, पढ़नेलिखने आदि सभी व्यवस्था देखते, लेकिन मेरे और पीयूष के प्रति उन के व्यवहार में थोड़ा फर्क रहता. जैसे चाची मुझ से नजरें बचा कर पीयूष को कुछ स्पैशल खाने को देतीं. लेकिन पीयूष मेरे लाख मना करने पर भी उसे मुझ से शेयर करता. मैं चाचाचाची के सारे भेदभाव नजरअंदाज कर तहे दिल से उन का आभार मानता कि उन्होंने मुझ बेसहारा को सहारा तो दिया ही अच्छे स्कूल में मेरा नाम भी लिखवाया. मेरी दादी जब तक रहीं मुझ पर विशेष ध्यान देती रहीं, किंतु वे मांपापा के आकस्मिक निधन से अंदर तक टूट चुकी थीं. उन के जाने के 2 वर्ष बाद वे भी चल बसीं. चाचाचाची पीयूष की उच्च शिक्षा हेतु अकसर चर्चा करते किंतु मेरे संबंध में ऐसी कोई जिज्ञासा नहीं व्यक्त करते. मैं ने 12वीं की परीक्षा उच्च अंकों से पास की. फिर बी.कौम. करने के बाद बैंक परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर मैं सरकारी बैंक में पी.ओ. बन गया. इत्तफाक से मेरी नियुक्ति जमशेदपुर में ही हुई, तो मैं चाचाचाची के साथ ही रहा. वैसे भी मेरी दिली इच्छा यही थी कि मैं चाचाचाची के साथ रह कर उन्हें सहयोग दूं क्योंकि दोनों को ही बढ़ती उम्र के साथसाथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी होने लगी थीं.

पीयूष ने बैंगलुरु से एम.बी.ए. किया. वहीं उस का एक मल्टीनैशनल कंपनी में सिलैक्शन हो गया. हम सभी उस की खुशी से खुश थे. उसे जल्दी ही अपनी जूनियर मिताली से प्यार हो गया, तो चाचाचाची ने उस की पसंद को सहर्ष स्वीकार करते हुए धूमधाम से उस का विवाह कर दिया. शादी के बाद पीयूष और मिताली बैंगलुरु लौट गए. पीयूष की शादी के बाद मेरा मन कुछ ज्यादा ही खालीपन महसूस करने लगा. उसी दौरान कविता ने कब इस में जगह बना ली मुझे पता ही नहीं चला. कविता मेरी ही बस से आतीजाती थी. सुंदर, सुशील, सभ्य कविता विशाल हृदय मालूम होती, क्योंकि हमेशा ही सब की सहायता हेतु तत्पर दिखाई देती. कभी किसी अंधे को सड़क पार करवाती, तो कभी किसी बच्चे की सहायता करती. बस में वृद्ध या गर्भवती महिला को तुरंत अपनी सीट औफर कर देती. मुझे उस की ये सब बातें बहुत अच्छी लगती थीं, क्योंकि वे मेरे स्वभाव से मेल खाती थीं. हम दोनों में छोटीछोटी बातें होने लगीं. धीरेधीरे हम एकदूसरे के लिए जगह रख, साथ ही जानेआने लगे. दोनों को एकदूसरे का साथ अच्छा लगता. मैं उस के प्रति आकर्षण महसूस करता किंतु चाह कर भी उस के सामने व्यक्त नहीं कर पाता. उस की दशा भी मेरे समान ही महसूस होती, क्योंकि उस की आंखों में चाहत, समर्पण दिखाई देता. किंतु शर्मोहया का बंधन उसे भी जकड़े हुए था.

मैं अपने विवाह हेतु चाची से चर्चा करना चाहता किंतु झिझक महसूस होती. कई बार पीयूष की मदद लेने का विचार आता किंतु वह अपनी नौकरी एवं गृहस्थी में ऐसा व्यस्त और मस्त था कि उस से चर्चा करने का अवसर ही नहीं मिल पाता. इस के अलावा उस का हमारे पास आना भी बहुत कम एवं सीमित समय के लिए हो पाता. उस दौरान मेरा संकोची स्वभाव कुछ व्यक्त नहीं कर पाता. मिताली के गर्भवती होने पर चाची उसे लंबी छुट्टी दिलवा कर अपने साथ ले आईं. 5 माह का गर्भ हो चुका था. चाची बड़ी लगन एवं जिम्मेदारी से उस की देखभाल करतीं, तो नए मेहमान के आगमन की खुशी से घर में हर समय त्योहार जैसा माहौल बना रहता. मैं अपने संकोची स्वभाव के कारण मिताली से थोड़ा दूरदूर ही रहता. हम दोनों में कभीकभी ही कुछ बात होती. जीवन अपनी गति से चल रहा था कि अचानक पीयूष का रोड ऐक्सीडैंट में देहांत हो गया. घर में मानो कुहराम मच गया. चाचाचाची का रोरो कर बुरा हाल था. मिताली तो पत्थर की मूर्ति सी बन गई. एकदम शांत, गमगीन. मैं स्वयं के साथसाथ सभी को संभालने की असफल कोशिश में लगा रहता.

मिताली को समझाते हुए कहता कि मिताली कम से कम बच्चे के बारे में तो सोचो उस पर बुरा प्रभाव पड़ेगा, तो वह आंसू पोंछते हुए सुबकने लगती. पीयूष के जाने बाद हम सभी का जीवन रंगहीन, उमंगहीन हो गया था. हम सभी यंत्रवत अपनाअपना काम करते और एकदूसरे से नजरें चुराते हुए मालूम होते.

जीवनयात्रा की टेढ़ीमेढ़ी डगर मेरे मनमस्तिष्क में हलचल मचा रही थी. चाचाजी मिताली से विवाह करने की बात पर मेरा जवाब सुनना चाह रहे थे. वे मेरी सहमति की आस लगाए बैठे थे और मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरा गुजरा कल आज मिताली के साथ में मेरे समक्ष आ खड़ा हुआ है. कल जब मैं अपने मातापिता से बिछुड़ कर चाचाचाची के समक्ष सहारे की उम्मीद लिए आ खड़ा हुआ था, यदि उस समय उन्होंने सहारा नहीं दिया होता तो मेरा जाने क्या होता. सत्य है इतिहास स्वयं को दोहराता है. वैसे चाचाजी यदि मेरी जान भी मांग लेते तो बिना सोचेविचारे मैं सहर्ष दे देता, किंतु चाचाजी ने मिताली से विवाह का प्रस्ताव रख मुझे असमंजस में डाल दिया था. मैं ने धीरे से कहा, ''चाचाजी, मिताली को मैं ने हमेशा अपनी छोटी बहन माना है. ऐसे में भला मैं उस से शादी कैसे कर सकता हूं?''

''बेटा, तुम निराश करोगे तो हम कहां जाएंगे,'' कहते हुए चाचाजी रो पड़े. मैं ने उन्हें संभालते हुए कहा, ''चाचाजी, स्वयं को संभालिए. यों निराश होने से समस्या का समाधान कैसे निकलेगा? मैं नहीं जानता था कि आप लोग मिताली के पुनर्विवाह हेतु विचार कर रहे हैं. दरअसल, मेरा मित्र पंकज अपने विधुर भैया प्रसुन्न के लिए मुझ से मिताली का हाथ मांग रहा था, किंतु मैं उस के प्रस्ताव पर उस पर बिफर पड़ा था कि अभी बेचारी पीयूष के गम से उबर भी नहीं पाई है, उस का बच्चा मिताली के गर्भ में है, ऐसे में उस से मैं कहीं और शादी करने के लिए कैसे बोल सकता हूं. ''उस ने मुझे समझाते हुए कहा था कि दोस्त गंभीरता से विचार कर. जो हुआ बहुत बुरा हुआ किंतु वह हो चुका है, तो अब उस से निकलने का उपाय सोचना होगा. मेरी भाभी बेटे के जन्म के साथ चल बसीं. आज बेटा डेढ़ वर्ष का हो गया है. मेरी मां बेटे प्रखर का पालनपोषण करती हैं किंतु वे बूढ़ी और बीमार हैं. भैया दूसरी शादी के लिए इसलिए इनकार कर देते हैं कि अगर उन की दूसरी पत्नी उन के जान से प्यारे प्रखर के साथ बुरा व्यवहार करेगी तो वे बरदाश्त नहीं कर पाएंगे. वही सिचुएशन मिताली के समक्ष भी आ खड़ी हुई है. लेकिन वह बेचारी जिंदगी किस सहारे निकालेगी?

''उस ने मुझे विस्तार से समझाते हुए कहा कि देख दोस्त मेरे भैया और मिताली दोनों संयोगवश अपने जीवनसाथियों से बिछुड़ आधेअधूरे रह गए हैं. हम दोनों को मिला कर उन के जीवन को सरस एवं सफल बनाएं, यही सर्वथा उचित होगा. मैं ने बहुत चिंतनमनन के बाद तेरे समक्ष यह प्रस्ताव रखा है. दोनों एकदूसरे के बच्चे को अपना कर जीवनसाथी बन जाएं, इसी में दोनों का सुख है. जो घटित हुआ उसे तो बदला नहीं जा सकता, किंतु उन का भविष्य तो अवश्य सुधारा जा सकता है. ''गंभीरता से विचार करने पर मुझे भी पंकज का प्रस्ताव उचित लगा, किंतु आप लोगों से इस के बारे में चर्चा करने का साहस मुझ में न था. आज आप ने चर्चा की तो कहने का साहस जुटा पाया.'' चाचाजी मेरी बातें शांति से सुन रहे थे और समझ भी रहे थे, क्योंकि अब वे संतुष्ट नजर आ रहे थे. चाचीजी जो अब तक परदे की ओट से हमारी बातें सुन रही थीं, लपक कर हमारे सामने आ खड़ी हुईं और अधीरता से बोलीं, ''बेटा, कैसे हैं पंकज के भैया? क्या करते हैं? उम्र क्या है उन की और क्या तू उन से मिला है? वगैरहवगैरह.''

मैं ने उन को पलंग पर बैठाते हुए कहा, ''चाचीजी, पहले आप इतमीनान से बैठिए. मैं सब बताता हूं. बड़े नेक और संस्कारवान इनसान हैं. सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं और मेरी ही उम्र के होंगे, क्योंकि पंकज से 2 साल ही बड़े हैं. पंकज मुझ से लगभग 2 साल ही छोटा है. वैसे आप लोग पहले उन से मिल लीजिए, उस के बाद निर्णय लीजिएगा. मैं तो मिताली को देख कर चिंतित हो जाता हूं. समझ नहीं पाता हूं कि वह इस बात के लिए तैयार होगी या नहीं. अभी बेहद गुमसुम व गमगीन रहती है.''

''बेटा, तू चिंता न कर. उसे विवाह के लिए हम सभी को प्रोत्साहित करना होगा. विवाह होने से वह स्वयं को सुरक्षित महसूस करेगी जिस का प्रभाव गर्भ पर भी सकारात्मक पड़ेगा. बेटा, वह अभी स्वयं को अकेली एवं असुरक्षित महसूस करती होगी. एक औरत होने के नाते मैं उस की भावनाएं समझ सकती हूं. यदि उसे सहारा मिल जाएगा तब उसे दुनिया और जीवन प्रकाशवान लगने लगेगा. हम सब के सहयोग और प्रोत्साहन से वह सामान्य जीवन के प्रति अग्रसर हो जाएगी,'' चाची ने समझाते हुए कहा. फिर चाची 2 मिनट बाद बोलीं, ''बेटा पवन मिताली की शादी के बाद हम तेरी शादी भी कर देना चाहते हैं.''

''ठीक है चाची, लेकिन अभी हमें सिर्फ मिताली के संबंध में ही सोचना चाहिए. कच्ची उम्र में बड़ी विपदा उस पर आ पड़ी है.'' ''हां बेटा, बहुत दुख लगता है उसे यों मूर्त बना देख कर, लेकिन तेरी जिम्मेदारी भी पूरी कर देना चाहती हूं. कोई नजर में हो तो बता देना,'' कहते हुए चाची ने स्नेह से मेरा सिर सहला दिया. मैं कविता को याद कर अहिस्ता से मुसकरा दिया. प्रसुन्न भैया के साथ मिताली की शादी कर दी गई. उन के प्यार, संरक्षण एवं हम सभी के स्नेह, सहयोग एवं प्रोत्साहन से मिताली ने स्वयं को संभाल लिया. समय से उस ने प्यारी सी बेटी को जन्म दिया, तो हम सभी को सारा संसार गुलजार महसूस होने लगा. सब से बड़ी बात तो यह हुई कि अब मिताली खुश रहने लगी. बच्ची के नामकरण हेतु घर में चर्चा होने लगी, तो मैं ने कहा, ''प्रसुन्न भैया, आप ने बेटे का नाम प्रखर बहुत प्यारा एवं सारगर्भित रखा है. उसी तरह बेटी का नाम भी आप ही बताएं.''

प्रसुन्न भैया 2 पल सोच कर मुसकराते हुए बोले, ''मेरी बेटी का नाम होगा पीयूषा, जो है तो पीयूष की निशानी किंतु दुनिया उसे मेरी निशानी के रूप में पहचानेगी.'' फिर प्यार से उन्होंने मिताली की ओर देखा. मिताली उन्हें आदर और प्यार से देखने लगी मानों कह रही हो कि आप को पा कर मैं धन्य हो गई.

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट

अमेरिका के जवाबी शुल्क का भारत पर नहीं होगा खास असर, जानिए क्या है वजह

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सभी देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लगाने का एलान किया है। हालांकि भारत पर कोई खास असर पड़ने की आशंका नहीं है। एसबीआई के बाद एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने भी यही बात कही है। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स का कहना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को घरेलू कारकों से गति मिल रही है और निर्यात पर उसकी निर्भरता कम है।

नई दिल्ली। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने बुधवार को कहा कि अमेरिका के रेसिप्रोकल टैरिफ यानी जवाबी शुल्क का भारत पर कोई खास प्रभाव नहीं होगा। इसकी बड़ी वजह यह है कि अर्थव्यवस्था को घरेलू कारकों से गति मिल रही है और निर्यात पर उसकी निर्भरता कम है। एशिया-प्रशांत एसएंडपी ग्लोबल के सॉवरेन और इंटरनेशनल पब्लिक फाइनेंस रेटिंग के निदेशक यीफर्न फुआ ने यह भी कहा कि भारत अगले दो साल में 6.7 से 6.8 प्रतिशत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर हासिल करेगा।

फुआ ने कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 का बजट अगले कुछ वर्षों के लिए वृद्धि को बढ़ावा देगा। मुख्य रूप से करदाताओं को कर मोर्चे पर राहत के माध्यम से घरेलू मांग और जीडीपी की वृद्धि अब 'टिकाऊ स्तर' पर सामान्य स्थिति में आ रही है। उन्होंने कहा, 'सरकार निवेश-आधारित वृद्धि और कृषि क्षेत्र में सुधारों पर अधिक अधिक ध्यान दे रही है। हालांकि, हमें लगता है कि महामारी के बाद पिछले तीन वर्षों में वृद्धि दर औसतन 8.3 प्रतिशत होने के बाद भारत में जीडीपी वृद्धि दर अधिक टिकाऊ होती जा रही है।'

वस्तुओं के मामले में जिन क्षेत्रों पर अधिक शुल्क लग सकता है उनमें आभूषण, औषधि, कपड़ा और रसायन शामिल हैं। अमेरिका भारत से औषधि पर अधिक शुल्क नहीं लगा सकता है क्योंकि इससे उसके अपने देश में स्वास्थ्य देखभाल की लागत बढ़ जाएगी। अमेरिका को भारत जो औषधि निर्यात करता है, वे मुख्य रूप से जेनेरिक दवाएं हैं।

यीफर्न फुआ, निदेशक, एसएंडपी

फुआ ने कहा, 'फिलहाल, हमारा अनुमान है कि उपभोक्ता खर्च और सार्वजनिक निवेश अगले दो साल में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर को 6.7 से 6.8 प्रतिशत के आसपास बनाए रखेंगे। आर्थिक वृद्धि की ये दरें, भले ही पहले की तुलना में कम हैं, लेकिन समान आय स्तरों पर भारत को अपने समकक्ष देशों से ऊपर बनाए रखेंगी। हमारा मानना है कि आयकर में कटौती के बावजूद राजस्व में वृद्धि जारी रहेगी।'

एसएंडपी का मानना है कि सरकार मौजूदा और अगले वित्त वर्ष के लिए क्रमशः 4.8 प्रतिशत और 4.4 प्रतिशत के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को हासिल कर लेगी। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने भारत को 'बीबीबी-' रेटिंग दी है। यह सबसे कम निवेश ग्रेड की रेटिंग है। रेटिंग पर परिदृश्य सकारात्मक बना हुआ है।

कितनी रहेगी भारत की जीडीपी ग्रोथ, एसबीआई की रिपोर्ट से मिला जवाब

परिवहन विशेष न्यूज

SBI की रिपोर्ट में कहा गया है कि मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था समग्र आर्थिक स्थिरता बनाए रख रही है। इससे अन्य क्षेत्रों की गति को बनाए रखने में मदद मिल रही है। साथ ही मुद्रास्फीति घट रही है जो लोगों रो अधिक विवेकाधीन खर्च (Discretionary Spending) के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। इससे मांग-आधारित (Demand-Led) आर्थिक वृद्धि को बल मिल रहा है।

नई दिल्ली। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) ने अपनी एक रिसर्च रिपोर्ट में कहा है कि मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान भारत की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वृद्धि 6.3 फीसदी रहने का अनुमान है। एसबीआई के मुताबिक, अगर राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) अपने पहले और दूसरे तिमाही के अनुमानों में बड़े संशोधन करता है, तभी ग्रोथ में कोई बदलाव देखने को मिलेगा।

तीसरी तिमाही में कितनी रहेगी जीडीपी ग्रोथ?

SBI ने 36 हाई-फ्रीक्वेंसी इंडिकेटर्स (high-frequency indicators) का एनालिसिस करके अपनी रिपोर्ट तैयार की है। विश्लेषण करते हुए, SBI ने अनुमान लगाया है कि वर्तमान वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में GDP वृद्धि 6.2% से 6.3% के बीच हो सकती है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अनुसार, 2024-25 के लिए वास्तविक (Real) GDP वृद्धि दर 6.4 फीसदी और नाममात्र (Nominal) GDP वृद्धि दर 9.7 फीसदी रहने का अनुमान है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था बनी स्थिरता का आधार

SBI की रिपोर्ट में कहा गया है कि मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था समग्र आर्थिक स्थिरता बनाए रख रही है। इससे अन्य क्षेत्रों की गति को बनाए रखने में मदद मिल रही है। साथ ही, मुद्रास्फीति घट रही है, जो लोगों रो अधिक विवेकाधीन खर्च (Discretionary Spending) के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। इससे मांग-आधारित (Demand-Led) आर्थिक वृद्धि को बल मिल रहा है।

एसबीआई की रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि मौजूदा वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में पूंजीगत व्यय (Capital Expenditure) में सुधार के संकेत मिल रहे हैं।

वैश्विक अनिश्चितता का क्या प्रभाव?

2024 के कैलेंडर वर्ष की तीसरी तिमाही में भू-राजनीतिक घटनाक्रमों (Geopolitical Developments) और सप्लाई चेन में व्यवधान (Supply Chain Disruptions) के कारण वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी देखी गई। इस मंदी का असर केवल भारत पर ही नहीं, बल्कि अन्य देशों पर भी पड़ा।

हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रहा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के रेसिप्रोकल टैरिफ ने भी चिंता बढ़ाई है। हालांकि, एक्सपर्ट का मानना है कि इसका भारत पर ज्यादा असर नहीं पड़ेगा।

IMF का जीडीपी ग्रोथ पर अनुमान

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की हालिया वैश्विक वृद्धि पूर्वानुमान रिपोर्ट के अनुसार, मजबूत घरेलू मांग और सरकार के नीतिगत फैसलों के चलते, भारत की आर्थिक वृद्धि दर मौजूदा और अगले वित्त वर्ष में 6.5 फीसदी रहने का अनुमान है।

ट्रंप के टैरिफ से अमेरिका को होगा भारी नुकसान, सहयोगी देश भी हो जाएंगे बेहाल; भारत पर क्या होगा असर?

परिवहन विशेष न्यूज

ट्रंप की टैरिफ बढ़ाने की योजना का सबसे अधिक नुकसान अमेरिकी उपभोक्ताओं को ही होगा। आयातक बढ़े हुए टैरिफ लागत को अमेरिकी उपभोक्ताओं पर डाल देंगे। इससे निकट भविष्य में मुद्रास्फीति में वृद्धि होगी। साथ ही मध्यम अवधि में आर्थिक वृद्धि को भी नुकसान होगा। साथ ही इससे अमेरिका के गहरे सहयोगियों के नाराज होने का खतरा भी रहेगा।

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रेसिप्रोकल टैरिफ का एलान किया है। इसमें अमेरिका सभी देशों पर उतना ही टैरिफ लगाएगा, जितना वे अमेरिकी उत्पादों पर लगाते हैं। इसका मतलब है कि भारत अगर अमेरिका के कृषि उत्पादों पर 10 फीसदी टैरिफ लगाता है। तो अमेरिका भी 10 फीसदी टैरिफ लगाएगा। अभीन तक अमेरिका के टैरिफ रेट आमतौर पर दूसरे देशों के मुकाबले काफी कर हैं।

हालांकि, ट्रंप की टैरिफ बढ़ाने की योजना का सबसे अधिक नुकसान अमेरिकी उपभोक्ताओं को ही होगा। यह दावा दिग्गज ग्लोबल बैंक स्टैंडर्ड चार्टर्ड की एक रिपोर्ट में किया गया है। इसके मुताबिक, आयातक बढ़े हुए टैरिफ लागत को अमेरिकी उपभोक्ताओं पर डाल देंगे। इससे निकट भविष्य में मुद्रास्फीति में वृद्धि होगी। साथ ही, मध्यम अवधि में आर्थिक वृद्धि को भी नुकसान होगा।

क्या कहती है स्टैंडर्ड चार्टर्ड की रिपोर्ट?

स्टैंडर्ड चार्टर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक, 'अमेरिका की विनिर्माण क्षमता और रोजगार बाजार पहले से ही तंग हैं; इसलिए अधिकांश टैरिफ बढ़ोतरी का बोझ उपभोक्ताओं पर पड़ेगा।' हालांकि, ट्रंप की टैरिफ से अमेरिका में महंगाई कितनी बढ़ेगी, इसका आकलन टैरिफ रेट और अमेरिकी डॉलर की अन्य मुद्राओं के मुकाबले समायोजन पर निर्भर करेगा। साथ ही, इस फैक्टर पर भी नजर रखने की जरूरत होगी कि ट्रंप की रेसिप्रोकल टैरिफ से ग्लोबल ट्रेड की सप्लाई चेन पर क्या असर पड़ता है और दूसरे देश इस पर कैसी प्रतक्रिया देते हैं।

अमेरिकी जीडीपी को भारी नुकसान?

स्टैंडर्ड चार्टर्ड का कहना है कि नए टैरिफ अमेरिकी व्यक्तिगत उपभोग व्यय (PCE) मुद्रास्फीति को 0.7 फीसदी तक बढ़ा सकते हैं। इससे अमेरिकी GDP को 1.2 फीसदी तक का नुकसान भी हो सकता है। अमेरिका को यह नुकसान उस स्थिति में होगा, जब सभी टैरिफ का पूरा बोझ उपभोक्ताओं पर डाला जाएगा और अमेरिकी व्यापार भागीदार उसी स्तर पर जवाबी एक्शन भी लेंगे। PCE मुद्रास्फीति उस दर को मापती है, जिस पर अमेरिका में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें समय के साथ बदलती हैं।

इस आर्थिक प्रभाव को सरल भाषा में समझें तो, जिन आयातकों को विदेशी वस्तुओं पर अधिक टैरिफ देना होगा, वे अतिरिक्त लागत को उपभोक्ताओं से वसूलेंगे। इससे आयातित वस्तुओं की कीमतें सीधे तौर पर बढ़ जाएगी। इसका असर निकट भविष्य में महंगाई के तौर पर दिखेगा और लोग की खरीदने की क्षमता घट जाएगी। यह अमेरिका की मध्यम अवधि की आर्थिक वृद्धि को नुकसान पहुंचा सकती है।

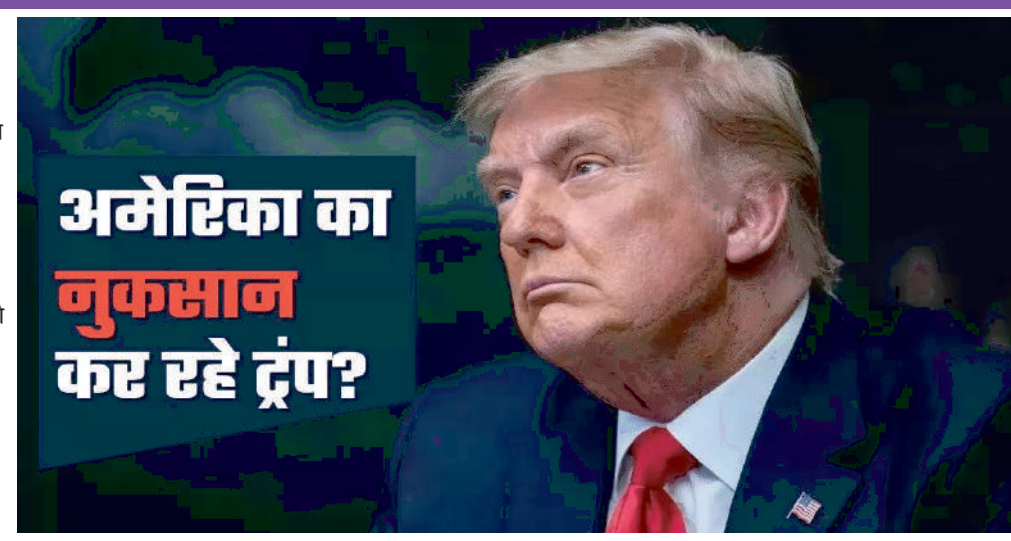

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि अगर ट्रंप रेसिप्रोकल टैरिफ को लागू कर देते हैं, तो अमेरिका की औसत टैरिफ दर 10 फीसदी से अधिक हो सकती है। यह 1940 के दशक के बाद यानी करीब 85 साल में सबसे अधिक टैरिफ दर होगी। अभी अमेरिका विदेशी वस्तुओं पर औसतन 2.3 फीसदी टैरिफ लगाता है।

अमेरिकी टैरिफ से किसे होगा ज्यादा नुकसान?

ट्रंप के नए प्रस्तावित टैरिफ बेशक अमेरिकी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाएंगे, लेकिन इसका खामियाजा उसके व्यापारिक भागीदारों को उठाना पड़ेगा। स्टैंडर्ड चार्टर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, मैक्सिको, कनाडा और यूरोपीय संघ (EU) को नए टैरिफ का सबसे अधिक प्रभाव झेलना पड़ेगा, क्योंकि महामारी के बाद से अमेरिका के साथ उनका ट्रेड सरप्लस काफी बढ़ गया है।

चीन पर भी इसका अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था अब वैश्विक निर्यात पर अधिक निर्भर हो गई है। अमेरिका की चीन से अलग ट्रेड वॉर भी चल रही है। ट्रंप ने राष्ट्रपति बनने के बाद चीन के उत्पादों पर 10 फीसदी टैरिफ का एलान किया था। इसके जवाब में चीन ने भी अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाई थी।

भारत पर ट्रंप के टैरिफ का क्या असर होगा?

SBI ने पिछले दिनों अमेरिका के रेसिप्रोकल टैरिफ के भारत पर होने वाले असर पर व्यापक रिपोर्ट जारी की थी। इसमें कहा गया था कि अगर अमेरिका 15-20 फीसदी की उच्च टैरिफ दरें लागू भी करता है, तो भी भारतीय निर्यात पर इसका कुल प्रभाव सिर्फ 3-3.5 फीसदी तक सीमित रहेगा। इसे बढ़े हुए निर्यात लक्ष्यों (Higher Export Goals) के जरिए आसानी से संतुलित किया जा सकता है।

SBI की रिपोर्ट में टैरिफ के प्रभाव को कम करने के तरीकों की भी बात की गई थी। इसमें बताया गया है कि भारत निर्यात विविधीकरण (Export Diversification), मूल्य संवर्धन (Value Addition) और नए व्यापार मार्ग (New Trade Routes) खोजकर ट्रंप के टैरिफ वॉर के असर को कम कर सकता है।

कतर के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर सावधानी से आगे बढ़े भारत, जीटीआरआई ने सरकार को चेताया

परिवहन विशेष न्यूज

जीटीआरआई ने कहा कि भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पेट्रोरसायन और ऊर्जा संबंधी आयात पर शुल्क रियायतों से घरेलू उद्योगों को नुकसान न पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हम्माद अल-सानी की बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान के अनुसार, दोनों पक्ष द्विपक्षीय व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) में प्रवेश करने की संभावना तलाशने पर सहमत हुए हैं। आइए इस बारे में और जानें।

आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने बुधवार को कहा कि भारत को कतर के साथ संभावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर, खासकर पेट्रोरसायन क्षेत्र में सावधानी से कदम आगे बढ़ाना चाहिए, क्योंकि दोनों देश इस क्षेत्र में मजबूत हैं।

जीटीआरआई ने कहा कि भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पेट्रोरसायन और ऊर्जा संबंधी आयात पर शुल्क रियायतों से घरेलू उद्योगों को नुकसान न पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कतर के अमीर शेख तमीम बिन हम्माद अल-सानी की बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान के अनुसार, दोनों पक्ष द्विपक्षीय व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) में प्रवेश करने की संभावना तलाशने पर सहमत हुए हैं। इसका उद्देश्य 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करके 28 अरब डॉलर तक पहुंचाना है।

सीईपीए एक तरह का मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) होता है। इसमें आमतौर पर दो व्यापारिक साझेदार अपने बीच व्यापार किए जाने वाले अधिकतम उत्पादों (90-95 प्रतिशत) पर सीमा शुल्क को या तो पूरी तरह खत्म कर देते हैं या काफी कम कर देते हैं। इसके अलावा, वे सेवाओं में व्यापार को बढ़ावा देने और निवेश को बढ़ावा देने के लिए मानदंडों को आसान बनाते हैं।

जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि दोनों देशों के बीच व्यापार संरचना को देखते हुए, व्यापार समझौते पर 'सावधानी से विचार किया जाना चाहिए।' उन्होंने कहा कि भारत के पास एक अच्छी तरह से विकसित घरेलू पेट्रोरसायन उद्योग है। यदि शुल्क में कटौती से कतर से सस्ते आयात का प्रवाह होता है, तो इसे चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि कतर के साथ भारत का पहले से ही काफी व्यापार घाटे में है और अगर यदि बाजार को संतुलित नहीं किया जाता है तो व्यापार समझौते के बाद यह घाटा और बढ़ सकता है। उन्होंने कहा, "इस तरह के समझौते पर आगे बढ़ने से पहले क्षेत्रीय प्रभावों, विशेष रूप से ऊर्जा और विनिर्माण का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन आवश्यक होगा।" कतर के साथ भारत का व्यापार काफी असंतुलन वाला है। वित्त वर्ष 2023-24 में कतर से देश का आयात 12.34 अरब डॉलर था, जबकि भारत का निर्यात सिर्फ 1.7 अरब डॉलर था।

इटली कर मामला निपटाने को गूगल हुआ 340 मिलियन डॉलर का भुगतान करने को राजी

गूगल ने इटली के कर विवाद को सुलझाने के लिए 326 मिलियन यूरो (340 मिलियन डॉलर) का भुगतान करने पर सहमति जताई है। इसके बाद मिलान के अभियोजकों ने बुधवार को एलान किया कि उन्होंने कंपनी (गूगल) की यूरोपीय शाखा के खिलाफ मामला बंद करने का फैसला लिया है। यह समझौता 2015 से 2019 के बीच की अवधि के कर, जुर्माने और ब्याज को कवर करता है। इसका मतलब है कि इन वर्षों के लिए गूगल को अब किसी और कानूनी कार्रवाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सोने का बढ़ा भाव, चांदी भी चमकी; चेक करें लेटेस्ट प्राइस

परिवहन विशेष न्यूज

मंगलवार को दिल्ली में सोने की कीमत 300 रुपये बढ़कर 88500 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई जबकि चांदी 800 रुपये चढ़कर 99000 रुपये प्रति किलोग्राम पहुंच गई। वैश्विक बाजारों में मजबूती और निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी के कारण सोने में तेजी देखी गई। कॉमेक्स पर सोना $2925 प्रति औंस पर पहुंचा। भारत में जनवरी में सोने का आयात 40.79% बढ़कर $2.68 बिलियन हो गया।

नई दिल्ली। वैश्विक बाजारों में मजबूत रुझानों के चलते मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमतें 300 रुपये बढ़कर 88,500 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गईं। ऑल इंडिया सर्राफा एसोसिएशन के मुताबिक, 99.9% शुद्धता वाले सोने की कीमत सोमवार को 88,200 रुपये प्रति 10 ग्राम थी, जो अब 88,500 रुपये हो गई है। वहीं, 99.5% शुद्धता वाले सोने की कीमत 300 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 88,100 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई।

चांदी की कीमतों में भी तेजी देखने को मिली। चांदी की कीमत 800 रुपये बढ़कर 99,000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। यह एक दिन पहले 98,200 रुपये प्रति किलोग्राम थी।

MCX वायदा बाजार में सोना और चांदी

एमसीएक्स (MCX) पर अप्रैल डिलीवरी के लिए सोने के वायदा सौदे 435 रुपये बढ़कर 85,490 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गए। मार्च डिलीवरी के लिए चांदी वायदा 439 रुपये बढ़कर 96,019 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी रिसर्च एनालिस्ट (कमोडिटी और करेंसी) जतिन त्रिवेदी के अनुसार, ₹वैश्विक अनिश्चितताओं और टैरिफ को लेकर बढ़ती चिंताओं के कारण सोने की कीमतों में मजबूती बनी हुई है। बैंक और निवेश फंड अभी भी सोने को सुरक्षित निवेश मानते हुए इसमें निवेश कर रहे हैं, जिससे सोना अच्छी मजबूती पर टिका हुआ है।₹

उन्होंने आगे कहा कि बाजार में अस्थिरता बढ़ सकती है क्योंकि बुधवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भाषण, फेडरल रिजर्व और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की बैठक के मिनट्स जारी होने वाले हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमतों में उछाल:

कॉमेक्स (COMEX) पर अप्रैल डिलीवरी के लिए सोना $24.94 (0.86%) बढ़कर $2,925.64 प्रति औंस हो गया। स्पॉट गोल्ड की कीमत $16 बढ़कर $2,912.50 प्रति औंस पहुंच गई। कॉमेक्स पर चांदी वायदा 0.47% बढ़कर $33 प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी।

कोटक सिक्योरिटीज के एवीपी-कमोडिटी रिसर्च, कायनात चैनवाला ने बताया, ₹कॉमेक्स पर सोना $2,925 के ऊपर कारोबार कर रहा है क्योंकि निवेशक अमेरिका और यूरोपीय संघ के बीच बढ़ते तनाव और यूक्रेन शांति वार्ता के घटनाक्रमों पर नजर बनाए हुए हैं।"

HDFC सिक्योरिटीज के सीनियर एनालिस्ट सौमिल गांधी ने कहा, ₹मंगलवार को सोने में मामूली बढ़त देखने को मिली, जिससे यह सबसे सुरक्षित निवेश विकल्प बना हुआ है। हालांकि, फेडरल रिजर्व के सदस्य पैट्रिक हार्कर के ब्याज दरें स्थिर रखने के बयान के कारण सोने में और तेजी सीमित रही।"

भारत में सोने का आयात 40.79% बढ़ा

वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार, जनवरी 2025 में भारत का सोने का आयात 40.79% बढ़कर $2.68 बिलियन हो गया, जो जनवरी 2024 में $1.9 बिलियन था। अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 तक के कुल आयात 32% बढ़कर $50 बिलियन हो गए, जो पिछले साल इसी अवधि में $37.85 बिलियन थे। मंत्रालय ने बताया कि आयात में बढ़ोतरी का कारण निवेशकों का सोने को सुरक्षित संपत्ति के रूप में देखना, बैंकों से बढ़ती मांग और कस्टम ड्यूटी में कटौती है।

क्यों जरूरी है एक शौक या जुनून विकसित करना: कार्य-जीवन संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए

अंकुर शरण

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance) बनाए रखना एक चुनौती बनता जा रहा है। ऑफिस का दबाव, व्यक्तिगत जिम्मेदारियों और अनगिनत तनावपूर्ण परिस्थितियां हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। ऐसे में, किसी शौक (Hobby) या जुनून (Passion) को विकसित करना न केवल हमारे दिमाग को तरोताजा रखता है, बल्कि जीवन में नई ऊर्जा और संतुलन भी लाता है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए क्यों आवश्यक है एक शौक

तनाव और चिंता से मुक्तिः कोई भी रचनात्मक या आनंददायक गतिविधि जैसे संगीत, पेंटिंग, लेखन, गार्डनिंग, या खेल हमारे दिमाग को तनावमुक्त करने में मदद करता है। यह हमें रोजमर्रा की चिंताओं से दूर ले जाता है और मानसिक शांति प्रदान करता है।

खुद के लिए समय निकालने की आदतः हम अक्सर अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि खुद के लिए समय ही नहीं निकालते। एक शौक अपनाने से हमें अपनी खुशी और मानसिक शांति के लिए भी समय मिल पाता है।

रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्तिः हर व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा होती है। जब हम अपने शौक को समय देते हैं, तो यह न केवल हमारी रचनात्मकता को बढ़ाता है बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति का भी एक बेहतरीन माध्यम बनता है।

नए कौशल सीखने और आत्म-संतोष की अनुभूतिः एक नए शौक को अपनाने से हम लगातार कुछ नया सीखते हैं, जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यह आत्म-संतोष और खुशी का भी एक बड़ा स्रोत बनता है।

कार्य-जीवन संतुलन में शौक की भूमिका

प्रभावी कार्यक्षमताः जब हम काम के अलावा कुछ और करने में आनंद लेते हैं, तो इससे हमारी उत्पादकता बढ़ती है। हमारा दिमाग अधिक सक्रिय और उत्साहित रहता है, जिससे काम पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में संतुलनः एक शौक को अपनाने से हमारा जीवन केवल ऑफिस और घर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि हम अन्य रोचक गतिविधियों में भी संलग्न होते हैं, जिससे जीवन अधिक संतुलित और आनंददायक बनता है।

सकारात्मक सामाजिक संपर्कः कई शौक, जैसे खेल, संगीत, या फोटोग्राफी, हमें अन्य समान विचारधारा वाले लोगों से जोड़ते हैं। इससे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं और हम खुद को कम अकेला महसूस करते हैं।

कैसे शुरू करें?

अपने बचपन के शौक को याद करें और उसे फिर से शुरू करने की कोशिश करें।

कोई नई चीज़ सीखने के लिए समय निकालें, जैसे कोई वाद्ययंत्र बजाना, पेंटिंग करना, लेखन, या गार्डनिंग।

हर दिन कम से कम 30 मिनट अपने शौक के लिए समर्पित करें।

अपनी दिनचर्या में शौक को शामिल करें, चाहे वह सप्ताह में दो-तीन बार ही क्यों न हो।

एक शौक या जुनून को अपनाने से हम मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, कार्य-जीवन में संतुलन बनाए रखते हैं, और अपने जीवन को और अधिक सार्थक बना सकते हैं। यह न केवल तनाव को दूर करने में मदद करता है, बल्कि हमें अपनी पहचान और खुशी को भी खोजने का मौका देता है। इसलिए, अपने पसंदीदा शौक को खोजें और इसे अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएं।

नैतिकता का मुखौटा: समाज का दोहरा चरित्र

शहर के प्रतिष्ठित उद्यान में संध्या वेला के समय बुज़ुर्गों की एक विशिष्ट सभा जमती थी, जिसे आदरपूर्वक "संस्कृति रक्षक मंडली" की संज्ञा दी गई थी। ये अनुभवी सज्जन अपने समय के गहन विचारक माने जाते थे, जिनका प्रत्येक संवाद युवाओं के क्षीण होते संस्कारों पर चिंता व्यक्त करने के लिए ही होता था। उनकी दृष्टि में परंपराएँ समाज की आधारशिला थीं, और आधुनिकता एक भयावह आँधी की भाँति भारतीय संस्कृति को तहस-नहस कर रही थी।

आज की चर्चा विशेष रूप से गंभीर थी। वर्माजी ने अपना चश्मा ठीक करते हुए गर्म चाय की चुस्की ली और भारी स्वर में बोले, "समाज का नैतिक पतन अब चरम पर पहुँच चुका है। देखिए, इन दिनों की बहुएँ और बेटियाँ कैसे कपड़े पहन रही हैं! घूँघट तो अब इतिहास बन चुका है, साड़ी का स्थान जींस-टॉप और स्कर्ट ने ले लिया है। माता-पिता ने बच्चों को पूरी तरह खुला छोड़ दिया है, इसलिए ये दिन देखने पड़ रहे हैं।"

शर्माजी ने उनकी बात को बल देते हुए सिर हिलाया, "बिल्कुल सही कह रहे हैं आप! संस्कारों की धज्जियाँ उड़ चुकी हैं। पहले की नारियाँ लज्जा और मर्यादा का प्रतीक थीं, अब देखिए, पश्चिमी संस्कृति ने सब कुछ बर्बाद कर दिया है। आजकल की पीढ़ी को परंपराओं का कोई ज्ञान ही नहीं रहा।" पार्क में उपस्थित अन्य बुज़ुर्ग भी इस गंभीर विमर्श में शामिल हो गए। किसी ने कहा, "पहले बहुएँ ससुर के सामने सिर झुकाकर खड़ी होती थीं, अब तो बेझिझक फैशन परेड करती हैं!" तो कोई बोला, "आजकल के युवक भी कहाँ कम हैं! कान में बाली, अजीबो-गरीब हेयरस्टाइल और आधुनिकता के नाम पर अनुशासनहीनता। ये सब बदलाव समाज को बर्बाद कर रहे हैं।" संस्कृति की रक्षा के संकल्प के साथ इस सभा का समापन हुआ। सभी अपने घरों को रवाना हुए, मन में यह दृढ़ विश्वास लिए कि वे समाज को नैतिक पतन से बचाने के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

रात्रि के समय वर्माजी जैसे ही घर पहुँचे, श्रीमती वर्मा प्रसन्न मुद्रा में मोबाइल लेकर उनके पास आईं, "सुनिए, देखिए, बेटे और बहू की तस्वीरें आई हैं। बहू कितनी प्यारी लग रही है इस ड्रेस में!"

वर्माजी ने उत्सुकता से मोबाइल स्क्रीन की ओर देखा। बहू ने घुटनों तक की स्टाइलिश ड्रेस पहनी थी, बाल खुले थे, हल्का मेकअप था, और चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। वर्माजी का चेहरा खिल उठा। "वाह! हमारी बहू कितनी ग्रेसफुल और मॉडर्न लग रही है। समय के साथ बदलाव जरूरी है, पहनावे से संस्कार थोड़े ही बदलते हैं! आत्मविश्वास मायने रखता है, और आजकल का फैशन ही यही है। हमें नई पीढ़ी की सोच को खुले मन से अपनाना चाहिए।"

श्रीमती वर्मा ने विस्मय से उनकी ओर देखा। "अभी कुछ घंटे पहले आप कह रहे थे कि बहुओं को साड़ी पहननी चाहिए और घूँघट में रहना चाहिए, और अब इतनी आधुनिक सोच?" वर्माजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "अरे भाग्यवती, समाज में कुछ बातें कहनी पड़ती हैं, लेकिन घर में हमें खुश रहना चाहिए। वैसे भी, हमारी बहू पढ़ी-लिखी और समझदार है, उसे अपनी मर्जी से जीने देना चाहिए!" श्रीमती वर्मा हल्की मुस्कान के साथ रसोई की ओर बढ़ गईं। उन्होंने अब समझ लिया था कि संस्कारों की दुहाई सिर्फ़ दूसरों को देने के लिए होती है, खुद पर लागू करने के लिए नहीं। वर्माजी के चेहरे पर आत्मसंतोष की चमक थी—बाहर वे संस्कृति के रक्षक थे और घर में प्रगतिशील विचारों के प्रवक्ता।

दरअसल, यही समाज की असली मानसिकता है। दूसरों की बेटियाँ मर्यादा और संस्कारों की बेड़ियों में रहें, लेकिन अपनी बहू-बेटियाँ आधुनिक बनें, आत्मनिर्भर बनें। जब बात दूसरों के घर की हो, तो भारतीय संस्कृति पर लंबा प्रवचन दिया जाए, लेकिन जब अपने घर की बात आए, तो वही पाश्चात्य सभ्यता "समय के साथ चलने" का प्रतीक बन जाए।

संस्कारों का झंडा उठाने वाले अक्सर अपनी ही सुविधानुसार नियम गढ़ते और तोड़ते हैं। आदर्शों की दुहाई केवल तब तक दी जाती है, जब तक वह खुद पर लागू न हो। यही दोहरा चरित्र समाज की जड़ों में गहराई तक समाया हुआ है—जहाँ नैतिकता सिर्फ़ दिखावे के लिए है और सिद्धांत अवसर के अनुसार बदल जाते हैं। पहनावा नहीं, असल में सोच ही खोखली हो चुकी है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बच्चों के मन-मस्तिष्क को प्रभावित करती तकनीक

बच्चों का मन बहुत ही कोमल होता है। इतना कोमल कि बच्चे के मन को हम अच्छी शिक्षा देकर किसी भी आकार में ढ़ाल सकते हैं। महान् मनोविज्ञानी वाटसन ने कहा है कि 'मुझे एक नवजात शिशु दे दो। मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।' हम सभी ने कभी न कभी अपने जीवन में किसी कुम्हार को चाक पर काम करते देखा है। वह मिट्टी के एक बेकार से दिखने वाले टुकड़े को एक खूबसूरत मिट्टी के बर्तन में बदल देता है। वह अपनी कला से मिट्टी को मनचाहा आकार दे देता है। बच्चों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। यदि हम उनको अच्छी शिक्षा,अच्छे संस्कार, नैतिकता की शिक्षा दें तो उसे हम देश व समाज का एक अच्छा नागरिक, सुसंस्कृत व्यक्ति बना सकते हैं। आज हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति व सूचना क्रांति के प्रभाव में आकर एंड्रॉयड स्मार्टफोन का धड़ल्ले से प्रयोग कर रही है। सूचना क्रांति का प्रयोग करना ग़लत नहीं है लेकिन आज तकनीक हमारी युवा पीढ़ी पर हावी होती चली जा रही है। स्मार्टफोन के अधिक व अंधाधुंध प्रयोग से बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क पर आज गहरा प्रभाव पड़ रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि तकनीक का यह प्रभाव हमारे देश की युवा पीढ़ी की मानसिक एकाग्रता व सेहत के लिये बहुत ही घातक सिद्ध हो रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज तकनीक का विशेषकर टीनएज बच्चों के मस्तिष्क पर गहरा असर देखा जा सकता है। सच तो यह है कि बच्चों द्वारा अधिक मोबाइल स्क्रीन का प्रयोग उनके मानसिक स्वास्थ्य, बौद्धिक विकास, शारीरिक समन्वय और यहां तक कि नींद और खाने की आदतों, उनके अध्ययन को प्रभावित कर रहा है। अत्यधिक ऑनलाइन एक्टिविटी के अनेक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिणाम हैं, जिनको लेकर आज हमारे समाज को चेतने की जरूरत है। वास्तविक दुनिया से दूर आज हमारे बच्चे वर्चुअल दुनिया या यूं कहें कि आभासी दुनिया में जी रहे हैं। आज जरूरत इस बात की है कि वर्चुअल दुनिया की तुलना में वास्तविक दुनिया को प्राथमिकता दी जाए ताकि हमारे बच्चों का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक या यूं कहें कि सर्वांगीण विकास हो सके।आज हमारी युवा पीढ़ी पर कृत्रिमता बुरी तरह से हावी प्रतीत होती है। हमारी युवा पीढ़ी जीवन की वास्तविकताओं से परे एआई चैटबॉट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स व्हाट्स एप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब, ट्विटर की दुनिया में अधिक जी रहे हैं।सच तो यह है कि आज हमारी युवा पीढ़ी का बहुत अधिक समय एंड्रॉयड, लैपटॉप, कंप्यूटर, मोबाइल पर व्यतीत हो रहा है।आज हमारे बच्चों को अकेले रहने की आदत पड़ चुकी है। इंटरनेट आज की जरूरत है लेकिन इसकी अंधी दौड़ ने हमारे बच्चों की दिनचर्या को काफी हद तक प्रभावित किया है और स्वास्थ्य को भी। सच तो यह है कि तकनीक के जरिये विकास की अंधी दौड़ में हमारी युवा पीढ़ी बहुत कुछ खो भी रही है। हमारी युवा पीढ़ी मशीनी हो गई है। कोरोना काल क्या आया ? इसने हमें एक तरह से पंगु बना दिया। गौरतलब है कि कोरोना काल से आभासी पढ़ाई, मीटिंग, वर्क फ्रॉम होम आदि का दौर शुरू हो गया। देश में जगह जगह आभासी स्कूल और कालेज खुलने लगे।आज विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी के सोशल मीडिया पर हजारों मित्र होते हैं, लेकिन जब वास्तविक जीवन में हमें और हमारी युवा पीढ़ी को मित्रों की आवश्यकता होती है, तो आज कोई भी हमारे साथ खड़ा नहीं होता है। सच तो यह है कि आज आभासी दुनिया(वर्चुअल दुनिया) की बढ़ती दखलंदाजी की वजह से हमारे अनेक सामाजिक संबंध लगातार पीछे छूटते चले जा रहे हैं। हम और हमारी युवा पीढ़ी आज आभासी दुनिया में ही रिश्ते-नाते स्थापित करने लगी है।यह ठीक है तकनीक ने मनुष्य को अनेक प्रकार की सहूलियतें प्रदान की हैं,तकनीक हम इंसानों की मदद और सहायता के लिए है, लेकिन आज इंसान तकनीक का लगातार गुलाम होता जा रहा है, इसे किसी भी हालत और परिस्थितियों में ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। वास्तव में सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिए हमें और हमारी युवा पीढ़ी को यह चाहिए कि हम इस आभासी दुनिया से बाहर निकलने का प्रयास करें। मनुष्य में संवेदनाएं होतीं हैं, एक मशीन में कभी भी संवेदनाएं नहीं हो सकतीं हैं। एक मशीन कभी भी मानव का स्थान नहीं ले सकती है,यह हमें समझना चाहिए। याद रखिए कि दुनिया का कोई भी इंसान कभी भी किसी मशीन से संचालित नहीं हो सकता है। कृत्रिम चीजें कृत्रिम ही रहेंगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि मानवीय संवेदनाएं और अहसास कभी कृत्रिम नहीं हो सकते। आज शिक्षा में,हर क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है,यह ठीक है लेकिन तकनीक, तकनीक होती है। तकनीक सिर्फ़ मानव की सहयोगी मात्र हो सकती है, मानव का स्थान कभी भी नहीं ले सकती है।आज युवा पीढ़ी के लिए मोबाइल फोन एक स्टेटस सिंबल हो गया है। महंगे से महंगा मोबाइल फोन आज युवाओं के पास देखने को मिल जाएगा। लेकिन एक ओर जहां एंड्रॉयड मोबाइल शिक्षा में सहयोगी बनकर उभरा है वहीं दूसरी ओर पढ़ाई में अत्यधिक मोबाइल का प्रयोग विद्यार्थियों, हमारी युवा पीढ़ी के लिये अनेक प्रकार की मानसिक व शारीरिक समस्याएं खड़ी कर रहा है।आज ऑनलाइन शिक्षा के लिए मोबाइल फोन, इंटरनेट का इस्तेमाल अनिवार्य हो गया है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभावों को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। कहना ग़लत नहीं होगा कि अत्यधिक डिजिटल उपस्थित का हमारे ब्रेन पर काफी बुरे प्रभाव पड़ते हैं। इससे हमारे ध्यान केंद्रित करने और निर्णय लेने की क्षमताएं कम हो सकती हैं। स्क्रीन का नीला प्रकाश 'मेलाटोनिन प्रोडक्शन' में बाधा पैदा करता है और हमें ठीक से नींद नहीं आती है। आज स्क्रीन-टाइम की अधिकता हमारी क्षेत्रीय सांस्कृतिक गतिविधियों को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है, वहीं दूसरी ओर आज हम स्क्रीन टाइम पर लगातार व्यस्त रहकर हमारे समाज में होने वाली विभिन्न घटनाओं, परंपराओं, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, आपसी संवाद से नहीं जुड़ पाते हैं। अपने चारों ओर की दुनिया में क्या हो रहा होता है, हमें स्क्रीन टाइम के कारण इसका ठीक से भान तक नहीं होता है। जीवन की असली खुशियां स्क्रीन टाइम में नहीं, अपितु स्क्रीन से हटने में हैं। जीवन हमेशा स्क्रीन से परे है, यह वास्तविक है, आभासी नहीं। आज हम इमोजी, लाइक्स, शेयर, कमेंट्स की दुनिया तक सीमित हो चलें हैं। हमें सिर्फ और सिर्फ कैमरे, एंड्रॉयड मोबाइल फोन, लैपटॉप, कंप्यूटर, इंटरनेट से मतलब है, किसी और से नहीं, लेकिन याद रखिए कि जीवन कभी भी लाइक्स, कमेंट्स,शेयर या फालोवर्स की संख्या से नहीं चला करता है। जीवन को दोस्तों, परिवार, रिश्तेदारों का संग-साथ चाहिए होता है, जो कि वास्तविक होता है। वर्चुअल वर्ल्ड वास्तव में देखा जाए तो एक लत है, एक मायाजाल है। हमेशा गैजेट्स से घिरे लोग बेचैन रहते हैं, तनाव और अवसाद उनकी जिंदगी का हिस्सा हो चला है। कुछ समय पहले ही आस्ट्रेलिया ने स्कूलों में मोबाइल उपयोग पर रोक लगाई और अब दुनिया के तमाम विकसित देश मोबाइल के दुष्प्रभावों को देखते हुए स्कूलों में मोबाइल के उपयोग पर रोक लगा रहे हैं। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अब तो यूनेस्को अर्थात संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन की दुनिया में शैक्षिक स्थिति पर नजर रखने वाली टीम ने भी स्मार्टफोन के उपयोग से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता जतायी है। गौरतलब है कि यूनेस्को की टीम के मुताबिक बीते साल के अंत तक कुल पंजीकृत शिक्षा प्रणालियों में से चालीस फीसदी ने सख्त कानून या नीति बनाकर स्कूलों में छात्रों के स्मार्टफोन के प्रयोग पर रोक लगा दी है। दरअसल, आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स व्हाट्स एप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब, ट्विटर, इंटरनेट पर अनेक प्रकार की अश्लील, फूहड़, भद्दी, अराजकता भरी बेलगाम अनुचित सामग्री परोसी जा रही है,जो हमारे बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क को लगातार प्रभावित कर रही है और उनका ध्यान अच्छी बातों, अनुशासन, सामाजिक संस्कारों से हटता चला जा रहा है। निस्संदेह, शिक्षकों अभिभावकों, माता पिता की देखरेख में सीखने की प्रक्रिया(लर्निंग प्रोसेस) में इंटरनेट, लैपटॉप, स्मार्टफोन का सीमित उपयोग तो लाभदायक सिद्ध हो सकता है, लेकिन इसका अंधाधुंध व गलत उपयोग घातक भी हो सकता है। आज बच्चे डिजिटल एमनीशिया(भूलने की बीमारी) का शिकार हो रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर बिखरी अनर्गल, अश्लील, फ़ूहड़ सामग्री हमारी युवा पीढ़ी को यौन कुंठित बना रही है। इतना ही नहीं एंड्रॉयड मोबाइल के लगातार प्रयोग से बच्चों की एकाग्रता भंग हो रही है। ऐसे में आज जरूरत इस बात की है कि वर्चुअल वर्ल्ड का सीमित व नियंत्रित उपयोग पर बल दिया जाए। वास्तव में,हमें डिजिटल उपकरणों से दूरी बनाकर प्रकृति के सानिध्य में अपने मन-मस्तिष्क को तरोताजा महसूस करना चाहिए। इसके लिए हम प्राकृतिक वातावरण में घूम सकते हैं। दोस्तों, परिवार के सदस्यों संग बातचीत कर सकते हैं, इससे हमारा मन-मस्तिष्क फ्रेश होगा और चीजें हमें याद रह पाएंगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

विश्व सामाजिक न्याय दिवस : हर जीवन को सम्मान, हर हाथ को काम

समाज की असली शक्ति उसकी न्यायप्रियता, समता और गरिमा में निहित होती है। जब कोई वर्ग शोषण का शिकार होता है, जब श्रमिकों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता, जब जाति, धर्म, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव किया जाता है, तब सभ्यता का आधार हिलने लगता है। विश्व सामाजिक न्याय दिवस (20 फरवरी) मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि एक सशक्त संकल्प है—ऐसे समाज के निर्माण का, जहाँ अन्याय की बेड़ियाँ तोड़ी जाएँ और हर व्यक्ति को उसका हक मिले। यह दिवस हमें हमारी जिम्मेदारी का अहसास कराता है कि हम न केवल अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहें, बल्कि हर उस व्यक्ति की आवाज बनें, जिसे व्यवस्था ने हाशिए पर धकेल दिया है।

सामाजिक न्याय का अर्थ केवल कानूनी संरचनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी व्यवस्था है, जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर, गरिमा और अधिकार प्राप्त हों। यह केवल संविधान की किताबों में दर्ज कोई सिद्धांत नहीं, बल्कि एक जीवंत विचारधारा है, जो हर इंसान को बराबरी का हक दिलाने की वकालत करती है। समाज में जातीय भेदभाव, लैंगिक असमानता, बाल श्रम, मानव तस्करी, शोषणकारी मजदूरी और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ गहरी जड़ें जमा चुकी हैं। यदि इन विषमताओं का अंत करना है, तो सामाजिक न्याय को केवल एक आदर्श न मानकर, उसे क्रियान्वित करना होगा।

इस वर्ष, विश्व सामाजिक न्याय दिवस 2025 की थीम है— ₹एक स्थायी भविष्य के लिए एक न्यायसंगत परिवर्तन को मजबूत करना₹। यह विषय इस बात पर केंद्रित है कि समाज में होने वाले बदलाव—विशेष रूप से रोजगार, जलवायु परिवर्तन नीतियों और आर्थिक संरचनाओं में—निष्पक्ष और समावेशी हों, ताकि कोई भी पीछे न छूटे। आज, दुनिया तेजी से बदल रही है, लेकिन यह बदलाव तभी सार्थक होगा जब इसका लाभ हर व्यक्ति तक समान रूप से पहुँचे। श्रमिकों को उनका अधिकार मिले, पर्यावरणीय नीतियाँ गरीब और पिछड़े वर्गों को नुकसान पहुँचाने के बजाय उन्हें लाभ दें, और आर्थिक सुधार ऐसे हों, जो समाज के सभी तबकों को सशक्त करें। यह थीम हमें समावेशी और न्यायपूर्ण विकास की ओर प्रेरित करती है।

संयुक्त राष्ट्र ने इस दिवस को मनाने का उद्देश्य यही रखा है कि हर व्यक्ति को उसके मौलिक अधिकार मिले और वह गरिमापूर्ण जीवन जी सके। यह समस्या किसी एक देश तक सीमित नहीं है; पूरी दुनिया में गरीबों और शोषितों को उनके अधिकारों से वंचित किया जाता है। विकसित देशों में भी श्रमिकों का शोषण होता है, महिलाएँ समान अवसरों से वंचित रहती हैं, और धार्मिक व जातिगत भेदभाव अभी भी कायम है। सामाजिक न्याय के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा श्रमिक अधिकारों की रक्षा हेतु बनाए गए कानून, सामाजिक कल्याण योजनाएँ और संवैधानिक सुधार शामिल हैं।

भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में सामाजिक न्याय की अवधारणा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। भारतीय संविधान ने समानता, आरक्षण नीति, श्रमिक कल्याण, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के अधिकार जैसे कई उपाय किए हैं, ताकि समाज के हाशिए पर खड़े लोगों को मुख्यधारा में लाया जा सके। डॉ. भीमराव अंबेडकर, महात्मा गांधी और अन्य समाज सुधारकों ने सामाजिक न्याय की मजबूत नींव रखी, जिसे हमें और अधिक सुदृढ़ करना है।

सामाजिक न्याय को स्थापित करने के लिए सबसे प्रभावी साधन शिक्षा और जागरूकता हैं। जब हर नागरिक शिक्षित होगा, तभी वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो पाएगा। सरकार को ऐसी नीतियाँ लागू करनी चाहिए, जो गरीब और वंचित वर्गों को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त करें। न्यूनतम मजदूरी का पालन, श्रमिकों के हितों की रक्षा, महिलाओं के लिए समान कार्यस्थल नीति, बच्चों के लिए शिक्षा का अनिवार्य प्रावधान—ये सभी कदम सामाजिक न्याय की दिशा में मजबूत आधार तैयार कर सकते हैं।

आज की डिजिटल क्रांति ने अवसरों के नए द्वार खोले हैं, लेकिन इसके साथ ही डिजिटल असमानता भी बढ़ी है। गरीब और पिछड़े वर्गों के पास तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण वे इस दौड़ में पीछे छूट रहे हैं। डिजिटल समावेशन अब सामाजिक न्याय का एक महत्वपूर्ण पहलू बन चुका है। तकनीकी संसाधनों तक सबकी पहुँच सुनिश्चित किए बिना, समान अवसरों की बात अधूरी रह जाएगी।

सामाजिक न्याय केवल सरकारों और संगठनों की जिम्मेदारी नहीं है। यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने समाज में समानता, निष्पक्षता और न्याय को बढ़ावा दें। हमें हर प्रकार के भेदभाव के खिलाफ खड़े होना होगा, हाशिए पर खड़े लोगों की मदद करनी होगी और एक समावेशी समाज बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। जब तक समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर, अधिकार और सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक सामाजिक न्याय का सपना अधूरा रहेगा। केवल कानून बनाने से नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने से ही हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। विश्व सामाजिक न्याय दिवस 2025 का संदेश यही है—हर व्यक्ति को गरिमा, समानता और न्याय मिले, ताकि हम एक बेहतर और संतुलित समाज की नींव रख सकें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वस्थ लोकतंत्र के लिए एक मज़बूत और रचनात्मक विपक्ष आवश्यक है

विपक्ष एक आवश्यक प्रहरी है जो एक समृद्ध लोकतंत्र में सरकार की शक्ति पर नियंत्रण और संतुलन सुनिश्चित करता है। यह विभिन्न दृष्टिकोणों को व्यक्त करने, समाज के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने तथा सरकार को उसके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाने के लिए आवश्यक है। सहिष्णुता, वास्तविक राजनीतिक विरोध, तथा विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से निपटाने की नागरिकों की क्षमता में विश्वास, ये सभी लोकतंत्र के लिए पूर्वापेक्षाएँ हैं। एक कमजोर और बिखरा हुआ विपक्ष चुपचाप खड़ा रह सकता है और बहुमत वाली पार्टी की तानाशाही और मनमर्जी को तानाशाही स्थापित करने की इजाज़त दे सकता है। यद्यपि सरकार के सुचारू संचालन के लिए एक स्वस्थ विपक्ष आवश्यक है, ताकि कभी-कभार होने वाली ज्यादतियों का प्रतिकार किया जा सके और अवरोधों को रोका जा सके, किन्तु विपक्ष की अनुपस्थिति समग्र रूप से लोगों की स्वतंत्रता और जीवन को खतरे में डाल देगी तथा कानून के शासन को भी ख़तरा पहुँचाएगी।

प्रियंका सौरभ

लोकतंत्र को मज़बूत बनाने के लिए सरकार और विपक्ष को मिलकर रचनात्मक रूप से काम करना होगा। लेकिन भारत में संसदीय बहसों में बढ़ते ध्रुवीकरण, बार-बार व्यवधान तथा गहन चर्चाओं पर बयानबाजी के प्रभुत्व के कारण विधायी विचार-विमर्श की गुणवत्ता और भी खराब हो गई है। अपर्याप्त नीतिगत चर्चा सरकार और विपक्ष के बीच वास्तविक बातचीत में बाधा डालती है। पक्षपातपूर्ण मुद्दों का उपयोग अक्सर उन महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने के लिए किया जाता है, जिनके लिए व्यापक राष्ट्रीय सहमति की आवश्यकता होती है, जैसे विदेश नीति और तकनीकी विकास। संसदीय चर्चाओं की प्रभावशीलता तब कम हो जाती है जब राजनीतिक दुश्मनी के कारण चर्चा के बजाय अशांति पैदा होती है। सरकार का विधायी एजेंडा और विपक्ष के साथ सार्थक तरीके से बातचीत करने की अनिच्छा यह दर्शाती है कि वह अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। संसदीय प्रक्रियाओं द्वारा चर्चा और नीति सुधार को सुगम बनाया जाना चाहिए, लेकिन बढ़ती पक्षपातपूर्णता ने इन प्रक्रियाओं को कमजोर कर दिया है। महत्त्वपूर्ण नीतियों पर पूर्व-विधान परामर्श और चर्चाएँ अधिक प्रयास से नहीं हो पा रही हैं।

सरकार को नियंत्रण और संतुलन बनाए रखने के लिए एक मज़बूत विपक्ष की आवश्यकता है। इस बात को समझते हुए, अमेरिकी संस्थापकों ने सरकार के कई स्तर स्थापित किये। वे बड़ी सरकार को लेकर बहुत सतर्क थे, यही कारण है कि उन्हें लगता था कि इसे चलाना कठिन और जटिल है। वे अन्य सदस्यों द्वारा कानून पारित होने से रोकने के लिए वैध लेकिन अनैतिक साधनों के प्रयोग से अनभिज्ञ थे। ₹विधेयक पर बात-चीत करते हुए उसे समाप्त कर देना₹ या ₹विधेयक पर बात न करना₹ का तात्पर्य अनावश्यक भाषणबाजी और समय की बर्बादी से है जिसका उद्देश्य किसी सार्थक विधेयक या कानून को वास्तव में पारित होने से रोकना होता है। विपक्ष सरकार में तोड़फोड़ कर सकता है और कानूनों को पारित होने से रोक सकता है, जिससे वे अप्रभावी हो जाएंगे। मज़बूत विपक्ष के अभाव में वर्तमान सरकार निरंकुश और गैर-जवाबदेह हो जाती है और वह ऐसे कानून बना सकती है जो कुछ लोगों या किसी विशिष्ट जनजाति या समूह को लाभ पहुँचाते हैं। जैसा कि कहा गया है, ₹सत्ता भ्रष्ट करती है₹ और खेद की बात है कि ऐसा होता भी है। अतीत के कथित ₹परोपकारी₹ राजा वास्तव में अधिकार के पदों पर नहीं थे। 1960 के दशक में पहली बार नाइजीरियाई सैन्य अधिग्रहण से पहले, देश में मज़बूत विपक्ष था। हालांकि, फूट डालो और राज करो की रणनीति, तथा देशद्रोह के आरोप में नेता को जेल में डालकर इसे कुचलने में सफल रहे।

परिणामस्वरूप, लोगों ने उन सभी लोगों को मार डाला जिन्हें वे भ्रष्ट मानते थे, क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी शिकायतों पर सुनवाई नहीं हो रही है और सरकार गैर-जवाबदेह और भ्रष्ट हो गई है। इसके परिणामस्वरूप तख्तापलट हुआ। मुख्यतः एक विशिष्ट जनजाति से सम्बंधित राजनेताओं की हत्या के बाद गृहयुद्ध छिड़ गया। भले ही नेता को यह विश्वास हो कि वह लोगों के सर्वोत्तम हित में कार्य कर रहा है, लेकिन यदि मामले में उनकी कोई बात नहीं सुनी जाएगी तो लोग उत्पीड़ित महसूस करेंगे। किसी वर्तमान या भूतपूर्व नेता द्वारा जनता के प्रतिनिधियों को सम्बोधित करने तथा अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराए जाने की क्षमता अद्भुत है। सभी तानाशाह प्रेस में किसी भी प्रकार की असहमति को दबाने से शुरुआत करते हैं, जो एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्व है। इसके बाद उन्हें गैर-सरकारी संगठनों पर हमला करने का अवसर मिलता है।

राजनीतिक बयानबाजी के बजाय नीति पर ज़ोर देना संसदीय कार्यप्रणाली में सुधार का एक तरीक़ा है। संसदीय चर्चाओं में पुराने ज़माने के दोषारोपण या चुनाव प्रचार की तुलना में शासन सम्बंधी मुद्दों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विपक्ष और सत्तारूढ़ पार्टी के बीच लगातार, संगठित संपर्क से मुद्दा-आधारित संवाद को बढ़ावा मिल सकता है और टकराव से बचने में मदद मिल सकती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि नीतिगत चर्चाएँ फलदायी बनी रहें, संसदीय समितियों जैसे तंत्रों को मज़बूत किया जाना चाहिए।

तात्कालिक राष्ट्रीय मुद्दों पर नियमित चर्चा के माध्यम से सरकार की कार्यवाही को स्पष्ट करना कुछ ऐसा है जो प्रधानमंत्री और अन्य महत्त्वपूर्ण मंत्रियों को करना चाहिए। प्रश्नकाल और संगठित नीतिगत चर्चा जैसे मंचों को पुनर्जीवित करके जवाबदेही की गारंटी देना संभव है। राजनीतिक विभाजन पैदा करने के बजाय, विदेश नीति, विकास और आर्थिक परिवर्तन को दलीय मुद्दों के रूप में देखा जाना चाहिए, जिन पर दीर्घकालिक आम सहमति की आवश्यकता है। चर्चाओं के लिए अधिक कठोर नियम और नैतिक मानदंड स्थापित करके संसदीय व्यवधानों को कम किया जाना चाहिए। शिष्टाचार बनाए रखने और न्यायसंगत भागीदारी की गारंटी देने में अध्यक्ष और संसदीय समितियों की भूमिका को बढ़ाना आवश्यक है। रचनात्मक आलोचना विपक्षी दल की भूमिका होनी चाहिए। विपक्ष के कारण मुद्दों और विधेयकों पर अधिक बहस और चर्चा होती है; अन्यथा, उन्हें बिना किसी चर्चा या दूसरों की ज़रूरतों पर विचार किए पारित कर दिया जाएगा, जो लोकतंत्र के लिए घातक होगा और इसे निरंकुशता में बदल सकता है। किसी महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर, विपक्षी पार्टी ही युद्ध के लिए उतरेगी।

प्रभावी शासन के लिए सरकार और विपक्ष के बीच रचनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है। चूंकि सरकार ही मुख्य प्रभारी निकाय है, इसलिए यह उसका कर्तव्य है कि वह किसी समझौते पर पहुँचने के प्रयासों का नेतृत्व करे तथा यह सुनिश्चित करे कि संसद में चर्चा राजनीतिक दरार को बढ़ाने के बजाय भारत की समस्याओं के समाधान पर केंद्रित हो। किसी लोकतंत्र में विपक्ष की सक्रियता और ताकत अक्सर उसके स्वास्थ्य का सूचक होती है। भारत में विपक्ष को मज़बूत करने के लिए सिर्फ़ राजनीतिक दलों को ही नहीं, बल्कि समग्र लोकतांत्रिक व्यवस्था को मज़बूत करना होगा। महत्त्वपूर्ण नीतियों में पार्टियों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देना, मीडिया तक समान पहुँच प्रदान करना और राज्य निधि का आवंटन शामिल है। लोकतंत्र को गतिशील, उत्तरदायी और जवाबदेह बनाने के लिए एक मज़बूत और सफल विपक्ष का होना आवश्यक है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी मर्यादा

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नागरिकों का मूलभूत अधिकार है, किंतु यह स्वतंत्रता अनुशासनहीनता की छूट नहीं हो सकती। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने यूट्यूबर रणवीर इलाहाबादी के विवादित वक्तव्यों पर कड़ा रुख अपनाते हुए स्पष्ट किया कि ₹अभिव्यक्ति की आज़ादी का अर्थ कुछ भी बोलने का लाइसेंस नहीं है।₹ यह टिप्पणी केवल एक व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए एक चेतावनी है। रणवीर के कमेंट्स में अभद्रता, भद्दे शब्दों का प्रयोग और सामाजिक गरिमा को ठेस पहुँचाने वाली भाषा थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शब्दों का चयन केवल व्यक्तिगत सोच का विषय नहीं होता, बल्कि उनका प्रभाव संपूर्ण समाज पर पड़ता है। कोई भी वक्तव्य जो महिलाओं, बहनों, माताओं, पिता और परिवार की गरिमा को ठेस पहुँचाए, वह निंदनीय और अस्वीकार्य है। आज सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को एक मंच दिया है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि यह मंच अशालीनता का अखाड़ा बन जाए। शब्दों की ताकत तलवार से अधिक होती है—यह समाज को जोड़ भी सकते हैं और तोड़ भी सकते हैं। लोकतंत्र में स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व होता है। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय हर उस व्यक्ति के लिए सीख है जो अपनी भाषा की मर्यादा भूलकर स्वतंत्रता के नाम पर दूसरों की गरिमा को ठेस पहुँचाता है। स्वतंत्रता की असली पहचान अनुशासन और मर्यादा में ही निहित है। शब्दों का संयम ही सभ्यता की पहचान है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नैतिक मूल्यों का पतन समाज के पतन का संकेत है। हाल ही में हरियाणा के कैथल में घटी लोमहर्षक घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि संस्कारों के बिना व्यक्ति राक्षसी प्रवृत्ति का हो सकता है। जब एक पिता ने अपने पुत्र को आवारागर्दी छोड़ने और शिक्षा अपनाने की सीख दी, तो उस पुत्र ने पाशविकता की पराकाष्ठा पार कर अपने ही जन्मदाता को आग के हवाले कर दिया। यह घटना चेतावनी है कि संस्कारों के अभाव में संतान रक्षक से भक्षक बन सकती है। परिवार किसी भी व्यक्ति का पहला विद्यालय होता है। यदि बच्चों को बचपन से ही नैतिकता, अनुशासन और आत्म-संयम का पाठ पढ़ाया जाए, तो वे सभ्य नागरिक बनते हैं। लेकिन कुसंगति और नशे के कारण वे स्वयं के साथ समाज का भी विनाश करते हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों से संवाद करें, उनकी भावनाओं को समझें और उचित मार्गदर्शन दें। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण की नींव है। विद्यालयों में नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षा अज्ञानता और दुष्प्रवृत्तियों का समूल नाश कर सकती है। साथ ही, सरकार और समाज को नशा मुक्ति अभियान को प्रभावी बनाना चाहिए। नशा केवल शरीर ही नहीं, मानसिकता और आत्मा को भी विनष्ट करता है। अब समय आ गया है कि हम अपने सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करें। संस्कार, अनुशासन और सुदृढ़ शिक्षा से ही हम एक समरस, सशक्त और उन्नत समाज की नींव रख सकते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023